—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computers - 9335214913

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जुलाई, 2008 वर्ष 7 अंक 05

दोहे

पाक उसी को मानिये, पाकी उसी को ज़ेब।
उसके अ़लावा कौन है, कहें जिसे बे ऐ़ब।।
किस्मत जागी शहर की, गाँव हुए बेदार।
भोर भये की बांग से, जाग उठा संसार।।
घर आंगन सब शांती, मस्त मगन सब गांव।
रहमत रहमत देखये, हरे कलस की छांव।।
भाई मेरे इस तरह, दिल की गिरहें खोल।
तन मन में रस घोल दें, मीठे-मीठे बोल।।
यह लीला दो रोज की, पगले कुछ तो सोच।
सब जोबन ढल जाएगा, क्या ऐंड़न क्या लोच।।
हो आए हैं बावरे, मन मोहन के गांव।
बाहर बाहर धूप है, भीतर भीतर छांव।।
आने को है शहर में, इक ऐसा भूंचाल।
पछतावा बन जाएगी, टेढ़ी मेढ़ी चाल।।
ज़ख्मी पंक्षी प्यार से, मांगे ऐसी ख़ैर।
नष्ट हुआ इक आन में, सात पुश्त का बैर।।
कुछ तो पगले क़द्र कर, जीवन है अनमोल।
दुन्या में रह जाएंगे, आड़े तिर्छे बोल।।

रईसुश्शाकिरी नदवी

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❑ रूहानी इज्तिमाअ़	सम्पादकीय	3
❑ क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंज़ूर नोमानी	5
❑ प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	8
❑ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)	मौ० मु० राबे हसनी	11
❑ कारवाने ज़िन्दगी	स०अ० हसन अ़ली हसनी नदवी	14
❑ हम कैसे पढ़ाएं	डा० सलामतुल्लाह	20
❑ मुसलमान औरत की आज़ादी	मर्यम जमीला	22
❑ जात पात इस्लामी दृष्टि में	नज्मुस्साक़िब अ़ब्बासी	26
❑ मिसाली मुस्लिम समाज का क़ियाम	मौ० मु० असरारूलहक़ क़ासिमी	28
❑ आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	30
❑ इन्टरनेट पर पाएं निःशुल्क शिक्षा	एस०जी०हक़	32
❑ सैन्डविच बनती जा रही है	वसीम राशिद	33
❑ ना इन्साफ़ी से पैदा होती है दहशत गर्दी	जस्टिस ए.एम. अहमदी	34
❑ उर्दू शब्द हिन्दी लिपि में	इदारा	35
❑ रहनुमायाने मिल्लत से	मौ० मु० सानी हसनी	36
❑ क़ादियानीयत	मौ० मु० ख़ालिद नदवी	37
❑ ठग विद्या	ग्रहीत	39
❑ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ़	40

❑❑❑

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। सच्चाराही से सम्बन्धित सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।)

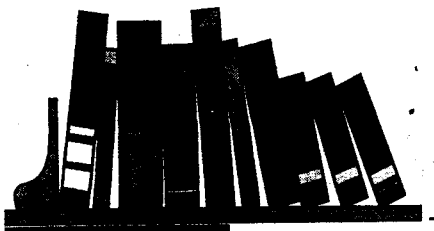

रूहानी इज्तिमाअ़

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

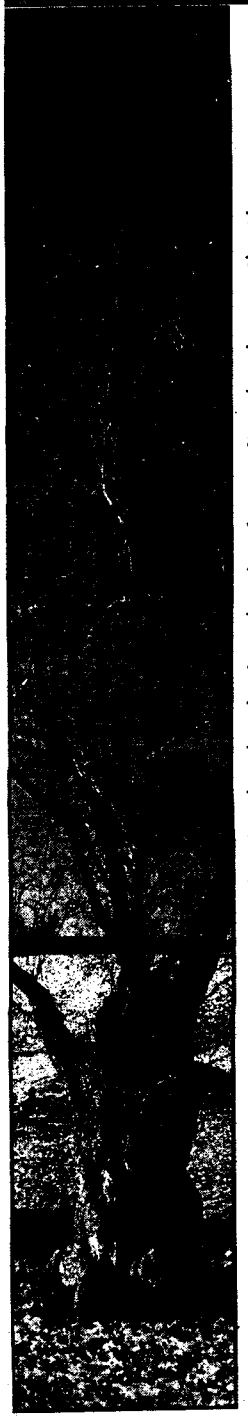

किसी ने सच ही कहा है :

मई का आन पहुंचा है महीना। बहा चोटी से एड़ी तक पसीना।।
बजे बारह तो सूरज सर पे आया। छुपा पैरों तले हर शै का साया ।।

मई, जून की गर्मी कितनी सख़्त होती है, और इस की लू तो जान लेवा ही होती है। हर शख़्स हस्ब हैसीयत अपने को लू, धूप और गर्मी से बचाता है, लेकिन हम देख रहे हैं कि इस लू तथा धूप की परवाह किये बिना, लोग हल्के, भारी सामान लादे, पसीने से शराबोर, जूक़ दर जूक़, (झुन्ड के झुन्ड) चले आ रहे हैं, नदवे की लम्बी चौड़ी फील्ड में बहुत बड़ा पिन्डाल बना है जिस पर सफ़ेद कपड़ा तना है वह शामियाने की तरह ऊंचा भी नहीं है, हां उसमें पंखे भी लगे हैं जो गर्म हवाएं फेंक रहे हैं, उसी पिंडाल में यह आने वाले ख़ुदा के बन्दे, प्रबन्धकों के संकेतानुसार, अपने अपने बेग और गठरयां रख कर पंक्ति बद्ध बैठ रहे हैं।

क्या यह किसी सियासी (राजनीतिक) रेली में आए हैं जिन के लाने ले जाने खाने पीने का प्रबन्ध किसी राजनीतिक पार्टी ने किया है? और उस के ज़ोर व दबदबे से रेलों द्वारा बे टिकट आए हैं,बल्कि रिज़रवेशन वालों को बे दख़ल करते हुए आए हैं? या यह पत्थर तोड़ने वाले, नहर खोदने वाले, सड़क बनाने वाले श्रमिक हैं जो भारी मज़दूरी के लालच में टूट पड़े हैं? नहीं नहीं यह अल्लाह के श्रमिक हैं, यह सत्य ज्ञान "ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्ररसूलुल्लाहि" पर दृढ़ विश्वास वाले हैं, यह दीनी रेली में आए हैं। यहां १८ मई को एक रूहानी इज्तिमाअ़ अर्थात अध्यात्मिक गोष्ठी की व्यवस्था की गयी है। यह उसी रूहानी इज्तिमाअ़ (अध्यात्मिक सममेलन) में आए हैं, अपना ख़र्च कर के, अपना वक्त निकाल के, भांति भांति की कठिनाइयां सहन कर के,इस मैदान में जमा हुए हैं। इस विश्वास (यक़ीन) के साथ कि इस की मज़दूरी मरने के पश्चात आरंभ होने वाले जीवन में रब के करम से भरपूर मिलेगी।

मजमअ़ इकट्ठा हुआ विद्वानों के भाषण आरम्भ हुए, सी आई डी लोग अवश्य आए होंगे, वह प्रतीक्षा में होंगे कि अभी इस भारी मजमेअ़ को शासन के विरोध में उभारा जाएगा, अभी किसी के लिए मुर्दाबाद और किसी के लिए ज़िन्दाबाद के नअ़रे (नादि) लगें गे, अभी यह लोग अपनी मांगे हुहराएंगे। लेकिन यह क्या, यह तो धरती पर की बातें ही नहीं करते, यह तो जन्नत का नज़ारा करा रहे हैं, जहां न नाक न थूक न कोई गन्दगी, न लड़ाई न झगड़ा, सोने चान्दी के महल, दूध की नहरें, शहद की नहरें, वह सुख आनन्द, वह पुरस्कार, जिन को न किसी आंख ने देखा न किसी दिमाग़ ने सोचा यह सब उसके लिए है जो अल्लाह पर ईमान लाया उसके रसूल पर ईमान लाया, अल्लाह और उसके रसूल की बताई हुई आख़िरत की ज़िन्दगी पर ईमान लाया, यह तो बम धमाके से नहीं डराते, यह गोली बन्दूक़ से नहीं डराते, अपितु यह तो आंखों से ओझल जहन्नम से डराते हैं जो आग की बहुत बड़ी भट्टी है जिस में आदमी जलेगा, चीख़ेगा, चिल्लाएगा, मगर मरेगा नहीं, सारे पापी, सारे कुकर्मी उस में झोंक दिये जायेंगे, चाहे वह पाप अपने बल बूते पर खुल्लम खुल्ला

किये हों, चाहे शासन तथा लोगों के डर से कमरे के भीतर किये हों, ख़ालिक़, मालिक (विधाता तथा स्वामी) से कुछ भी छुप न सकेगा अगर पापी ने अपने पाप पर लज्जित हो कर विधाता से क्षमा चाहे बिना मर गया तो जहन्नम में अवश्य जलेगा और जिस ने ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह के सत्य को नकार दिया या "लाइलाह इल्लल्लाह" के विरूद्ध अल्लाह का साझी ठहराया वह तो सदैव जहन्नम ही में रहेगा।

आप देखेंगे इस जनसमूह में बड़ी संख्या सरकारी कर्मचारियों की है, कुछ अधिकारी भी हैं, जो अपने अपने कार्य क्षेत्रों में बड़ी ही सत्यनिष्ठा (दयानतदारी) से अपने अपने कामों का निष्पादन करते हैं (अंजाम देते हैं) वह काहिली आलस से दूर रहते हैं, वह खुले छुपे ऊपर की आय नहीं ढूंढते, वह अपने कार्य क्षेत्र में सत्यनिष्ठ के रूप में जाने जाते हैं। इस जन समूह में घूस को वर्जित मानने वाले इंजीनियर भी हैं, डाक्टर भी हैं, धोखा न देने वाले तथा झूठ न बोलने वाले व्यापारी भी हैं और मेहनत से काम करने वाले श्रमिक भी हैं। ऐसा लगता है कि देश के सभी लोग यदि इनके जैसे विश्वास वाले बन जाएं तो पूरा देश आदर्श शान्तिमयी हो जाए।

जब विद्वानों ने इस मजमेअ़ (जनसमूह) के सामने समाज की दशा रखी और भौतिकवाद (माददः परस्ती) का नक़्शा खींचा विशेषकर मुस्लिम समाज के शाश्वत जीवन को भुलाकर जीवन उद्देश्य से हट जाने का वर्णन किया और इस भूल से उम्मत को जगाने तथा इस विकार को दूर करने की कोशिश के लिए मजमेअ़ के लोगों से अल्लाह वास्ते समय की मांग की तो ऐसा लग रहा था मजमअ़ के सभी लोग अपना कारोबार छोड़कर, अपनी नौकरी से छुट्टियां लेकर, तथा श्रमिक जन अपने बाल बच्चों को अल्लाह को समर्पित (हवाले) कर के चार,चार महीनों के लिए देश में फैल जाएंगे। बस हर ओर से आवाज़ आ रही थी, फ़ुलां शख़्स तीन चिल्ला, फ़ुला गुट तीन चिल्ला, फ़ुलां व्यक्ति एक चिल्ला फ़ुला जमाअ़त एक चिल्ला आदि। क्या इस भौतिक काल के ग्रस्त समाज में यह अनोखी बात न थी? अवश्य अनोखी बात थी।

मजमेअ़ की बड़ी परीक्षा उस समय हुई जब आंधी पानी ने मजमेअ़ को उखाड़ फेंकने की कोशिश की परन्तु सत्यवादियों के कार्य जारी रहे बड़ा मजमअ़ मस्जिद में आ गया, नाम लिखा देने वाली जमाअ़तें शिब्ली हाल में अपनी व्यवस्था करने लगीं। इस प्रकार इज्तिमाअ़ का काम निरन्तर चलता रहा और सैंकड़ों जमाअ़तें विभिन्न क्षेत्रों में भेजने की व्यवस्था चलती रही।

आख़िरी दुआ को तो लिख कर समझाया ही नहीं जा सकता जिस समय सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष इन सत्यवादियों ने भीख के लिए हाथ फैलाए और दुआ कराने वाले विद्वान ने लाउडस्पीकर पर रो रो कर मुस्लिम समाज और देश के लोगों की कोताहियों पर क्षमा चाहते हुए गिन गिन कर हर प्रकार की भलाइयों की मांग गिड़गिड़ा कर की तो सारा मजमअ़ आंसू बहा रहा था। क्या यह दुआएं बेकार गईं? कदापि नहीं यह जो देश में कुछ भला और भलाइयां दिख रही हैं वह इन्हीं दुआओं की बरकत से है, जिस दिन सत्यावादियों की दुआएं न होंगी, सत्य ज्ञान तथा सत्य मार्ग की ओर बुलावा न होगा, सूरज चमकेगा, पानी बरसेगा, चान्द रौशनी देगा, धरती अनाज उपजाएगी परन्तु देश का समाज ऐसा हो जाएगा जिस के वर्णन से लेखनी कांपती है।

क्या आप का सम्बन्ध इस जमाअ़त के लोगों से हुआ है? क्या आप कभी ऐसे रूहानी इज्तिमाअ़ में सम्मिलित हुए हैं? यदि नहीं तो आप से अनुरोध है कि एक बार इस प्रकार के किसी इज्तिमाअ़ में अवश्य भाग लें मुझे विश्वास है कि आप हमारे अनुरोध पर अवश्य ध्यान देंगे।

●●●

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

ख़ुदा की इबादत

तमाम दीनों (धर्मों) और मज़हबों का जिन चन्द बुनियादी बातों पर इत्तिफ़ाक़ है, उन में से एक यह भी है कि इन्सान को ख़ुदा की इबादत करनी चाहिए। इबादत से मुराद ख़ास वे अमल होते हैं जिन को बन्दा, अल्लाह के हुज़ूर में उस की रिज़ा और रहमत का तालिब बन कर अपनी बन्दगी और समर्पण ज़ाहिर करने के लिए और अपने अमल से उस की माबूदियत और अज़मत व किबरियाई की शहादत अदा करने के लिए करता है। जैसे इस्लाम में नमाज़, रोज़ा, हज्ज, ज़कात सदक़ात (दान) ज़िक्र, दुआ, तिलावत और क़ुर्बानी वग़ैरा। ये सारे इबादती अमल (कार्य) बन्दा सिर्फ़ इस लिये करता है कि उस का माबूद उस से राज़ी हो जाये, उस पर रहमत फ़र्माये और उन अमलों के ज़रिये उस की रूह (आत्मा) को पाकीज़गी (पवित्रता) और ख़ुदा का तक़र्रुब (समीपता) हासिल हो।

इन्सान के अच्छे अमलों में सिर्फ़ इबादतों ही की यह ख़ुसूसियत (विशेषता) है कि इस का सम्बन्ध सीधे सिर्फ़ अल्लाह से होता है। यानी इबादत सिर्फ़ उस की रिज़ा व रहमत हासिल करने और उसके सामने अपनी बन्दगी को ज़ाहिर करने और बन्दगी के रिश्ते को ठीक करने ही के लिए की जाती है। और मिट्टी से बनने वाले और गन्दे पानी के नापाक क़तरे से पैदा होने वाले इन्सान को इसी इबादत के ज़रिये वह तक़र्रुब (संपर्क) और राबिता (मैत्री) और वह हुज़ूरी (संमुखता) हासिल होती है जो अस्ल में फ़रिश्तों का हिस्सा है। इसी लिये तमाम धर्मों ने अपने मानने वालों से ख़ुदा की इबादत का मुतालबा किया है, और इस को इन्सान का मुक़द्दस तरीन (पवित्रतम) अमल क़रार दिया है।

इबादत की तीन क़िस्में की जा सकती हैं :–

१. ख़ालिस जिस्मानी (शारीरिक मात्र)

२. ख़ालिस माली (पूर्णतया धन से सम्बन्धित)

३. या दोनों से मुरक्कब (दोनों का मिश्रण)

ख़ालिस जिस्मानी वह इबादत हैं जिन में रूपया ख़र्च नहीं होता, बल्कि उन का संबंध सिर्फ़ इन्सान के जिस्म से होता है, जैसे अल्लाह के हुज़ूर में सज्दा करना, नमाज़ पढ़ना, रोज़ा रखना, अल्लाह के घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करना।

और ख़ालिस माली से मुराद वे इबादतें हैं जो अल्लाह की राह में सिर्फ़ माल ख़र्च करके अदा की जाती हैं। और उनमें कोई ख़ास जिस्मानी अमल नहीं करना पड़ता है। जैसे, सदक़ा व ख़ैरात करना, अल्लाह के लिये कोई माली नज़र मान कर उसको अदा करना, क़ुर्बानी करना वग़ैरा वग़ैरा।

और मुरक्कब वे इबादतें हैं जिन की अदायगी में जिस्म और माल दोनों का इस्तिमाल होता है। जैसे कि हज्ज व उम्रा।

अल्लाह तआला की तरफ़ से दुन्या में जितने पैग़म्बर मुख़्तलिफ़ ज़मानों में आये और जितनी किताबें भी नाज़िल हुयीं, उन सब के ज़रीये बन्दों को इन इबादतों का हुक्म दिया गया है। ज़माने के हालात और उम्मतों के अहवाल के मुताबिक़ अगरचे इबादतों के निज़ाम और उनकी मुक़र्रर की गयी शक्लों में कुछ इख़्तिलाफ़ (अन्तर) रहा है, लेकिन क़ुरआने–मजीद से मालूम होता है कि अस्ल इबादतों का हुक्म और मुतालबा हमेशा रहा है, ख़ास तौर पर नमाज़ और ज़कात (यानी अल्लाह की राह में सदक़ा व ख़ैरात) हर शरीअत के अहम अजज़ा रहे हैं।

"सूरये अम्बिया" में बहुत से अगले नबियों का ज़िक्र फ़र्माने के बाद इर्शाद फ़र्माया गया है :–

तर्जमा : और हमने बनाया उन को राहबर, वे रहनुमाई (मार्गदर्शन) करते थे (अपनी उम्मतों की) हमारे हुक्म से, और हम ने पैग़ाम दिया उन को नेकियों के करने का और (ख़ास कर) नमाज़ क़ायम करने और ज़कात अदा करने का, और वे सब हमारी इबादत करने वाले बन्दे थे। (अंबिया : ७३)

और "सूरए–माइदह" में बनी इस्राईल के ज़माने का ज़िक्र फ़र्माने के

बाद फ़र्माया गया है :–

तर्जमा : और फ़र्माया अल्लाह तआ़ला ने (उन से) कि मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम ने क़ायम रखी नमाज़, और देते रहे ज़कात और ईमान लाते रहे तुम मेरे रसूलों पर (जो बाद में मेरी तरफ़ से आयेंगे) और (उन की दीनी कोशिश में) तुम उन की मदद करते रहे, और ख़ुदा के काम में अपनी दौलत अच्छी तरह ख़र्च करते रहे, तो (तुम्हारे इन नेक अ़मलों की वजह से) ज़रूर–ज़रूर मिटा दूंगा तुम्हारे गुनाहों को (यानी वे मुआ़फ़ कर दिये जायेंगे) और बसाऊंगा तुम्हें उन जन्नतों में जिन के नीचे नहरें बहती हैं। (माइदहः१२)

और "सूर–ए–बय्यिना" में अहले किताब के इख़्तिलाफ़ और इनकार का ज़िक्र कर के फ़र्माया गया है :–

तर्जमा : और उनको सिर्फ़ यही .हुक्म तो दिया गया था कि वे इबादत और बन्दगी करें अल्लाह की, पूरे इख़लास के साथ सिर्फ़ उसी के बन्दे होकर, और क़ायम करें नमाज़, और अदा करें ज़कात और (वे भी जानते हैं कि) यही दीने–क़य्यिम है (जिस की दावत अल्लाह के सब पैग़म्बरों ने दी है)। (बय्यिनह : ५)

बहरहाल क़ुरआने–मजीद ने जगह–जगह पर यह बताया कि इबादत दीन का अहम रूक्न है और पैग़म्बरों के ज़रीये हर उम्मत से इसका मुतालबा किया गया है। और यह इस लिये नहीं कि अल्लाह को हमारी इबादत की कोई ज़रूरत है या यह कि उस की शान में हमारी इबादत से कोई इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) होता है, या हमारे रूकूअ़ सज्दे और हमारे सदक़ा व ख़ैरात से उस को कोई नफ़ा पहुंचता है, बल्कि सिर्फ़ इस लिये बन्दों को इबादत का .हुक्म दिया गया है कि इबादत ही के ज़रिये हमारी रूहों को पाकीज़गी हासिल होती है और अपने मालिक व माबूद से हमारा सम्बन्ध क़ायम होता है।

सूरए अह़ज़ाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पाक बीवियों को मुख़ातब करके चन्द बातों की ख़ास नसीह़त और ताकीद फ़र्मायी गयी है और उस नसीह़त को इन शब्दों पर ख़त्म किया गया है :–

तर्जमा : और (ऐ नबी की घर वालियो) अच्छी तरह अदा करती रहो नमाज़ और देती रहो ज़कात और फ़र्माबरदारी करती रहो अल्लाह व रसूल के सब .हुक्मों की। (इस नसीहत और इन .हुक्मों से) अल्लाह तआ़ला का मक़सद (ध्येय) इसके सिवा कुछ नहीं है कि ऐ नबी के घर वालो तुम से हर क़िस्म की गन्दगी दूर हो, और तुम को पूरी तरह से पाक कर दिया जाये। (अह़जाब : ३३)

अलग़रज़ इबादतों का .हुक्म अगली उम्मतों को भी इसी लिये दिया गया था कि इस के ज़रीये बन्दों की रूहों को पाकीज़गी हासिल हो और वे अल्लाह की रिज़ा और क़ुर्ब का मकाम हासिल करने के क़ाबिल बनें।

इस तमहीद के बाद क़ुरआने मजीद की चन्द वे आयतें पढ़िये जिन्म में हम को इबादत का .हुक्म दिया गया है। "सूर–ए–हज्ज" में इर्शाद है :–

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह के लिये रूकूअ़ करो, और सज्दा करो (यानी नमाज पढ़ो) और अपने पर्वरदिगार की इबादत करो, ताकि तुम्हारा भला हो। (ह़ज्ज : ७७)

इस आयत में भी इस बात की वज़ाह़त कर दी गयी है कि इबादत का .हुक्म सिर्फ़ बन्दों की भलाई के लिये दिया गया है। ख़ुदा को उन की इबादत की कोई ज़रूरत नहीं है।

और सूरए–बक़रह में इर्शाद है:

तर्जमा – और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो, और रूकूअ़ करने वालों के साथ रूकूअ़ करो। (बक़रहः ४३)

फिर इसी सूरए–बक़रह में आगे इर्शाद है :–

तर्जमा : और नमाज़ कायम करो और ज़कात अदा करो और जो नेकी भी अपने लिये आगे भेजोगे, उस को ख़ुदा के पास पा लोगे। अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब अ़मलों को देखता है। (बक़रहः ११०)

और सूरए–इब्राहीम में इर्शाद है :–

तर्जमा – ऐ पैग़म्बर ! मेरे जो बन्दे ईमान ले आये हैं उन को पैग़ाम दीजिए कि वे नमाज़ क़ायम करें और जो कुछ हम ने उनको दिया है उसमें से छुपे तौर पर या खुले तौर से (जैसा मौक़ा हो, हमारी राह में) ख़र्च करें। (और नेकी के ये सारे काम क़ियामत के) उस दिन के आने से पहले कर लें जिस दिन न ख़रीद व फ़रोख़्त (बेचना) होगी, न दोस्ती। (इब्राहीम : ३१)

यानी उस दिन नेक अमलों पर ही नजात (मुक्ति) का दारोमदार होगा और नेक अ़मल अगर बन्दा खुद अपने साथ नहीं ले गया है तो न वह वहां कहीं से ख़रीद सकेगा न कोई ऐसा दोस्त वहां होगा जो उसको अपने नेक अ़मल देगा। इसलिये बन्दो को चाहिए कि जो समय मिला हुआ है उस को ग़नीमत समझें और नमाज़ व

सदक़ा व ख़ैरात आदि इ़बादतों का ज़ख़ीरा जमा कर के नजात का सामान करें।

इसके बाद चन्द वे आयतें पढ़िये जिन में इ़बादत–गुज़ार बन्दों को बशारतें सुनाई गयी हैं और अल्लाह तआ़ला ने प्यार व महब्बत से उन का ज़िक्र फ़र्माया है। "सूरए–ह़ज्ज" में एक जगह इर्शाद है :–

तर्जमा : और ऐ पैग़म्बर ! बशारत दीजिए और ख़ुश ख़बरी सुनाइये हमारे उन इबादत गुज़ार बन्दों को जिन का ह़ाल यह है कि जब ज़िक्र किया जाये अल्लाह का तो डर जाते हैं उन के दिल, और जो सब्र करते हैं उस पर जो उन पर पड़ती है। और जो क़ायम करने वाले हैं नमाज़ के और (हमारी राह में) ख़र्च करते हैं उस में से जो हम ने उन को दिया है।

तर्जमा : और हमारे जिन बन्दों ने अपने नफ़्स को थामे रखा (उस की बुरी ख्वाहिशों से) अपने रब की रज़ाजोई (प्रसन्नता प्राप्ति) में और क़ायम की उन्होंने नमाज़ और ख़र्च किया उन्होंने उस में से जो हमने उनको दिया था। (मौक़े के मुताबिक़ – अवसरोचित) छुपे और खुले, और करते हैं वे बुराई के मुक़ाबले में भलाई। उन बन्दों के लिये आख़िरत का अच्छा घर है। बाग़ हैं हमेशा रहने के जिन में रहेंगे, और उनके साथ उन के बाप–दादों और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से जो नेक हुये होंगे , और फ़रिश्ते आयेंगे उन के पास हर दरवाज़े से और कहेंगे सलाम हो तुम पर ऐ अल्लाह के बन्दो, बदला उस का जो तुम ने सब्र किया। खूब है और मुबारक है तुम्हारा आख़िरत का यह घर।

और सूरए–नूर में इर्शाद है :

तर्जमा : उन इ़बादत ख़ानों में (जिन का ऊपर ज़िक्र हुआ) उस (अल्लाह) की तसबीह़ व तक़दीस करते हैं सुबह़ व शाम वे बन्दे (अल्लाह से जिन के ताअ़ल्लुक का ह़ाल यह है कि) उन को ग़ाफ़िल नहीं कर सकता कोई तिजारती काम और न कोई ख़रीद व फ़रोख़्त का काम अल्लाह की याद से, और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात अदा करने से। वे बन्दे डरते रहते हैं उस दिन की फ़िक्र से जिस में कि उलट जायेंगे दिल और आखें, ताकि बदला दे उन को अल्लाह उन के अच्छे अ़मलों का और ज़ियादा अ़ता फ़र्मा उन को अपने ख़ास फ़ज़्ल से। और अल्लाह देगा जिस को चाहेगा बेह़िसाब। (नूर : ३६–३८)

और सूरए–तौबा में एक जगह इन बन्दों का जिक्र करते हुए जिन के लिये अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जन्नत का ख़ास वादा है, उनके ख़ास औसाफ़ (गुण) ये बयान फ़र्माये गये हैं।

तर्जमा : वे तौबा करने वाले हैं, इबादत गुज़ार हैं, अल्लाह की ह़म्द करने वाले हैं, रोज़े रखने वाले हैं, रूकूअ़ करने वाले यानी नमाज़ें पढ़ने वाले हैं, अच्छे कामों के लिये कहने वाले और बुराइयों से मना करने (रोकने) वाले हैं, और अल्लाह की बांधी हुई हदों (सीमा–रेखा) की ह़िफ़ाज़त करने वाले हैं। और ऐ रसूल (इन सिफ़ात रखने वाले) मोमिनों को आप (हमारी रहमत और जन्नत की) ख़ुशख़बरी सुना दीजिए। (तौबह : ११२)

और सूरए–मुअ़मिनून में इर्शाद फ़र्माया गया है :–

तर्जमा : बेशक फ़लाह़ (कामयाबी) ह़ासिल कर ली उन ईमान वालों ने (और अपनी मुराद को पहुंच कर वे कामयाब हो गये) जो अपनी नमाज़ें ख़ुशूअ़ के साथ (डरते हुये) अदा करने वाले हैं और जो लग़्व व फ़ुज़ूल (बेकार) बातों और कामों से दूर रहते हैं, और जो ज़कात दिया करते हैं। (मोमिनून : १–४)

●●●

कुऔन पढ़ाओ

बेहतर बनो नबी का तुम फ़रमान सुनाओ
सीखो यहाँ क़ुर्आन फिर क़ुर्आन सिखाओ
मुम्किन जो हो मअ़ना से तुम क़ुर्आन पढ़ाओ
मुश्किल जो हो लफ़्ज़ों ही से क़ुर्आन पढ़ाओ
आ़लिम जो हो क़ुर्आन के अह़काम सुनाओ
मअ़ना नबी से सीख कर तुम सब को बताओ
सीखो जो तुम क़ुर्आन से कुछ भी न छुपाओ
आ़लिम अगर नहीं हो तुम यह बात फिर मानो
पढ़कर के तर्जमों को न अह़काम निकालो
ऐ बन्द–ए–ख़ाकी तु कर क़ुर्आ में तदब्बुर
हो जाएगी इस्लाह़ और टूटेगा तकब्बुर
बेसमझे भी पढ़ता है जो क़ुर्आन ख़ुदा का
शक इस में नही कुछ भी है मेहमान ख़ुदा का

सलवातुल्लाहि अला रसूलिल्लाहि व सलामुहू

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

अल्लाह का हक़ बन्दों पर और बन्दों का हक़ अल्लाह पर

हज़रत मआज़ (र०) बिन जबल से रिवायत है कि मैं गधे पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पीछे था। आपने फ़रमाया, ऐ मआज़! क्या तुम जानते हो अल्लाह का बन्दों पर क्या हक़ है, और बन्दों का अल्लाह पर क्या हक़ है? मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसका रसूल ज़ियादः जानते हैं। फ़रमाया, अल्लाह का हक़ बन्दों पर यह है कि उसकी अ़िबादत करें, और उसके साथ किसी को शरीक न करें; और बन्दों का अल्लाह पर यह हक़ है कि जिसने उसका शरीक न ठहराया हो उस पर अ़ज़ाब न करे। मैंने कहा या रसूलुल्लाह! क्या मैं लोगों को ख़ुशख़बरी दे दूं। फ़रमाया नहीं, वरना भरोसा कर लेंगे। (बुख़ारी मुस्लिम)

हज़रत बरा (र०) बिन आ़ज़िब से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया मुसलमान से जब कब्र में पूछा जाता है वह गवाही देता है कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और मुहम्मद (सल्ल०) उसके रसूल हैं। यही मानें इस कुर्आनिक इरशाद के हैं। (अल्लाह ईमान वालों को इस पक्की बात से दुन्या व आखिरत में मजबूत रखता है। १४:२७)

मोमिन को नेक कामों का अज्र दुनिया और आखिरत में मिलेगा

हजरत अनस (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया कि काफिर जब कोई भलाई करता है तो उसको दुनिया में उसका कुछ न कुछ इनआम मिल जाता है। और मोमिन की भलाइयों का जखीरः उसको आख़िरत में मिलेगा और दुनिया में भी उसको ताअ़त पर रिज़्क़ मिलता है।

एक रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला किसी मोमिन के साथ भलाई के मुआ़मले में कोई कमी नहीं फ़रमाता; दुनिया में भी देता है और आख़िरत में भी बदला देगा। लेकिन काफ़िर जब कोई भलाई अल्लाह के लिये करेगा, तो उस को दुन्या में उसका फल मिल जायेगा; और आख़िरत में उसके लिए कोई नेकी न होगी जिसका बदला दिया जाये। (मुस्लिम)

नमाज़ों की मिसाल

हज़रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, पांच वक्त की नमाज़ों की मिसाल रवां [redacted] नहर की मिसाल है, जो तुममें से किसी के दरवाज़े पर हो; वह उस नहर से रोज़ पांच मर्तबा ग़ुस्ल करता हो। (मुस्लिम)

चालीस मुवह्हिद मुसलमानों की शफ़ाअ़त मुर्दे के हक़ में क़ुबूल होगी

हज़रत इब्नि अ़ब्बास (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सुना है कि मुसलमान आदमी मर जाये और उसके जनाज़े पर ऐसे चालीस आदमी हों जो अल्लाह का शरीक न ठहराते हों तो शफ़ाअ़त उसके हक़ में क़ुबूल फ़रमायेगा। (मुस्लिम)

हज़रत इब्नि मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि हम लोग रसूलुल्लाह (स०) के साथ क़रीब चालीस अश्ख़ास के एक ख़ेमा में थे। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, क्या तुम राज़ी हो कि चौथाई जन्नत वालों में हो? हमने कहा, हां। फ़रमाया, क्या तिहाई जन्नती होना पसन्द है? हमने कहा, हां। तो फ़रमाया क़सम है उसकी कि जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद (सल्ल०) की जान है बेशक मैं उम्मीद करता हूं कि तुम निस्फ़ जन्नती हो। क्योंकि जन्नत में सिर्फ़ मुसलमान ही दाख़िल होंगे। और तुम्हारी निस्बत अहल शिर्क में ऐसी है जैसे एक सफ़ेद बाल बैल की काली खाल में या एक काला बाल बैल की सुर्ख़ खाल में। (बुख़ारी– मुस्लिम)

बख़्शिश एज़दी

हज़रत अबू मूसा (र०) अशअ़री से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला कियामत के दिन हर मुसलमान को एक यहूदी या नसरानी देगा और फ़रमायेगा कि यह तुम्हारा आग से फ़िद्यः है और फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मुसलमान पहाड़ जैसे गुनाहों में लदेफंदे आयेंगे और अल्लाह तआ़ला उनको बख़्श देगा।

अल्लाह तआ़ला के अ़फ़्व व करम की नज़र

हज़रत इब्नि उ़मर (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अ़लैहि वसल्लम से सुना है कि क़ियामत के दिन मोमिन अल्लाह तआ़ला से क़रीब किया जायेगा और वह उस पर अपनी रहमत का साया करेगा। और उससे उसके गुनाहों का

इक़रार लेगा। फ़रमायेगा, क्या तुम इस गुनाह को जानते हो? वह कहेगा, ऐ हमारे परवरदिगार ! हम इसको जानते हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा, मैंने दुनिया में तुम्हारी सत्रपोशी की और आज भी मैं तुमको बख़्शे देता हूं। फिर नेकी का आमालनामः उसको देगा। (बुख़ारी–मुस्लिम)

नमाज़ गुनाहों का कफ़्फ़ारः है

हज़रत इब्नि मसऊ़द से रिवायत है कि एक शख़्स एक गुनाह करके अपने दिल में बहुत नादिम हुआ। वह आंहज़रत (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे उस गुनाह का ज़िक्र किया। इस मौक़े पर यह आयत नाज़िल हुई।

"नमाज़ को क़ाइम करो दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ हिस्सों में बेशक नेक काम बुरे कामों को मिटा देते हैं।" (हूद : ११४) उस आदमी ने कहा कि क्या यह हुक्म सिर्फ़ मेरे लिये है। आपने फ़रमाया, नहीं मेरी सारी उम्मत के लिए है। (बुख़ारी–मुस्लिम)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ नमाज़ पढ़ने से गुनाह मुआफ़ हो गया

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िदमत में एक आदमी हाज़िर हुआ। अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ! मैं एक जुर्म का मुर्तकिब हो गया हूं। आप मुझपर हद कायम कीजिए। इतने में नमाज़ का वक़्त आ गया। उसने नबी (सल्ल०) के साथ नमाज़ पढ़ी। जब नमाज़ पूरी हो गयी तो अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ! मैं एक जुर्म का मुर्तकिब हुआ हूं, पस अल्लाह तआ़ला का हुक्म मेरे बारे में नाफ़िज़ कीजिए। आपने फ़रमाया, तुमने हमारे साथ नमाज़ पढ़ी? अर्ज़ किया, हां। फ़रमाया, बस तुम बख़्श दिये गये। (बुख़ारी–मुस्लिम)

खाने और पीने पर अल्लाह की तारीफ़

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला ऐसे बन्दे से इतनी ही बात पर ख़ुश हो जाता है जो खाना खाये तो अल्लाह की तारीफ़ और शुक्र अदा करे और पानी पिये तो उसकी तारीफ़ और शुक्र अदा करे। (मुस्लिम)

अल्लाह तआ़ला का मोमिन बन्दे की तौबः को चाहना

हज़रत अबू मूसा (र०) अशअ़री से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला रात को अपना हाथ फैलाता है ताकि दिन का गुनहगार तौबः करे; और अपना हाथ दिन को फैलाता है ताकि रात का गुनह गार तौबः करे यहां तक कि सूरज मग़रिब से निकले। (मुस्लिम)

वज़ू और नमाज़ की ख़ासियत

हज़रत अम्र (र०) बिन अबसः से रिवायत है कि मैं जाहिलीयत में गुमान करता था कि लोग गुमराही पर हैं। उनके पास कुछ भी हक़ व हिदायत नहीं है। और वह बुतों को पूजते हैं। फिर मैंने सुना कि मक्का में एक साहब आसमानी ख़बरें देते हैं। मैं अपनी सवारी पर बैठकर उनके पास आया। मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) पोशीदः रहते हैं और आपकी क़ौम बड़ी गुस्ताख़ है। मैंने छुपे–चोरी आप से मिलने की तदबीर की; यहां तक कि मैं आपके पास पहुंच गया। मैंने अ़र्ज़ किया कि आप कौन हैं? फ़रमाया मैं नबी हूं। मैंने कहा, नबी किसको कहते हैं? फ़रमाया, मुझे अल्लाह ने भेजा है। मैंने अ़र्ज़ किया किस चीज़ के साथ? फ़रमाया, मुझको इस पैग़ाम के साथ भेजा है कि रिश्तों को जोड़ा जाये और बुतों को तोड़ा जाये; और अल्लाह को एक समझा जाये, उसके साथ किसी को शरीक न किया जाये। मैंने कहा आपके साथ कौन हैं? आपने फ़रमाया आज़ाद और ग़ुलाम और उस दिन आप के साथ हज़रत अबूबक्र (र०) और हज़रत बिलाल (र०) थे। मैंने कहा, मैं आपकी पैरवी करना चाहता हूं। आपने फ़रमाया इस वक़्त ऐसा करना तुम्हारे लिये बहुत मुश्किल है। क्या तुमको मेरे और लोगों के हाल की ख़बर नहीं ? जब सुनना कि मैं ग़ालिब आ गया तो मेरे पास आना। मैं अपने घर चला आया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना तश्रीफ़ ले गये। जब आप मदीना पहुंच गये तो मैं लोगों से ख़बरें मालूम करने लगा। फिर मदीना के कुछ लोग आये। मैंने उनसे कहा, जो साहब मदीना तशरीफ़ ले गये हैं। उनका क्या हाल है? उन्होंने जवाब दिया, लोग उन पर टूटे पड़ते हैं। उनकी क़ौम ने उनके क़त्ल का इरादा किया था मगर कुछ न कर सके। यह सुनकर मैं मदीना आया और हाज़िरे ख़िदमत हुआ। मैंने अ़र्ज़ किया आपने मुझे पहचाना? फ़रमाया, तुम वही हो जो मक्का में मुझसे मिले थे। मैंने कहा या रसूलुल्लाह! जो अल्लाह तआ़ला ने आपको सिखलाया है, मुझे सिखलाइए। मैं उससे नावाक़िफ़ हूं और मुझे नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ भी बतलाइए। आपने फ़रमाया, सुब्ह की नमाज़ पढ़ो, फिर ठहर जाओ, यहां तक कि सूरज निकल आये और बलन्द हो जाय। क्योंकि वह शैतान के दो सींगों के दर्मियान निकलता

है। उस वक्त काफ़िर उसको सिज्दः करते हैं। फिर नमाज़ पढ़ो। इसलिये कि नमाज़ के वक़्त रहमत के फ़िरिश्ते मौजूद रहते हैं। फिर ठहर जाओ। जब साया नेज़े के बराबर हो जाये तो रूक जाओ इस लिये कि उस वक्त दोज़ख़ दहकायी जाती है। फिर जब साया बढ़ने लगे (ज़वाल हो जाये) तो नमाज़ पढ़ो क्योंकि उस वक़्त भी रहमत के फ़िरिश्ते मौजूद रहते हैं। यहां तक कि तुम अ़स्र पढ़ो। फिर सूरज के ग़ुरूब तक ठहर जाओ उस वक़्त शैतान दो सींगों के दर्मियान छुपता है। उस वक़्त काफ़िर उसको सिज्दः करते हैं। मैंने कहा, या नबिय्यल्लाह ! वुज़ू के मुतअ़ल्लिक भी बतला दीजिए। आपने फ़रमाया, जब कोई शख़्स वुज़ू का इरादा करता है तो कुल्ली करता है। नाक में पानी डालता है। फिर नाक साफ करता है। फिर वह अपना चेहरा धोता है। उसके चेहरे की ख़ताएं पानी के साथ उसकी दाढ़ी के किनारों से निकल जाती हैं। फिर अपने हाथ कुहनियों तक धोता है तो उसके हाथ की ख़ताएं पानी के साथ उसकी उंगलियों से निकल जाती हैं। फिर अपने सर पर मस्ह करता है तो उसके सर की ख़ताएं पानी के साथ उसके बालों के किनारे से निकल जाती हैं। फिर वह अपने पांव टख़नों तक धोता है, तो उसके पांव की ख़ताएं पानी के साथ उसकी उंगलियों से निकल जाती हैं। फिर वह नमाज़ पढ़ता है। उसमें अल्लाह की तारीफ़ और सना बयान करता है और ऐसी बुज़ुर्गी जिसका वह अहल है। और अपने दिल को अल्लाह की तरफ़ यकसू कर देता है। तो वह अपनी ख़ताओं से इस तरह पाक व साफ़ हो जाता है जैसे लड़का पैदाइश के दिन। अ़म्र (र०) बिन अ़बसः ने यह ह़दीस अबू उमामः से बयान की। (अबू उमामः सह़ाबी थे) तो उन्होंने उनसे कहा, देखो क्या कहते हो, एक जगह पर इतना मर्तबा आदमी को दिया जाएगा? अ़म्र (र०) ने कहा, ऐ अबू उमामः! समझकर कहो; मेरी उ़म्र बड़ी हो गयी और मेरी हड्डी कमज़ोर हो गयी, मौत मेरे क़रीब आ गयी। मुझे ज़रूरत नहीं कि मैं अल्लाह और उसके रसूल पर झूठ बोलूं। अगर मैंने इसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से न सुना होता एक मर्तबा, दो मर्तबा, तीन मर्तबा (यहां तक कि सात तक गिन गये) तो मैं कभी न कहता; लेकिन मैंने इससे ज़ियादः इसको सुना है। (मुस्लिम)

ह़ज़रत अबू मूसा (र०) अशअ़री से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया जब अल्लाह तआ़ला किसी उम्मत पर रहमत का इरादा करता है, तो उनके नबी को उनसे पहले अपने पास बुला लेता है और उनको इस उम्मत का पेशरव बना देता है। और जब किसी उम्मत पर हलाकत का इरादा करता है, तो उन पर उनके नबी की ज़िन्दगी में अ़ज़ाब भेजता है। और वह उसको मुलाह़ज़ा फ़रमाते हैं। उनकी आंखें उनकी हलाकत से ठण्डी करता है; इसलिए कि उन्होंने झुठलाया और उनके ह़ुक्म की नाफ़रमानी की।(मुस्लिम)

(पृष्ठ १६ का शेष)

खड़ा होकर सुनता, ऐसा मालूम होता कि पानी बरस रहा है।

ख़ानदानी झगड़े और उनका ख़ात्मा

मैंने जब शऊर की आंखें खोलीं तो उस समय खानदान का वह तनाज़ा (झगड़ा) पिताजी के प्रयासों से ख़त्म हो चुका था, जिसने स्थायी दुराव और अलगाव का रूप ले लिया था। यह अनबन मेरे ननिहाली बुजुर्गों और मियां अब्दुर्रशहीद साहब की शाख के बीच थी। इस के परिणाम स्वरूप घरों का आना जाना भी बन्द था। मेरे दादा साहब इस अनबन के ज़माने में भी एक दूसरे से मिलते जुलते थे। पिता जी इस अनबन से बेचैन थे, अन्ततः उन्हीं के प्रयासों से ख़ानदान के एक वयोवृद्ध सय्यिद क़ुत्बुद्दीन साहिब के बीच में पड़ने से यह तनाज़ा ख़त्म हुआ। और दोनों शाख़ों में मेल मिलाप हो गया। वालिद साहब ने इसी मक़सद के लिए एक रिसाला "इस्लाह" के नाम से लिखा था, इस से भी तनाज़ा ख़त्म कराने में बड़ी मदद मिली।

लेकिन जब मैंने होश संभाला तो एक दूसरे तनाज़े का ज़माना था। यह अनबन हमारे ननिहाली तीन चार घरों और ख़ानदान के एक दूसरे बुज़ुर्ग मियां सैयद नज़ीर अहमद और उनके लड़कों के बीच थी जिन के मकान बस्ती के शुरू में उत्तर पश्चिम की तरफ़ है। लोग एक दूसरे के मिलने के रवादार न थे, बच्चों का भी आपस में मिलना और घर आना जाना पसन्द नहीं किया जाता था, लेकिन खेल एक ऐसी चीज है जो इन बन्धनों से आज़ाद है और पिछड़ों व बेगानों को मिलाने वाला है, हम बच्चे एक दूसरे के साथ खेलते थे। समय के साथ यह अनबन भी स्वतः समाप्त हो गयी।

टोंक में ख़ानदान की शाख़ा और उसकी विशेषताएं

हमारे ख़ानदान की एक शाख़ा टोंक में रह रही थी। टोंक में यह लोग जहां रहते थे उसका नाम क़ाफ़िला था। सैयद अहमद शहीद के साथियों के इस मुहल्ले में रहने वालों और ख़ानदान की यह शाख़ भाईचारे, मेल मिलाप, विनम्रता और सादगी, मातहतों से समानता का बर्ताव आदि विशिष्ट गुणों में रायबरेली की शाख़ से बढ़ चढ़ कर थी। बाद में सन् १६२०–२१ ईस्वी में नवाब इब्राहीम अ़ली खां की बदगुमानी से यह दूसरी शाख़ भी टोंक से रायबरेली चले आने पर मजबूर हुई। (जारी)

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का आदर्श

समस्त मानवता के लिये उत्तम आदर्श है

मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

इस कौन व मकां (संसार) के ख़ालिक़ व मालिक अल्लाह तआला ने इन्सानों की इस्लाह़ (सुधार) के लिये और अपनी ताबेदारी और शुक्र के लिये और अपनी पसन्द के अख़लाक़ (आचार) के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा बताने के लिये हर क़ौम में हर ज़माने में नेक इन्सानों में से ही किसी नबी को मुक़र्रर किया जो अच्छी बातें बताते और बुरी बातों से रोकते थे, और सबसे आख़िर में सय्यिदुना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सारे आलम का नबी मुक़र्रर कर के यह सिलसिला पूरा कर दिया गया। आप से पहले हर हर क़ौम और इलाक़े में जब वहां बुराइयां बहुत बढ़ जाती थीं अपनी ही क़ौम में अंबिया अलैहिमुस्सलाम आते रहे और वाहिद (एक) परवरदिगार मानने और उस के हुक्मों पर चलने की तल्क़ीन करते रहे, उनका दाइर–ए–अमल उनही की क़ौम और उनही का इलाक़ा होता था लेकिन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को आख़िर ज़माने में इल्म आम होने के सबब सारे आलम और क़ियामत तक के लिये नबी मुक़र्रर कर के भेजा गया। आप को जो अह़काम पहुंचाने के लिये दिये गये उनके लिये अल्लाह तआला की तरफ़ से ऐसा इन्तिज़ाम किया गया कि वह सब को पहुंचे ताकि किसी को अपनी नावाक़िफ़ीयत का उज़्र न हो, उसके लिये अल्लाह तआला की तरफ़ से दो बातें मुक़द्दर की गयीं। एक तो यह कि वह तमाम ह़ज़रात जो आप पर ईमान लाए उनको अल्लाह तआला ने ऐसी ईमानी पुख़्तगी अ़ता फ़रमाई कि वह अल्लाह तआला की तरफ़ से अल्लाह के रसूल की तरफ़ से बताई हुई हर बात के बड़े पुख़्ता अमीन बन गये और उनको अल्लाह के रसूल ने अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने में अपना क़ाइम मक़ाम भी बनाया और दूसरों तक पहुंचाने की ज़िम्मेदारी सिपुर्द की चुनांचि उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुन्या से तशरीफ ले जाने के बाद आप की बताई हुई और हुक्म दी हुई बातों को दुन्या के दूसरे इलाक़े और क़ौमों तक पहुंचाने का काम अंजाम दिया और अपनी आइन्दा नस्ल को भी यह ज़िम्मेदारी मुंतक़िल की जिस से उन के बाद वाली नस्ल में एक बड़ी तादाद इन तालीमात की मानने वाली और अ़मल करने वाली तैयार हो गई, जिस ने इन बातों को दिल से लगाया और जहां वह तालीमात नहीं पहुंची थी वहां पहुंचाने की कोशिश की और अपने बाद के लिये अपनी अगली नस्ल को भी जिम्मेदारी सुपुर्द की। इस तरह नस्लन बाद नसलिन ऐसे ईमान वाले अफ़ाद की एक तादाद सामने आती रही जो इस दीनी अमानत को सेने से लगाती और दूसरों तक पहुंचाती। यह इन्तिज़ाम अल्लाह तआला की तरफ़ से था कि ईमान वालों की एक तादाद ऐसी बनती रही जो ईमान के तक़ाज़ों और दीनी पैग़ाम को पहुंचाती रहे। अ़हदे ऊला में चूंकि इल्म का दर्जा बहुत कम था, इस लिये पहली नस्ल के ज़िम्मेदारों ने ज़बानी और अ़मली तौर पर काम अंजाम दिया फिर अल्लाह तआला की तरफ़ से उस के आख़िरी रसूल से इ़लम ह़ासिल करने और फैलाने की ताकीद हुई चुनांचि दीन का यह ज़बानी पैग़ाम तह़रीर में आकर किताबों की मुस्तनद शक्ल इख़्तियार कर लिया। ख़ुद अल्लाह तआला का कलाम शुरू ही से तहरीर में आ चुका था इस तरह वह और उस के रसूल की बताई हुई और अ़मल की हुई बातें किताबों में महफ़ूज़ हो गयीं और उनके ज़रीअे दीने ह़क़ की रहनुमाई ज़ियादा से ज़ियादा लोगों तक पहुंचने लगी और इस तरह आख़िरी नबी का काम व पैग़ाम आम होता रहा और नस्लन बअ़द नस्लिन मुन्तक़िल भी होता रहा। दूसरी तरफ़ आप के ज़माने से इल्म के इख़्तियार करने का जो अ़हद शुरूअ़ हुआ उससे दुन्या में इल्म का बहुत फ़रोग़ और रवाजे आम हो गया। इल्म के इस फ़रोग़ व रवाज में इस्लाम के फ़रज़न्दों का बड़ा अ़ज़ीम किरदार रहा बल्कि कई सदियों तक इल्म की तरवीज व इशाअत के रहबर व रहनुमा यही लोग रहे। उन्होंने अपने बड़ों से जो अपने परवरदिगार के अहकाम और अच्छे

आमाल जो अपने नबी से लिये थे वह सब इल्म के रवाज की बिना पर किताबों के दाइरे में आ गये और मुनासिब व मुअ़तबर तरीक़े पर महफ़ूज़ हो गये, उनके सहीह होने पर एअ़तिबार क़ाइम करने के लिये कि यह बातें बिल्कुल सहीह नक़्ल की गई हैं, अल्लाह तआ़ला की तरफ से एक ऐसी जमाअ़त भी खड़ी कर दी गई जिन्होंने इन बातों के बयान करने वालों की जिन्दगियों का और उनके क़ौल व अ़मल का पूरा जाइज़ा लेने का काम अंजाम दिया और उनके सच्चे होने और क़ौल व अ़मल में कमाल दर्जे के दयानतदार होने के दलाइल जमा किये, उन में से किसी में कोई कमज़ोरी महसूस की तो उस को भी क़लमबन्द कर दिया ताकि उन की बताई हुई बात को उनकी दयानतदारी के मेअ़यार को सामने रखकर ही देखा जाए। इस तरीक़े से आने वाली नस्लों के लिये बात आसान हो गई कि रिवायत करने वाले किस शख़्स की बात कितनी मुहतात और कितनी पुख़्ता समझने के लाइक़ है। इसी तरह दीन का इल्म और आख़िरी नबी की सारी बातें अपनी सहीह हक़ीक़त के साथ सामने आ गईं और उनके मानने वालों और उन पर अ़मल करने वालों को उन पर एअ़तिबार व यक़ीन करना आसान हो गया। इसी के साथ यह बात भी हुई कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की नुबुव्वत के जो २३ साल हुए उन पर आपकी हयाते तय्यिबा के तमाम इन्सानी व नबवी पहलू बित्तफ़सील आप के सहाबा के सामने आ गये। इसी बिना पर आप तमाम इन्सानों की ज़िन्दगियों के तमाम पहलूओं में आला सिफ़ात का नमूना बन गये। इन २३ सालों में आप के हालात घर के हों या बाहर के अ़मली हों या क़ौली वह सब जमा हो कर बाद वालों के लिये किताबों में महफ़ूज़ हो गये। इस तरह इन्सानी ज़िन्दगी को ऐसा कामिल नमूना मिल गया कि ज़िन्दगी के मुख़तलिफ़ हालात में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के यहां से क्या नमूना मिलता है। हुजर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को खुद जो हालात पेश आए उन में उन का क्या रवैय्या रहा, खुशी के हालात, फ़िक्र व परेशानी के हालात, रंज व ग़म के हालात, दोस्ती व महब्बत के हालात, दुशमनी व मुख़ालफ़त के हालात, एक महबूब शहरी के हालात, एक गरीबुलवतन परदेसी के हालात, घरेलू ज़िन्दगी में पेश आने वाले हालात, बीवी के साथ रहने के हालात, बीवी के इन्तिक़ाल कर जाने के हालात। इन हालात में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के अ़मल का नमूना मिल गया।

आप पैदा होने के बाद शऊ़र की उ़म्र को पहुंचे तो आप के इल्म में आया कि वालिद नहीं है आप की शफ़क़त के लिये वालिद की जगह दादा हैं। फिर वालिदा भी इन्तिक़ाल कर गईं जब कि अभी आप की उ़म्र वालिदा के साथ ही रहने की थी, फिर दादा भी नहीं रहे अब मां, बाप और दादा की जगह सिर्फ़ चचा थे और वह भी तंगीए मआ़श की हालत में थे और आप अभी मआ़शी लिहाज़ से ख़ुद अपने पैरों पर खड़े नहीं हो सके थे, सब्र और गमख़्वारी के साथ आप इस मरहले से गुजरे और जरा बड़े हुए तो उजरत पर बकरियां चराईं, फिर तिजारत के काम में लगे और अच्छे खुशहाल घर की रफ़ीक़-ए-हयात मिलीं उन के साथ अच्छे उन्स व महब्बत के साथ ज़िन्दगी शुरूअ़ हुई, औलाद हुईं, उन में से बाज़ की बचपन ही में वफ़ात हो गई बाज बड़ी हुईं, लड़कियां थीं उनकी शादी हुई।

आप पर नुबुव्वत की ज़िम्मेदारी पड़ने पर ख़ानदान के लोगों की तरफ़ से ईज़ा रसानी से साबिक़ा पड़ता तो अहलिया से तस्कीन और चचा से हमदर्दी मिलती थी जो आप के लिये तक़वीयत का एक ज़रीआ़ थी, इन हालात में कुछ मुद्दत गुज़री कि दोनों का इन्तिकाल हो गया। आप को जब कि अपने शहर के और ख़ान्दान के अ़ज़ीज़ों की मुख़ालफ़तों का सामना था इस में इन महब्बत करने वाले चचा और हमदर्द रफ़ीक़-ए-हयात के इन्तिक़ाल का सदमा झेलना पड़ा, इस तरीक़े से आप ने सब्र व बर्दाश्त की मिसाल क़ाइम कर दी कि किसी को इस से ज़ियादा सख़्त हालात में सब्र करने की मिसाल नहीं मिल सकती, फिर अल्लाह तआ़ला ने बाद में मुतअ़द्दिद मसर्रत के मवाक़िअ़ भी अ़ता फ़रमाए। दुशमनों को शिकस्तें दीं और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कट्टर और जानी दुशमन मुसलमानों से मुक़ाबला करने पर मारे गये। दीने इस्लाम में आप की कोशिशों को काम्याबियां मिलीं और आप के अस्हाब की तरफ़ से इतनी महब्बत मिली जो ख़ान्दान के क़रीब से करीब अ़ज़ीज़ से नहीं मिलती और आख़िरत में उसी मक्के में जहां आप को तक्लीफें दे कर क़त्ल कर देने का मन्सूबा बनाया था और आप को मजबूरन शहर छोड़ कर

हिजरत करना पड़ी थी, फ़ातिहाना दाख़िला हुआ और बड़े से बड़े दुशमन सामने बे बस खड़े थे, आप ने ख़ुशी के किसी मौक़ेअ़ पर ऐसा कोई जुम्ला नहीं कहा जिस से फ़ख़ और बड़ाई का इज़्हार होता हो और न अपने मुख़ालिफ़ों से अपनी ज़ात के लिये इन्तिक़ाम लिया बल्कि मुआफ़ कर दिया और एक मौक़िअ़ पर फ़रमाया कि मैं ऐसी ख़ातून का बेटा हूं जो सूखा हुआ गोश्त खा कर काम चलाती थीं और हर ख़ुशी के मौक़िअ़ को अल्लाह के फ़ज़्ल व करम की तरफ़ मन्सूब किया और आजिज़ी के जज़बे के साथ –शुक्र अदा किया, जिस तरह मुसीबतों और रंज के मौक़िअ़ पर अपने परवरदिगार के सामने अपनी आजिज़ी के इज़्हार के साथ उन की मर्ज़ी पर राज़ी रहने का इज़्हार करते रहते थे, ख़्वाह महब्बत करने वाले चचा का इन्तिक़ाल हो या मुशकिलात में हमदर्दी करने वाली बीवी का या अक्लौते फ़रज़न्द का इन्तिक़ाल हो। आप को चालीस से त्रिपन साल तक की उम्र तक बहुत अज़ीयतें दी गईं और तकलीफ़ें हुईं। ५३ साल की उम्र के बाद महबूबियत और मुख़्तलिफ़ ख़ुशयों के मवाक़िअ़ भी अ़ता हुए, जिस में दुशमन के मुक़ाबले काम्याबियां, लोगों की महब्बत व अ़क़ीदत, जो फ़िदाईत की हद तक पहुंची हुई थी और माले कसीर का हुसूल और मौजूद अहल व अ़याल से उन्स व महब्बत के मवाक़िअ़ हासिल हुए, लेकिन जिस तरह आप ने मुशकिलात और मसाइब में कामिल सब्र और बर्दाश्त व रवादारी के अअ़ला किरदार का नमूना क़ाइम किया, मसर्रत व काम्याबी के मौक़ों पर भी संजीदगी, एहतियात और शुक्रे ख़ुदावन्दी की अअ़ला मिसाल क़ाइम की। दौलत की फ़रावानी में भी आप का हाल अपने ऊपर बहुत तंगी के साथ ख़र्च करने और दूसरों की ग़ैर मामूली अन्दाज में मदद करने और देने दिलाने का रवैया रहा, वक़्तन फवक़्तन फ़ाक़े करने पड़ते थे क्योंकि जो भी माल आता वह फ़ौरन दे दिला कर ख़त्म कर देते तो ऐसे हालात पेश आते कि ख़ुद अपनी ज़रूरत पूरी न कर सकते, कभी किसी के सुवाल पर इन्कार नहीं किया, अपने पास न हुआ तो क़र्ज़ लेकर उस की ज़रूरत पूरी कर दी, लेकिन अपनी ज़रूरत के लिये कुछ बचाने की कोशिश न की। आप की उस वक़्त की रफ़ीक़–ए–हयात को इस तंगी और तुर्शी से साबिक़ा पड़ने पर जब कुछ कहने का मौक़अ़ हुआ तो आप ने फ़रमाया कि हमारे साथ रहने में तुम्हें यह बर्दाश्त करना पड़ेगा, हमें यह अच्छा नहीं मालूम होता कि माल हमारे घर में रहे और दूसरे लोग ज़रूरत मन्द हों, इस लिये जो आए वह बांट दिया जाये। अख़्लाक़ व रवादारी का मुआमला यह था कि अपनी ख़िदमत करने वाले किसी छोटे को कभी उस की ग़लती पर तंबीह नहीं की, अपनी अहलिया के साथ ज़ियादा से ज़ियादा उन्स और रवादारी और रिआयत का मुआमला किया कोई ऐसी सख़्ती भी नहीं की जो बाज़ वक़्त शौहर बीवी के साथ करता है और अपने सहाबा के साथ ऐसी महब्बत और ख़ुश अख़्लाक़ी से पेश आते कि सब आप के ऐसे आशिक़ बन गये कि ऐसा दो दोस्तों और अज़ीज़ों के दरमियान भी नहीं होता। आप की रवादारी और रिआयत करने का यह हाल था कि दुश्मन भी आपके इख़्तियार में आया तो उसके साथ भी रिआयत की। वह बुरी नीयत से आया तो भी आप ने उसे मुआफ़ कर दिया और अपनी ज़ात के लिये किसी से बदला न लिया। यह सब ऐसा किरदार था कि तारीख़े इन्सानी में इस की नज़ीर नहीं मिलती। आप के सब हालात आपके सहाबा ने अपने दिलों में बिठा लिये और अपनी ज़बानों से आइन्दा आने वाली नस्लों को मुन्तक़िल किये फिर आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने इल्म हासिल करने की ऐसी तल्क़ीन फ़रमाई कि वह अ़रब जो इल्म व तालीम से कोई वास्ता नहीं रखते थे, सिर्फ़ सौ साल के अन्दर इल्म व तालीम की चोटी पर पहुंच गये और सारी दुन्या के मुअ़ल्लिम व उस्ताद और इल्म व तहक़ीक़ के माहिर बन गये और उन्होंने दीन व दुन्या दोनों मैदानों में नये उ़लूम का इज़ाफ़ा किया और इल्म की ऐसी राहें निकालीं जो उस वक़्त तक दुन्या में नहीं लिकाली गई थीं और यह सब फ़ैज़ था उस नबीये उम्मी का जो उम्मी होने के बावजूद इल्म वालों का रहबरे कामिल और सरदार बना और जो एक महदूद और तमद्दुनी लिहाज़ से पसमांदा मक़ाम पर पैदा होने के बाद अपने परवरदिगार की तरफ़ से सारी दुन्या को और ता क़ियामत आने वाले इन्सानों को ज़िन्दगी की अ़जीमुश्शान राहों को खोलने वाला और इस आलमे इन्सानी के मेअ़यार को बुलन्द करने वाला साबित हुआ। यह सब वह्ये इलाही का फ़ैज़ था और आसमानी हिदायत के तहत आप की तरबीयत थी ताकि आपकी ज़िन्दगी क़ियामत तक आने वालों के लिये बुलन्द से बुलन्द और अच्छी से अच्छी सिफ़ात का नमूना बने और जिस की क़िस्मत में काम्याबी लिखी हो वह इन नमूनों को अपना कर काम्याब और सुर्ख़रू इन्सान बन जाए।

किस्त तीन

कारवाने ज़िन्दगी

अबुल हसन अली हसनी नदवी
अनुवाद : एम हसन अंसारी

मेरे जन्म से पहले घर का नक्शा

माताजी अपने इस नये घर में आईं तो उसका नक्शा उन्होंने वही देखा जिस को वह सुना करती थीं, तंगी का जमाना, कभी फरागत, कभी फाकः, घर में कई खाने वाले और दादा साहब की आमदनी बरायनाम। उधर नानी साहिबा स्नेहवश इस टोह में रहतीं कि बेटी को कुछ तकलीफ तो नहीं है। कभी किसी मामा को भेजतीं कि घर में कुछ पक रहा है या नहीं? मां ने कई बार सुनाया कि जब मैं किसी को मैके से आता देखती तो चूल्हे पर हांडी रख देती। और आग जला देती ताकि मालूम हो कि खाना पक रहा है, हालांकि उस में पानी के अलावा कुछ न होता। बाज अवकात नानी साहिबा अपनी दानाई से ताड़ लेतीं और रवाना भेज देतीं।

कुछ ही समय के बाद पिता जी ने हकीमी शुरू करने का इरादा किया, माता जी कहती थीं कि मुझ से सलाह लिया, मैंने उसका समर्थन किया और हकीमी का सिलसिला शुरू हो गया, मतब (हकीमी) शुरू होते ही वह परेशानी दूर हो गई, आमदनी का नक्शा ही बदल गया। धीरे–धीरे घर जो अधिकांश कच्चार था, पक्की हवेली में बदल गया। जिस घर में घरवालों को स्वयं कभी–कभी फाका करना पड़ता था अब वहां हर घर से ज्यादा मेहमानों का सिलसिला शुरू हो गया।

इसी घर में १३२४ हिजी (जून १९०६) को मेरी बड़ी बहन सैयदः अमतुल अजीज और १३२५ हिजी (१९०७) में मेरी दूसरी बहन सैयदः अमतुल्ला आयशा का जन्म हुआ और ६ मुहर्रम १३३३ हिजी (१९१४) में मेरा जन्म हुआ।

दायरः शाह अलमउल्लाह या तकिया कलां :

अपने बचपन का हाल, उस वक्त का माहौल और प्रारम्भिक छाप तथा संस्मरण का बयान करने से पूर्व, उस छोटी सी देहाती बस्ती का एक नक्शा दिखाना चाहता हूं जिस की बुनियाद १०५० हिजी में हजरत सैयद शाह अलमउल्लाह नक्शबन्दी, जो हजरत सैयद आदम बिन्नौरी के खलीफा थे, के हाथों पड़ी। इस बस्ती में बड़े–बड़े औलिया अल्लाह और मुजाहिद पैदा हुए जिन में हजरत सैयद अहमद शहीद का नाम सब से ज्यादा रौशन है।

आप जब शहर रायबरेली से पूर्व व उत्तर की तरफ से आयें तो मील डेढ़ मील के फासले पर सई नदी के किनारे सादात के चन्दघरों की एक छोटी सी बस्ती नजर आयेगी। शहर के इस बस्ती से मिलाने वाला रास्ता खेतों के बीच से पगडंडियों का है। हाल में पुख्ता सड़क बन गई है जो इस बस्ती को शहर जाने वाली एक सड़क से मिला देती है, पगडंडियों का पुराना रास्ता अब भी मौजूद है। इस बस्ती में मेरे बचपन में केवल आठ घर थे। इनमें एक घर से दूसरे घर में जाने का रास्ता था पहले पश्चिम की ओर दो मकान हटे हुए नजर आयेंगे जो इसी खानदान की एक शाखा के लोग हैं। अगर पूरब और उत्तर की तरफ से इस बस्ती में दाखिल हों तो पहले इमली का एक बहुत बड़ा पेड़ मिलेगा जिसके नीचे पूरी पूरी बरातें और काफिले ठहर सकते थे। एक तरफ से लगा हुआ हमारे दादा साहब का बैठका जो कच्चा और छप्पर का था मिलेगा जहां वह बैठ कर लिखने पढ़ने का कार्य किया करते थे। वहीं मतब (चिकित्सालय) भी था और मुलाकात का कमरा भी। इस बैठके के (जिस को अभी तक हम लोग बंगला कहते हैं) सामने हमारा पैतृक मकान है। इसके और बैठक के बीच सिर्फ तीन चार गज की पतली गली है। इस घर से लगा हुआ इस खानदान के उस समय के सब से प्रतिष्ठित बुजुर्ग और जिले के जमींदार व रईस और आनरेरी मस्जिस्ट्रेट सैयद खलीलुद्दीन साहब और उनके छोटे भाई सेयद अमीनुद्दीन साहब की हवेली है। हमारे घर से उस घर में जाने का जीना है। इस हवेली से लगा हुआ सैयद खलीलुद्दीन साहब और उनके छोटे भाई सैयद अमीनुद्दीन साहब का दीवानखाना है जो इस छोटी सी बस्ती में सब से शानदार बैठका है, दोनों भाई इसी में रहते हैं, यहीं जमींदारी के मामले तय होते हैं, जिलेदार और लगान देने वाले किसान यहीं आते हैं। इसके ठीक सामने उनके चेचेरे भाईयों सैयद अहमद सईद साहब और हाफिज सैयद उबैदुल्लाह साहब का मकान है, इन चारों भाइयों की जायदाद मुश्तरक है। इन दोनों मकानों के बीच एक खुला मैदान है जो बस्ती के बच्चों के खेलने की जगह और आयोजनों का स्थल है, इसको जानबूझ कर खाली रखा गया है ताकि बस्ती का पर्यावरण ठीक रहे, और लोगों के जमा होने और

बच्चों को खेलने का मौका मिले मैदान के नीचे पश्चिम की ओर मस्जिद को जाने वाला रास्ता है। इस रास्ते से आप दक्षिण की ओर आगे बढ़ेंगे तो कुछ पग पर सैयद मोहम्मद नईम साहब उर्फ अच्छे मियां साहब का बंगला है जो बहुत अच्छा बना है। इससे आगे बढ़ने पर बायें तरफ एक टीला सा नजर आयेगा जिस पर कभी इसी खानदान के बुजुर्गों का मकान था जो अब गिर चुका है। आगे बढ़ेंगे तो दायें तरफ एक तालाब नजर आएगा जिसको यहां गढ़यिा कहा जाता है। समभवतः यहीं से मिट्टी लेकर मकान बने। इस के किनारे इमली का एक दूसरा बहुत बड़ा पेड़ है। जिसके नीचे गर्मियों में दक्षिणी भाग के रहने वाले चारपाईयां डालकर बैठते हैं, और मनोरंजन करते हैं। यहीं पूरब की ओर ऊंचाई पर जहां बाढ़ में भी पानी नहीं पहुंचता तकिया के प्राचीनतम मकान और वह दायरः मिलेगा जिस में इस नई आबादी के संस्थापक हजरत सैयद शाह अलमउल्लाह साहब और उनकी औलाद का घर और हजरत सैयद अहमद शहीद का जन्म स्थल है। यहां भी दो ही मकानात थे जो एक दूसरे से बीच के दरवाजे से जुड़े थे। इस के पहलू में दक्षिण की ओर वह बैठका या बंगला है जो इस बस्ती की सब से रौनकदार जगह है। टोंक से रिश्तेदार आते हैं। तो यहीं ठहरते हैं सामने वह ऐतिहासिक व बरकत वाली मस्जिद है जिसकी पुख्तः तामीर (निर्माण) सन् १०८३ हिज्री में हजरत शाह अलम उल्ला के मुबारक हाथों से हुई। इसकी बुनियाद में ज़मज़म डाला गया और इसको काबा शरीफ के नक्शे पर लगभग उसी लम्बाई चौड़ाई के साथ बिना मीनार व गुम्बद के बनाया गया सिर्फ अदबन (आदर की भावना) चन्द अंगुल कम रखा, यहीं मदरसा भी था, खानकाह भी थी। मस्जिद के ठीक सामने पूर्वी–दक्षिणी कोने पर एक चारदीवारी या हजीरा है, जिस के खानदान वाले पुराने समय से रौज़ा कहते हैं, इसके अन्दर हजरत शाह अलमउल्ला, उनके बड़े लड़के सैयद आयत उल्लाह शाह साहब की पत्नी, लड़के मोहम्मद अदल उर्फ शाह लाल और इसी खानदान के कुछ लोगों की कबरें हैं जो सब की सब कच्ची हैं और किसी पर कोई तख्ती या कत्बा नहीं हैं। मस्जिद के पूर्वी उत्तरी सिरे पर कोने में हजरत शाह आलम उल्लाह साहब के तीसरे लड़के सैयद अबू हनीफा और सैयद अहमद शहीद के पिता जी सैयद इरफान की करबें हैं। मस्जिद के पश्चिम की ओर खानदान का आम कब्रस्तान है।

सबज़–ए–नवरस्ता इस घर की निगहबानी करे।

मस्जिद के नीचे सई नदी बहती है। गर्मियों में शाम को मस्जिद का दक्षिणी हिस्सा और नदी का किनारा पूरी बस्ती का मनोरंजन स्थल बन जाता है। लोग मोलसरी के नीचे सिमट कर आ जाते हैं। नदी में नहाने का एक हंगामा बरपा होता है। तैरने वाले अपना कमाल दिखाते हैं और जिनको तैरना नहीं आता उनको तैरना सिखाते हैं। इस अच्छे कार्य में हमारे टोंक के रिश्तेदार हाफिज सैयद हबीबुर्रहमान साहब पेश पेश रहते थे। मगरिब की अजान तक यह चहल पहल जारी रहती है। नदी पार पश्चिम की तरफ देशी आमों का एक घना बाग है जो मेरे दादा साहब और उनके औलाद की जायदाद है, आमों के मौसम में जब नदी भरी होती है और उसका पाट बहुत बड़ा हो जाता है, तैराक लोग नदी पार करके बाग में जाते हैं और आमों से उनकी आव भगत की जाती है।

बस्ती के मकानों के पश्चिम में बागों का सिलसिला है, पूर्वी और उत्तरी दिशा में हरे भरे खेतों का जिसके कारण यह बस्ती हरे समन्दर में एक सुन्दर टापू मालूम होती है। किन्तु समय समय पर आने वाली बाढ़ तबाही मचा देती है और तब प्रायः बस्ती वालों को घर छोड़कर, कहीं शहर में या आस पास ऊंचाई पर स्थित किसी गांव में शरण लेनी पड़ती है। इस परेशानी से कभी कभी बस्ती वालों को विचार आया कि वे स्थायी रूप से अपने रहने के लिये कोई ऊंचाई पर स्थित जगह चुनें लेकिन वतन की कशिश ने ऐसा नहीं होने दिया। इस प्रकार इस खानदान ने तीन सौ वर्ष यहां गुजार दिये, आगे का हाल अल्लाह को मालूम है।

मेरा बचपन

मेरे जन्म के बाद सब से प्रमुख घटना जो घटित हुई और जिसकी याद अभी तक दिलों में ताजा है वह सन् १९१५ की भयावह बाढ़ है। मेरी उम्र उस समय एक साल कुछ महीने थी। अक्टूबर सन् १९१५ में अचानक बाढ़ आई जिस ने पिछले सब रिकार्ड तोड़ दिये। बस्ती के रहने वाले बड़ी बेसरोसामानी और परेशानी की हालत में निकले। सब से बड़ी समस्या औरतों और बच्चों की निकालने की थी जिन को कमर भर पानी में निकालना पड़ा। पर्दो की व्यवस्था सम्भव न थी। मुश्किल से एक दो पालकियों की व्यवस्था की गयी। जिस में कुछ स्त्रियां और बच्चे थे, उन्हीं बच्चों में एक मैं भी था जो अपनी फूफी की गोद में था जिन की शादी थोड़े दिन पहले हुई थी। सुना है कि सैयद खलीलुद्दीन साहब और सैयद अमीनुद्दीन साहब यह दृश्य देख

कर रो रहे थे। इस बाढ़ में जानें और कीमती सामान सुरक्षित रहे, अलबत्ता हमारे पैतृक मकान जो आधा पक्का आधा कच्चा था, गिर गया।

बड़ी बात यह कि इस अफरा तफरी में हमारे घर के बुजुर्गों को किताबों के भण्डार को सुरक्षित कर देने का होश बाकी रहा, और उनको इस का मौका मिला। इन किताबों में बहुमूल्य पाण्डुलिपियां (मखतूतात), फरमान, दस्तावेज, फतुए और खानदान के लेखकों के मूल लेख शामिल थे। किताबों का यह सब से बड़ा भण्डार हमारे ही यहां था, दूसरे नम्बर पर खानदान के एक दूसरे बुजुर्ग मियां अब्दुर्रशीद साहब के यहां जिनका मकान और बैठका नदी के ठीक किनारे था, वह भी सुरक्षित रहा।

तकिया से निकलकर लोग यह घर छोड़कर सैयद इकबाल अली साहब जाफरी की कोठों में चले गये जो शिया थे और शहर के रईसों में से थे, फिर उस कोठी से दूसरे मकानों में चले गये। खास हमारा घर लखनऊ चला गया।

इससे कम दर्जे की एक बाढ़ सम्भवतः सन् १६२१ में आई जब मैं छः सात साल का था, उस समय पिताजी तकिया पर थे, हम लोग पास के गांव मैदानपुर चले गये।

मुझे अपने प्रारम्भिक बचपन जो पिता जी के देहान्त से पहले तकिया पर गुजारा कुछ ज्यादा बातें याद नहीं, ख्वाब की तरह अपनी खेलाई अन्ना की सूरत याद है जिनका नाम चपरासिन था और रायबरेली की रहने वाली थीं, उनकी हड्डियां फूलों में रहे। उस जमाने में मुझे आंख उठने और खुजली की बहुत शिकायत होती थी, आंख में चाकसू और सफेदा डालने की तकलीफ अभी तक याद है। अपनी खाला साहिबा, जो कुरआन शरीफ की हाफिज थीं, मुहब्बत से शाम को रोटी और कबाब खिलाना जो एक बूढ़ी औरत बेचने लाती थी याद है। अपना मकान चूंकि बन रहा था, उस जमाने में हमारा कयाम ज्यादातर अपने छोटे मामू मोल्वी हाफिज सैयद उबैदउल्ला साहब के घर में होता था। हमारे छोटे मामू का व्यक्तित्व उस समय सर्वाधिक प्रिय और आकर्षक था, मेरे बौद्धिक और नैतिक विकास में उनका भी बड़ा हिस्सा है। अपनी किताब पुराने चिराग भाग दो की कुछ पंक्तियां नकल करता हूं।

"मामू मोलवी हाफिज सैयद उबैद उल्लाह साहब का व्यक्तित्व बहुआयामी एवम आकर्षक था, और इस्लामी जिन्दगी का एक चलता फिरता नमूना था। कुरआन मजीद के हाफिज थे। बहुत साफ, सही और दिलकश अन्दाज में पढ़ते थे। हिफज जौनपुर में मौलाना अबुलखैर मक्की के खानदान में रहकर पूरा किया था। अरबी लखनऊ में पढ़ी थी, अरबी व्याकरण के मर्मज्ञ (माहिर) थे। अध्ययन का शौक उम्र भर रहा। अरबी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं की योग्यता थी लेख बहुत सुन्दर था मालूम होता था कि मोती पिरोये हैं। मामलात के निहायत साफ। ईमानदारी में खानदान में मशहूर। इस कारण उनके पास काफी अमानतें रहती थीं। काहिली और सुस्ती की जैसे हवा भी नहीं लगी थी। एक बड़ी जायदाद के मालिक और जिले के बड़े जमींदारी में गिने जाने के बावजूद बड़े जफाकश (अध्यवसायी) और वक्त के पाबन्द थे। चाल से संयम और संकल्प प्रकट होता था। घंटों खड़े होकर काम की निगरानी करते, वही मस्जिद के पंजवक्ता इमाम थे और वही अपनी जमीन व जायदाद के निगरां और मुंतजिमकार मस्जिद में कोई देखता तो मालूम होता कि इनको दुनिया और जायदाद से कोई सरोकार नहीं, और खेती बाड़ी की निगरानी करता हुआ देखता तो समझता कि शायद नमाजों की पाबन्दी भी मुश्किल से होती होगी। लेकिन क्या मजाल कि इनमें से किसी एक चीज में फर्क आये। आचरण की सभ्यता उन पर खत्म थी। छोटे सम्बन्धी या दोस्तों के लड़के जो उनकी औलाद के बराबर थे, आ जाते तो पैर समेट लेते और बैठ जाते, नौकरों और मजदूरों को भी सख्त सुस्त न कहते। उन की जबान में डाट डपट का अन्तिम शब्द "नामाकूल" था। बिल्कुल बेआजार (गऊ) इन्सान थे। और दिल दुखाना और दुख पहुंचाना उनके स्वभाव में नहीं था। उनकी मौत पर मैं ने हिन्दू मुसलमानों और काश्तकारी में मदद करने वालों को समान रूप से दुखी पाया। ३१ मई सन् १६३८ को मृत्यु हुई।"

खानदान के उस समय सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति मोलवी सैयद खलीलुद्दीन साहब थे जिनको सब लोग अब्बा जी कहते थे। उनके कारण खानदान की बड़ी प्रतिष्ठा थी। शहर रायबरेली में तकिया के नाम से "खलील मियां का तकिया" कहलाता था।

उन दिनों खानदान की बच्चियों और बीवियों में कुरआन मजीद के हिफज (कंठस्थ करना) का खास शौक था। मैंने अपने बचपन में जिनको देखा है उनमें पांच महिलायें हाफिज थीं। मेरी बड़ी खाला साहिबा, वालिदा, ममानी, एक फूफी और एक खालाजाद बहन। इनमें से हर एक ने अपने किसी मेहरम से, सगे भाई या किसी ऐसे सम्बन्धी से जिन से पर्दा नहीं था, कुर्आन हिफ्ज़ किया था। सैयद खलीलुद्दीन साहब इसकी सुव्यवस्था करते कि यह सब घर के अन्दर तरावीह (रोजा के महीने में इशा के समय पढ़ी जाने बाली नमाज) में कुरान मजीद सुनाएं इस का सिलसिला मेरे शऊर के बहुत बाद तक जारी रहा, मैं कभी दरवाजा में

(शेष पृष्ठ १० पर)

चोदहवीं किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबू ज़फर नदवी

गुजरात के बादशाह

फिरोज शाह तुगलक के बेटे मुहम्मद शाह तुगलक ने १३६० ई० (७३६ हि०) में सारन गुजराती के बेटे जफर खां को गुजरात का हाकिम बना कर भेजा। उस ने यहां पहुंच कर अशांति दूर की और कुछ वर्षों में पूरे गुजरात पर अपनी सरकार मजबूत कर ली। १४०३ ई० (८०६ हि०) में उसके लड़के मुहम्मद शाह का साहस इतना बढ़ गया कि खुद दिल्ली फतह करने के लिए रवाना हुआ पर संयोग से रास्ते में मर गया फिर भी उसका इतना नतीजा निकला कि १४०७ ई० (८१० हि०) में जफर खां ने दिल्ली से नाता तोड़ स्वाधीनता का एलान कर दिया और अपना लकब (पदवी) मुज्जफर शाह रखा। मुजफफर खां बूढ़ा हो चुका था और बेटे के मरने से निढाल होकर वह विभिन्न बीमारियों का शिकार हो गया। यद्यपि उसके और भी लड़के थे मगर उसने मुहम्मद शाह के लड़के अहमद शाह को राज्य के लिये सब से योग्य समझ कर तख्त का वारिस बना दिया। इसके कुछ ही महीनों के बाद मुजफफर शाह मर गया।

अहमद शाह अपने दादा के मरने पर १४१० ई० (८१३ हि०) में गुजरात का बादशाह हुआ। उसने राज्य के प्रशासन में आसानी के विचार से साबरमती के किनारे अहमदाबाद शहर बसा कर उस को अपनी राजधानी बनाया जो आज तक गुजरात का मशहूर और प्रसिद्ध शहर है। इसमें उसने एक किला बनवाया और शान्दार मस्जिद बनाई जो आज तक मौजूद है। अहमद शाह ने ३२ वर्ष हुकूमत की। यह बड़ा दयावान और न्याय प्रिय बादशाह था। उसके इंसाफ की कहानियों गुजरात में बहुत मशहूर हैं। वह नमाज का पाबन्द था और शराब से बहुत परहेज करता था। सम्भवतः महमूद गजनवी के बाद यह पहला बादशाह था जिसने फौज में हिन्दुआं की भरती की और उन पर भरोसा कर के बड़े बड़े पद दिये। गुजरात में उसने सबसे पहले तोप का प्रयोग किया। समुद्री बेड़ा भी उसका मजबूत था। १४४२ ई० (८४६ हि०) में उस का देहान्त हो गया।

इसके बाद उस का लड़का मुहम्मदशाह बादशाह हुआ। यह बड़ा दानी था। इसी लिऐ उस को "जरबख्श" (धन देने वाला) कहते हैं। उसने अहमद शाह के मजार पर जो जामा मस्जिद के पीछे है, एक बड़ा गुंबद बनवाया। इसी प्रकार शैख अहमद खट्टू का मकबरा बड़ी कारीगरी से तैयार कराया। १४५० ई० (८५४ हि०) में चानपानीर की घेराबन्दी किये हुए था कि बीमार होकर अहमदाबाद वापस आया और कुछ दिनों के बाद मर गया।

मुहम्मद शाह का बड़ा लड़का कुतुबुद्दीन अपने बाप के बाद बादशाह हुआ। मालवा का बादशाह महमूद खिलजी चानपानीर के राजा के निवेदन पर गुजरात फतह करने के लिए बड़ोदा पहुंचा। दोनों में घमासान की लड़ाई हुई। कुतुबुद्दीन विजयी होकर अहमदाबाद आया। अहमदाबाद में कांकरिया तालाब के अन्दर एक बाग नगीना बाड़ी के नाम से बनवाया। और उसके साथ ही एक महल भी तैयार कराया। १४५८ ई० (८६२ हि०) में बीमार होकर मर गया। अब उसका छोटा भाई फतह खां महमूद शाह बागड़ा के नाम से गुजरात का बादशाह हुआ। उसने पचास वर्ष से अधिक हुकूमत की। उसके जमाने में अहमदाबाद की आबादी बहुत बढ़ गई और शहर पनाह तैयार हुई। वह पेड़ लगवाने का बड़ा शौकीन था पटन से बड़ोदा तक आम और खिरनी के पेड़ सड़क के दोनों किनारे लगवाये। उसने जूनागढ़ और चानपानीर के दो मजबूत किले फतह किये। उसके पास जबरदस्त समुद्री बेड़ा था। उसके दरबार में जौनपुर दिल्ली, बंगाल, कशमीर, ईरान और रूम, मिस्र और यूरोप के राजदूत अपने अपने उपहार लेकर आते जाते रहते। उसका भोजन आम आदमियों से बहुत अधिक था। इस तरह वह बड़ा शक्तिशाली भी था। वह अपने भाले से मस्त हाथी भगा देता और विद्वानों और सूफियों का बड़ा सम्मान करता था। वह १५११ ई० (९१७ हि०) में इस संसार से चल बसा।

मुजफ्फर द्वितीय उसका वारिस हुआ। गुजरात के बादशाहों में यही बादशाह है जो कुर्आन का हाफिज था। वह बड़ा सहनशील था। इसीलिए

उसको मुजफ्फरहलीम (मुजफ्फर सहनशील) कहते हैं। मालवा के बादशाह महमूद शाह खिलजी अपने हिन्दू मंत्री मैदानी राय के मुकाबले में सुल्तान मुजफ्फर से सहायता प्राप्त करने के लिये गुजरात आया। सुल्तान एक बड़ी फौज के साथ मालवा पहुंचा। मैदानी राय मंत्री को निकाल कर महमूद खिलजी को दोबारा तख्त पर बैठाया। मालवा की इस लड़ाई में मुजफ्फर हलीम ने भी तोप को इस्तेमाल किया। १५२५ ई० (६३२ हि०) में इस बादशाह का देहान्त हो गया।

मुजफ्फर के बाद उसका लड़का सिकन्दर बादशाह हुआ लेकिन कुछ ही दिनों के बाद वह मारा गया। इमादुल मुल्क वजीर ने मुजफ्फर के छोटे बच्चे को महमूद शाह द्वितीय के नाम से बादशाह बनाया लेकिन दूसरे सरदार इस पर राजी न हुए और बहादुरशाह गुजराती को, जो नाराज होकर दिल्ली चला गया था, वापस बुला कर बादशाह बनाया। १५३४ ई० (६४१ हि०) तक दूसरे मुल्क फतह करता रहा चुनानचि मालवा, चित्तौड़ और देवबन्द पर कब्जा किया। अहमद नगर, दकिन और बागड़ को अधीन बनाया। इसका तोप खाना इतना उच्चतम था कि हिन्दुस्तान में किसी के पास न था। रूमी खां तोपखाने का अफसर था इसी तरह उस का समुद्री बेड़ा भी मुकम्मल था। मलिक तूग़ान समुद्री सेना अध्यक्ष था।

१५३४ ई० (६४१ हि०) जब हिमयूं बादशाह के अफसर रूमी खां की दगाबाजी से बहादुर शाह से पराजित हुआ परन्तु उत्तरी भारत में शेरशाह सूरी की बगावत ने हुमायूं को वापसी पर मजबूर कर दिया। बहादुरशाह ने पलट कर सारे गुजरात पर कब्जा कर लिया। लेकिन इसके बाद बदअमनी से लाभ उठा कर पुर्तगालियों ने देवबन्द ले लिया। बहादुरशाह इस का फैसला सुलह से करने के लिए खुद देवबन्द पहुंचा। पुर्तगालियों ने उससे लड़ाई शुरू कर दी। संयोग से उस का पैर फिसला और समुद्र में गिर कर डूब गया। सुल्तान बहादुर का कोई लड़का न था। इसी लिए उसने महमूदशाह फारूकी अपने भांजे को उत्तराधिकारी बनाया था। गुजरात के सरदारों ने उसी को अपना बादशाह स्वीकार कर लिया। लेकिन जब सत्तर दिन के बाद उस का देहान्त हो गया तो बहादुरशाह का भतीजा महमूद द्वितीय तख्त का वारिस हुआ। प्रारम्भ में सरदारों ने उको नजरबन्द रखा और खुद आपस में लड़ने भिड़ने लगे। आखिर सबको निकाल कर महमूद ने सल्तनत की बागडोर अपने हाथ में ली। सूरत का किला उसी जमाने में बनाया गया। वह बड़ा फकीर दोस्त था, मुसाफिरों, विद्वानों, और संतों को अपने हाथ से खाना खिलाता। १५५३ ई० (६६१ हि०) में बुरहान नामी पानी पिलाने वाले ने जहर दे दिया। उसी के जमाने में सुल्तान रूम की तरफ से समुद्री बेड़ा आया और गुजरात के बेड़े के साथ मिलकर पुर्तगालियों से लड़ाई लड़ी। इसके बाद अहमदशाह द्वितीय गुजरात का बादशाह बनाया गया परन्तु वह एतमाद खां वजीर की निगरानी से तंग आ गया वजीर को भी इसकी सूचना मिल गई। उस ने उसे मरवा डाला। १५६० ई० (६८६ हि०) के बाद मुजफ्फर शाह द्वितीय बादशाह हुआ। दरबार के सरदारों में घोर असहमति थी। लोगों में वजीर को निलम्बित करना चाहा। एतमाद खां वजीर ने यह देख कर १५७२ ई० (६८० हि०) में अकबर बादशाह को बुलाकर गुजरात हवाले कर दिया और इस प्रकार महान राज्य का अन्त हो गया।

गुजरात के बादशाहों का कामः

गुजरात में एक ही खानदान की हुकूमत पौने दो सौ वर्ष रही। इस बीच गुजरात ने हर प्रकार की उन्नति की। उनकी राजधानी अहमदाबाद और चानपानीर रहा। उन बादशाहों ने बहुत से गांव और शहर आबाद किये। सुल्तानपुर, अहमदनगर, महमूदाबाद, मुजफ्फराबाद, अहमदाबाद आदि उसी जमाने में आबाद हुए। अहमदाबाद में पत्थर के अनगिनत भवन बनाए गये। मुख्यतः कुछ मस्जिद इस कारीगरी से बनाई गईं कि उसके एक मीनार के हिलाने से दूसरे भी हिलने लगते। दुन्या की आशचर्यपूर्ण चीज समझकर अभी तक लोग उन को देखने आते हैं। अनगिनत मकबरे, मदरसे, स्नानगृह (हम्माम) और सरायें बनीं। टूटी हुई दीवारें कहीं–कहीं अब भी नजर आती हैं। विद्वानों का सम्मान होता था।

महमूद प्रथम के काल में काजी और मुहतसिब (न्यायाधिकारी और निरीक्षक) प्रत्यक्षक रूप से बादशाह का दोष बयान करते थे और मुजफ्फर हलीम मुद्दई के साथ न्यायालय में खड़ा रहता था। मौलाना रूकनुद्दीन शकरगंज, अहमद खटवी, कुतुब आलम, शाह आलम, शमा बुरहानी जैसे सन्त सूफी उसी जमाने में थे। अल्लामा मुहम्मद बिन ताहिर पटनी, शाह वजीहुद्दीन गुजराती और इमामुद्दीन उस जमाने के उच्च आलिमों में से थे। बहुत सी पुस्तकें हर विषय और कौशल पर लिखी

गईं। खेती के लिए बड़ी संख्या में तालाब खुदवाए गये जिन में से अक्सर अब तक मौजूद हैं। आम और खिरनी के लाखों पेड़ लगवाए गये। पेड़ों की बहुतात से अहमदाबाद शहर बाग ही बाग नजर आता था। आमतौर से बादशाह भी दानी होते थे और उनके दान से खासतौर से सूखा काल में बड़ा लाभ पहुंचता था।

अधिक तर बादशाहों को न्याय का बड़ा ख्याल रहता। आवश्यकता के समय बादशाह खुद भी जांच करता। दूसरे देशों से राज दूत भी आते रहते। कशमीर, इरान, खुरासान और उसमानी तुर्की से कई बार राजदूत आए। यह बात खासतौर पर याद रखने की है कि इस खानदान की हुकूमत में शाही महल की औरतों ने कभी राजनीतिक मामलों में दखल नहीं दिया। आसिफ खां, अफजल खां, इमादुल मुल्क, मलिक शाबान, खाविन्द खां जैसे योग्य मंत्री इसी जमाने में थे। सैनिक निपुणता यहां की खास खास कौमों में स्वाभाविक थी। इसी कारण यहां की फौजी शक्ति पड़ोसी राज्यों से हमेशा अधिक रही। हिन्दुओं को फौजी, और राज्यकीय उच्चपद भी मिलते रहते थे। चुनानचि अहमदशाह के जमाने में वित्तमंत्री हिन्दू था और मुहम्मद शाह के जमाने में वित्तमंत्री (वजीरेमाल) एक बनिया था।

दकिन के बाद तोप का प्रयोग भी सब से पहले गुजरात ही में हुआ। फौजी भरती का नियम अनुवंशिक (मौरूसी) था। प्रारम्भ में वेतन नकद मिलता था लेकिन अहमदशाह से लेकर बहादुरशाह के प्रारम्भिक काल तक आधा वेतन नकद और आधे की जमीन जागीर में मिलती थी। मुजफ्फर द्वितीय के शासन काल में खेती को इतनी उन्नति हो गई थी कि पशुओं का चरना कठिन हो गया था। मजबूरन हर गांव में चराई के लिये चरागाहें अलग बनानी पड़ीं। समुद्री व्यापार को इतनी उन्नति हुई कि ८४ बन्दरगाह गुजरात के अधीन थे जहां व्यापारियों के जहाज माल से भरे हुए खड़े रहते थे। बहादुरशाह के जमाने में यहां समुद्री बेड़ा मजबूत था। ऐसा बेड़ा हिन्दुस्तान में किसी के पास न था। (जारी)

अनुवाद : हबीबुल्लाह आजमी

(पृष्ठ ३३ का शेष)

प्रतिशत महिलायें हैं जो नौकरी पेशा हैं। हां यह जरूर है कि नौकरी करने वाली महिलाओं में से अच्छी खासी संख्या उनकी भी है जो घर से बाहर कदम निकाल कर बहुत प्रसन्न हैं। समीक्षा के अनुसार १९७० के मुकाबले में २००७ तक वह महिलाएं जो नौकरी पेशा हैं उनका स्वास्थ अच्छा होता है। निःसन्देह तसवीर का एक ही रूख नहीं होता। और सभी नौकरी पेशा औरतों को हम एक ही श्रेणी में नहीं रख सकते लेकिन वास्तविकता यही है कि भारत में नौकरी पेशा औरतें घर और नौकरी के बीच सेंडविच की तरह पिस गई हैं और यह आवश्यक हो गया है कि उनके घर के लोग भी उनके साथ सहयोग करें ताकि रूचिकर (खुशगवार) माहौल बच्चों को मिल सके औरत भी दफतर से आकर सुख का अनुभव करे।

अनुवाद : हबीबुल्लाह आजमी
(राष्ट्रीय सहारा उर्दू)

(पृष्ठ ३४ का शेष)

से आकर देखें। कांफ्रेंस को खिताब करने वालों में सिख गुरू द्वारा प्रबंध कमेटी के सदर रविन्दर सिंह राना, एमनेस्टी इंटरनेशनल के मुकुल शर्मा, दलित लीडर डाक्टर प्रेमपति, जोधपुर, यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर कुमार राजीव, डाक्टर जे.के. जैन वगैरह के अलावा अब्दुर्रहीम कुरैशी, रहीमउद्दीन अंसारी, डाक्टर एस. फारूक, मौलाना अब्दुल वहाब खिल्जी और प्रोफेसर मंजूर अहमद के नाम काबिले जिक्र है। प्रोग्राम की निजामत जफरयाब जिलानी ने की।

इस मौके पर मिल्ली कौंसिल के सभी मरकजी जिम्मेदार और सूबाई सदर मौजूद थे। इसके अलावा जमाते इस्लामी के जनरल सेक्रेटरी नुसरत अली, दावत अखबार के एडीटर परवाज रहमानी, अफकार मिल्ली के एडीटर डाक्टर कासिम रसूल इलियास वगैरह भी मौजूद थे। मुख्तलिफ रियासतों से आए समाजी कारकुनों ने भी इस मौके पर अपने तास्सुरात पेश किए और पुलिस व इंटेलीजेन्स एजेंसियों के जरिये मुसलमानों और दूसरे कमजोर तबकों के इस्तेहसाल की रूदादें सुनाई। मिल्ली कौंसिल ने इस मौके पर एक खुसूसी दस्तावेज भी जारी की है जिसमें दहशतगर्दी के इल्जाम में बेकुसूर लोगों के साथ होने वाली ज्यादतियों की तफसीलात दी गई हैं। कांफ्रेंस के आखिर में पन्द्रह नुकाती मेमोरण्डम पास करके हुकूमत से मांग की गई है कि पुलिस और इंटलीजेंस की ज्यादतियों को रोका जाए और मुल्क से खौफ की सियासत का खात्मा किया जाए।

●●●

(पांचवी किस्त)

अध्यापक बन्धुओं के लिये

हम कैसे पढ़ायें ?

विषयों का चयन

डॉ० सलामतुल्लाह

३. लिखना : पढ़ने की तरह लिखना भी एक साधन की हैसियत रखता है। किसी जमाने में कातिबों की तरह खुशखत लिखना (सुलेख) अर्थात खुशनवीसी (सुलेख) मदरसे की तालीम का एक खास मकसद करार दिया जाता था और इस के अभ्यास पर बहुत समय और मेहनत खर्च की जाती थी। लेकिन अब ऐसा नहीं है। फिर भी इतना जरूर होना चाहिए कि लिखने में सफाई, तेजी और सहूलत पैदा हो जाये और अक्षरों में समानता और हमवारी हो। और शब्दों के बीच मुनासिब फासिलः रखने का ढंग आ जाये।

लिखने का अमल बैठने का ढँग : हाथ के पट्ठों, उंगलियोंऔर बाजू के निचले हिस्से की हरकत पर निर्भर है। बैठने के तरीकः पर ध्यान न देने से बहुत बड़ा जिस्मानी नुकसान हो सकता है। खराब आसन से रीढ़ की हड्डी तिरछी और आंख की रोशनी कमजोर हो जाती है। लिखाई के समय बच्चों में सीधा बैठने की आदत डालनी चाहिए और लिखने की तख्ती या कागज को आंख से तकरीबन एक फीट के फासिले पर रखना चाहिए।

लिखना पढ़ने के साथ साथ सिखाया जा सकता है। शुरू में रेत पर उंगली से या तख्ते पर खरिया से लिखाना चाहिए क्योंकि तख्ती या कागज पर लिखने में बहुत ही नाजुक पुट्ठों का इस्तेमाल होता है जिन पर शुरू में बच्चों को काबू नहीं होता। वह स्वाभाविक रूप से इस समय इस किस्म के बारीक काम का बोझ नहीं ढो सकता, जब बड़े पुट्ठों के इस्तेमाल से लिखने में कुछ महारत हो जाये तो उस्ताद तख्ती या कागज पर अक्षरों से नकश (चिन्ह) बना कर दे, जिन में बच्चे कलम या ब्रुश से रंग भर कर उंगलियों और हाथ के नाजुक पुट्ठों को काम में लायें, इसके बाद तख्ती मोटे कलम से लिखने चाहिए और सब से आखिर में कागज पर कलम या पेंसिल से लिखने की इजाजत देनी चाहिए।

४. इंशा (गद्य–लेखन, इबारत लिखना)

इंशा के काम के बारे में एक आम गलत फहमी है कि यह उस समय तक शुरू नहीं की जा सकती जब तक लिखने की काफी मश्क न हो जाये। हालांकि हकीकत में इंशा का काम पहले दिन से शुरू किया जा सकता है बशर्ते कि इस के मकसद को साफ तौर पर समझ लिया जाये। इबारत लिखना सिखाने का व्यवहारिक उद्देश्य यह है कि बच्चे जबान और कलम के जरिये सही साफ और सीधी जबान (भाषा) में वह बातें जाहिर कर सकें जिन्हें वह जानते और महसूस करते हैं। जाहिर है कि साहित्यिक लेखन की कला भी अन्य ललित कलाओं की तरह प्राथमिक स्तर पर कुछ अधिक नहीं सिखाया जा सकता क्योंकि किसी उम्दा शैली को अपना पाना एक कठिन कार्य है जिस के लिये गहन अध्ययन गहरा चिन्तन और लमबे अभ्यास की जरूरत है। प्रारम्भिक स्कूल की सात साल की मुद्दत (जो अब आठ साल है) में यह असम्भव है। यहां हमें अपना कार्य क्षेत्र बहुत सीमित करना पड़ेगा।

विचारों को सफाई के साथ पेश करने का अभ्यास मोखिक कार्य से शुरू करना चाहिए। किसी ऐसे विषय पर जिसे बच्चे अच्छी तरह जानते हों उन्हें अपने विचार जाहिर करने का मौका दिया जायै। टीचर बच्चों को उन के विचारों का तरतीब देने में मदद करे। मौखिक इंशा के अभ्यास के लिये ड्रामे, संवाद, वाद विवाद, और कहानियों बहुत लाभप्रद सिद्ध होंगी। डरामे और डाई लाग, आवाज की ट्रेनिंग और वर्णन शैली के विकास के लिये बहुत अच्छे अवसर प्रदान करते हैं। यह कथन बहुत सही है कि "वर्णन शैली विचारों का परिधान (लिबास) है इस लिये उसे मौके के लिहाज से तब्दील करना चाहिए।" जिस तरह हम मामूली बात चीत में अनेक विचारों और भावनाओं को जाहिर करने के लिये अलग–अलग अन्दाज इख्तियार करते हैं उसी तरह क्लास के संवाद विचारों और भावनाओं को जाहिर करने की मश्क करानी चाहिए, छोटी–छोटी कहानियों को जिन्हें बच्चे जानते हैं और पसन्द करते हैं।, ड्रामे के रूप में तबदीली करके उन्हें बच्चों से अदा कराना चाहिए। लेकिन तकरीर और अमल में बेसाख्तःपन पैदा करने के लिये बच्चों को असल कहानी

के संवादों (मकाल्मों) में जरूरी तब्दीलियां करने की इजाजत होनी चाहिए।

अगर विषय बच्चों की जिन्दगी से मुतअल्लिक हो तो वाद विवाद में बच्चे बहुत दिलचस्पी लेते हैं। इस सिलसिले में वाद–विवाद के सही तरीके बताना भी जरूरी है।

जबानी इंशा के साथ–साथ तहरीरी इंशा का काम भी होना चाहिए लेकिन यह उस समय तक शुरू नहीं किया जा सकता जब तक लिखाई के मेकानिकी पहलू पर बच्चों को महारत न हो जाये। अर्थात जब तक कि बच्चों को सहूलत के साथ लिखना न आ जाये मौखिक लेखन की तरह लिखित शैली में भी विषय बच्चों की मालूमात के अन्दर होना चाहिए। निबन्ध लेखन के लिये ऐसे विषय देना चाहिए जो बच्चों के अनुभव और कल्पनाओं से परे हों, उचित नहीं। इसका नतीजा यह होता है कि बच्चे महज लफ्फाजी से टीचर और स्वयं को धोखा देने की कोशिश करते हैं और इसका नतीजा यह होता है कि उनके जबान का मंसब यह नहीं रहता कि वह अपने विचार जाहिर करने का एक साधन है फिर वह भाषा से गोया पर्दे का काम लेते हैं जिस के द्वारा वह अपने विचारों की कमी को छिपाने की कोशिश करते हैं। विचारों को साफ तौर पर पेश करने में टीचर बच्चों की इस तरह मदद कर सकता है कि किसी विषय पर निबन्ध लिखने से पहले इससे सम्बन्धित कक्ष में वाद–विवाद करके आवश्यक बिन्दु साफ कर दिये जायें।

इंशा (लेखन) के काम के दौरान भाषा की माटी मोटी खूबियां बच्चों के मन में बैठा देना जरूरी है। बच्चों को उन शब्दों में अन्तर करना सिखाया जाये जो ऊपर से हम मानी (पर्यायवाची) मालूम होते हैं।

बच्चों को यह भी सिखाया जाये कि किसी वाक्य को अधिक से अधिक प्रभावी बनाने के लिये उस किस तरह तरतीब देते हैं अर्थात क्रमबद्ध करते हैं। किसी पैराग्राफ में जोर पैदा करने के लिये वाक्यों को किस प्रकार क्रमबद्ध करते हैं और पूरे निबन्ध को सशक्त बनाने के लिये उसके विभिन्न भागों में क्रमबद्धता (रब्त) किस प्रकार पैदा करते हैं।

प्राथमिक विद्यालय के अन्तिम दो वर्ष में कुछ नमूने के निबन्ध जो किसी विशेष शैली को स्पष्ट करते हों प्रस्तुत कर के अच्छी शैली की विशेषताओं से वाकिफ कराना चाहिए और रूपक और उपमा (इस्तेआरः और तशबीह) की स्पष्ट कल्पना समझा देना चाहिए कि इन से किस तरह वर्णन में सुन्दरता और सफाई पैदा हो जाती है। (जारी)

(प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी)

(पृष्ठ २५ का शेष)

यह वास्तविकता नजरों के सामने रखनी चाहिए कि औरतों की आजादी का आन्दोलन वास्तव में परायों का अति अपमानजनक षडयंत्र है इस तरह घर, परिवार और अंततः पूरे समाज को नष्ट कर देना चाहता है। औरतों के अधिकार स्वतंत्रता और उन्नति आदि के घिसे–पिटे नारे इस आन्दोलन के वास्तविक निश्चयों को छिपाने के लिए मात्र एक परदा है। मुसलमान देशों में औरतों की आजादी के आन्दोलन के वही विनाशकारी नतीजे निकलेंगे, जो दूसरे देशों में हो चुके हैं। इन देशों में अवैध यौन सम्बन्ध महामारी का रूप अपना चुके हैं। इन्सानों की नैतिक पस्ती की यह दशा है कि जंगल के वह्शी जानवर तक शरमा जाएं। घर और परिवार, बल्कि पूरे समाज का ढांचा तबाह हो चुका है। अल्पायु अपराधियों, अपराध, हिंसा से परिपूर्ण वातावरण, बेचैन और अराजकता का दौर–दौरा है। अतीत की गोद में सो जाने वाली संस्कृतियों का इतिहास गवाही देता है कि जब भी किसी समाज में बुराई और दुराचार का तूफान उमड़ा है, उसका नाम व निशान तक बाकी नहीं रहा।

आतंकवाद

साधारण जनसमूह स्थानों पर बम विस्फोट करके लोगों के प्राण लेना उन को घायल करना, उन को भयभीत करना कहीं आक्सी डेन्ट हो जाने पर बसों, कारों, ट्रकों पर पथराव करना, विरोध प्रदर्शन में सीरियस रोगियों को डाक्टर तक पहुंचाने तथा परीक्षार्थियों को परीक्षा स्थान तक पहुंचाने में रूकावट डालना, रिजर्वेशन वालों की सीटों, बर्थों पर कबजा कर लेना आदि आतंकवाद है ऐसा आतंकवाद इस्लाम में दण्डनीय पाप है।

मुसलमान औरत की आज़ादी और इस्लाम

मरयम जमीला

आज तमाम मुस्लिम देशों में परदे के खिलाफ प्रचार–अभियान पूरे जोर के साथ चलाया जा रहा है। शायद ही कोई देश इस अभियान से बचा हो। हर जगह जोरदार अंदाज में कहा जा रहा है कि परदा प्रतिक्रियावादी है, सुधार और प्रगति की राह का रोड़ा है और अगर इस्लामी समुदाय आर्थिक और सामाजिक प्रगति चाहता है, तो औरत की आजादी अनिवार्य और जरूरी है।

तेहरान यूनीवर्सिटी के पूर्व कुल पति डॉ० मुहम्मद मुकद्दस का निम्न वक्तव्य उल्लेखनीय है –

"कोई देश उस समय तक वर्तमान समय के रंग में रंगा नहीं जा सकता, जब तक कि उसकी औरतों को आजादी नहीं मिलती। पूरब में, जहां आधुनिकता की लहर देर से पहुंची है, लोग अभी तक घिसे पिटे और परंपरागत विचारों की जंजीरें काटने में झिझक रहे हैं। जब तक हम दुनिया के कंधे से कंधा मिला कर नहीं चलते 'जिन्दा कौम' की हैसियत से अपना अस्तित्व बाकी नहीं रख सकते। एशिया और अफ्रीका के प्रगतिवादी देशों में औरतों का चरित्र बिल्कुल स्पष्ट है। उन्हें देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन में जरूर शरीक होना चाहिए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि 'आधुनिकता' से जुड़ी हुई बुराईयों की जो कल्पना कुछ लोगों के जेहन में पायी जाती है, उसके मुकाबले में ये बुराइयां वास्तव में बहुत कम हैं।"

अगस्त १९६७ ई० में पाकिस्तान कौंसिल फॉर राष्ट्रीय एकता ने लाहौर में पाकिस्तान के बीस वर्षीय जीवन, "औरतों की आजादी" के विषय पर एक सिम्पोजियम का आयोजन किया था, वह भी इस दृष्टिकोण का स्पष्ट उदाहरण था।

अगर हम मुसलमान होने के दावेदार हैं और इस्लाम को अपने देश का सैद्धान्ति आधार बनाने का आग्रह करते हैं, तो क्या यह मालूम करना हमारा कर्तव्य नहीं कि इस्लाम इस मामले में हमें क्या शिक्षा देता है? जहां तक औरतों के समता–सिद्धान्त का संबंध है, कुरआन मजीद का इरशाद है कि मर्द औरतों के निगरां व संरक्षक हैं, इस कारण कि अल्लाह ने पहले को बाद पर प्रमुखता दी है और वे औरतों पर अपना माल व दौलत खर्च करते हैं

"मर्द औरतों पर कव्वाम हैं, इस कारण कि अल्लाह ने उनमें कुछ को कुछ पर प्रमुखता दी है और इस कारण भी कि उन्होंने अपने माल खर्च किये।' अन–निसा : ३४

इसका अर्थ यह है कि कोई मुसलमान औरत रोजी कमाने की पाबन्द नहीं है, अलावा इसके कि वह विधवा हो या तलाकशुदा हो और न तो उसकी कोई जायदाद हो और न ऐसा मर्द रिश्तेदार हो, जो उसकी जरूरतें पूरी कर सके। कुरआन करीम यह शिक्षा देता है कि पति अपनी पत्नी का स्वामी भी है और दुख–दर्द में काम आने वाला जीवन साथी भी। उसका कर्तव्य है कि वह अपनी पत्नी के साथ न्याय–इन्साफ, मुहब्बत और विनम्रता से पेश आये।

दूसरी ओर औरत का कर्तव्य यह है कि वह अपने पति की वफादार और कहा मानने वाली हो और उसके भरोसे की हो। कुरआन मजीद पति को पत्नी पर किसी हद तक प्रमुखता अवश्य देता है, लेकिन इस प्रमुखता का अर्थ यह नहीं है कि वह जालिम व जाबिर बन जाए, बल्कि उसका उद्देश्य परिवार की रक्षा और उसे फसाद और बिगाड़ का शिकार होने से बचाना है। जिन परिवारों में पत्नी आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती है, उनमें पति अपने घराने की सरदारी से अपने आप महरूम हो जाता है और जब घर में मां का व्यक्तित्व छा जाए, तो बच्चों के मन में बाप का आदर–सम्मान बाकी नहीं रह सकता।

सूरह नूर में मुसलमान मर्दों को नामहरम औरतों और मुसलमान औरतों को नामहरम मर्दों पर नजर डालने से मना किया गया है और मर्द–औरत दोनों को समान हुक्म दिया गया है कि वे अपनी निगाहें नीची रखा करें। औरतों को चाहिए कि वे दोपट्टा ओढ़ें और उसके पल्लों अपने सीने पर डाल लें। अपनी शोभा और साज–सज्जा को अपने पतियों और महरम मर्दों के सिवा किसी और पर जाहिर न होने दें–

'ऐ नबी ! मोमिन मर्दों से कह

दो कि अपनी नजरें बचा कर रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करें। यह उनके लिए अधिक पाकीजा तरीका है। जो कुछ वे करते हैं, अल्लाह उसे जानता हे।

और ऐ नबी! मोमिन औरतों से कह दो कि अपनी नजरें बचा कर रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करें और अपना बनाव–सिंगार न दिखाएं अलावा उसके, जो खुद जाहिर हो जाए और अपने सीनों पर अपनी ओढ़नियों के आंचल डाले रहें। वे अपना बनाव–सिंगार न जाहिर करें, मगर इन लोगों के सामने–पति, बाप, पतियों के बाप, अपने बेटे, पतियों के बेटे, भाई, भाइयों के बेटे, बहनों के बेटे, अपने मेल–जोल की औरतें, अपने लौंडी–गुलाम, वे घर के मर्द जो किसी और प्रकार का स्वार्थ न रखते हों और वे बच्चे जो औरतों की छिपी बातों को अभी न जानते हों। वे अपने पांव जमीन पर मारती हुई न चला करें कि जो अपनी जीनत उन्होंने छिपा रखी हो, उसका लोगों को ज्ञान हो जाए।'

अन–नूर : ३०–३१

सूरह अह्जाब में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की पाक बीवियों और इशारे के तौर पर मुसलमान औरतों को हिदायत कोगई है कि वे अपने घरों में ठहरी रहें और अज्ञानता–काल की तरह अपना बनाव–सिंगार न दिखाती फिरें–

(नबी की बीवियो !) ... अपने घरों में टिक कर रहो और पिछली अज्ञानता युग जैसी सज–धज न दिखाती फिरो।'

–अल–अहजाब : ३३

और कहता है कि मुसलमान औरतें गली–कूचों में इस ढंग से न चलें कि लोगों की निगाहें उन पर केन्द्रित हो जाएं–

'वे अपने पांव जमीन पर मारती हुई न चला करें कि अपनी जो जीनत उन्होंने छिपा रखी हो, उसका लोगों को ज्ञान हो जाए।' –अन–नूर : ३१

वे निस्संकोच भाव से बातें केवल महरम रिश्तेदारों, पतियों और जर–खरीद गुलामों से कर सकती हैं। इसी तरह से ईमान वालों को पवित्र बीवियों को यथा पद आदर–सम्मान करने का हुक्म दिया गया है और कहा गया है कि उनसे कोई बात कहनी हो तो परदे के पीछे से कहें –

'नबी की बीवियों से अगर तुम्हें कुछ मांगना हो, तो परदे के पीछे से मांगा करो।' अल–अहजाब : ५३

साथ ही जब मुसलमान औरतें किसी काम से बाहर निकलें, तो एक बड़ी–सी चादर से अपना शरीर ढांक लें और घूंघट निकाल लें –

'ऐ नबी ! अपनी बीवियों और बेटियों और ईमान वालों की औरतों से कह दो कि अपने ऊपर अपनी चादरों के पल्लू लटका दिया करें।'

–अल–अहजाब : ५६

कुरआन करीम रसूल (सल्ल०) की पावन बीवियों को और इशारे में तमाम मुसलमान औरतों को हुक्म देता है कि जब नामहरम मर्दों से बात की जरूरत आ पड़े तो नर्मी और लोच से बात न करें कि दिल का खोट गलत आशाएं न बांध ले, बल्कि दो टूक, साफ और जंची–तुली बात करें।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मुसलमान औरतों को हिदायत की है कि वे अपने पतियों या महरम मर्दों के सिवा किसी और मर्द से तंहाई में न मिलें, न अपने परिवार से अलग तनहा रहें, न करीबी रिश्तेदारों के बिना लंबी यात्रा पर जाएं। सही हदीसें औरतों को मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज पढ़ने से रोकती हैं और कहती हैं कि अल्लाह के नजदीक सबसे मकबूल नमाज वह है जो औरत अपने घर की तंहाई में अदा करती हैं। यह है इस्लाम की कार्य–नीति अल्लाह की इबादत से मुताल्लिक, फिर वह कैसे सहन कर सकता है कि औरतें सिक्रेट, बैंकों की क्लर्क, एयर होस्टेसेज, रेस्तारानों में सेविका माडेल, संगीतकार या फिल्म टेलीविजन और रेडियो पर एक्ट्रेसेज बनें।

सूरह नूर की आरंभिक २४ आयतों में उन लोगों को लोक परलोक में कड़ी सजा देने का एलान किया गया है, जो अवैध यौन सम्बन्ध कायम करते और मुसलसल समाज में बेहयाई को बढ़ावा देते हैं। इस्लाम "दो पैमानों" का कायल नहीं है। कुरआन व हदीस अवैध यौन सम्बन्धों के आदी मर्दों और औरतों के बीच कोई अन्तर नहीं करते। वे दोनों को समान रूप से सजा के हकदार घोषित करते हैं : कुरआन मजीद और सुन्नते रसूल (सल्ल०) की इस गवाही से बढ़कर भी कोई और अकाट गवाही इस बात की हो सकती है कि इस्लाम परदे का हामी है?

मुसलमान औरतों की गतिविधयों को सीमित करने वाले इस्लामी आदेशों में वास्तव में स्वयं औरतों का हित सुरक्षित है। उनका एक मात्र उद्देश्य अपनी सुरक्षा और मर्दों को अनुचित लाभ उठाने से रोकना है। इस सिलसिले में इस्लामिक दुनिया के तमाम धर्मों में

अनुपम व अपूर्व है। वह न केवल दुराचरा की जड़े काटता है, बल्कि ईमान वालों को उन सामाजिक गतिविधियों में फंसने से भी रोकता है, जो इन्सान को दुराचरण की राह पर ले जाते हैं।

औरतों की आजादी के आन्दोलन के पहले आवाहक कम्युनिज्म के संस्थापक कार्ल मार्क्स और ऐजिल्ज थे। उन्होंने अपने कम्युनिस्ट घोषणा पत्र (१८४८ ई०) में एलान किया कि विवाह, घर और परिवार एक लानत के सिवा कुछ नहीं। इनकी वजह से औरत हमेशा की दासता में गिरफ्तार हो गयी है। उन्होंने औरतों को घरेलू दासता से 'मुक्ति' दिलाने पर बल दिया और कहा कि उन्हें औद्योगिक कारखानों में पूर्णकालिक नौकरियों के जरिये सम्पूर्ण आर्थिक स्वतंत्रता दिलानी चाहिए। इनके बाद औरतों की आजादी के दूसरे समर्थकों ने जोर दिया कि मर्दों की तरह औरतों को भी अवैध यौन संबंध स्थापित करने की आजादी होनी चाहिए।

इस उद्देश्य के लिये सह शिक्षा (Co-education) चालू की जाए, घर से बाहर मर्दों के कंधे से कंधा मिलाकर औरतों को नौकरी दी जाए। मिश्रित विहारात्मक तथा सामाजिक उत्सव, जिनमें शराब पीने पिलाने की, नशाबाजी की और नाच–गाने की महफिलें भी शामिल हैं, आयोजित की जाएं। गर्भ निरोधक दवाइयों, यंत्रों, गर्भपात, नसबन्दी और आपरेशन के जरिये बांझपन की प्रक्रियाओं को प्रचलित किया जाए ताकि औरतें अनचाहे गर्भ से सुरक्षित रह सकें। बच्चों के जिनमें बहुत से नाजायज होंगे, पालन–पोषण के लिए राज्य की निगरानी में नर्सरियां और सरकारी रिहायशी स्कूल खोले जाएं–यह है औरत के अधिकार की इस वर्तमान कल्पना का सार।

प्रमुख अमेरिकी इतिहासकार और प्रसिद्ध स्तंभकार मेक्सलर्ज लिखता है –

हम एक ऐसे समाज में रहते हैं, जिसमें बदकारी महामारी का रूप धारण कर चुकी है। सबसे ज्यादा जोर हवस और वासनाओं की स्वतंत्रता पर दिया जाता है, तमाम पुराने विधान टूट कर रह गये हैं। करीबी जमाने तक चर्च, सरकार परिवार और कौम निर्णायक हैसियत रखते थे। किस चीज को खुलेआम जाहिर किया जा सकता है और किसको नहीं? इसकी हिदायत इन्हीं संस्थाओं का काम था, लेकिन अब ये संस्थाएं समाज के बहुमत के आगे दब चुकी हैं।

इटालवी डायरेक्टर मश्लांगेलो अन्तोन्योनी तो (Blow-up) में पूर्ण नग्नता के दृश्यों को प्रस्तुत करके चरित्र और कानून की सारी सीमाओं को तोड़ देता है। फिल्म (Barbarella) पूर्णतः प्रलोभन देती है। फ्रांसीसी हीरोइन जेन फोन्डज, अंग प्रदर्शन करती एक नग्न दृश्य से दूसरे नग्न दृश्य की ओर बढ़ती है। फिल्म (Portraite of Fason) इस निर्लज्जता और नग्नता के स्वतंत्रता प्रदर्शन का अनेकानेक योग है, जो आज लगभग हर अमेरिकी फिल्म का प्रमुख चिन्ह बन चुका है – ईसाई धर्म–विद्वान फादर वाल्टर जे० ओंग कहता है, हम स्वतंत्रता की जिस स्थिति में रहने चले हैं उसका अतीत में हमने कभी विचार भी न किया था।

और मुस्लिम देशों के मुसलमानों पर इस पतन के क्या प्रभाव हुए हैं? औरतों की आजादी और नैतिक बिगाड़ का एक अति शक्तिशाली स्रोत सिनेमा है।

अपनी भौतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए कुछ युवतियां हर 'त्याग' के लिये तैयार हैं। उनकी एक विशेष बड़ी संख्या अपने आपको फिल्म प्रोड्यूसरों और डायरेक्टरों की हवस व वासना के हवाले करके बिना कुछ पाये समाप्त हो जाती है। फिल्म के खेल में आमतौर से यही औरतें आसानी से शिकार होती हैं। इनमें से अधिक संख्या आंशिक पार्ट अदा करने से आगे बढ़ने नहीं पातीं। फिल्मों में एक्सट्रा गर्ल्ज की एक बड़ी संख्या इसी जरिये से आती है। केवल कुछ लड़कियां इस मैदान में ऊंचा स्थान प्राप्त कर सकी है – शहर के अधिकांश होटल रसास्वादन का केन्द्र बन चुके हैं। कुछ होटलों के सेवक लड़कियां जुटाने का कारोबार करते हैं। बहुत से रेस्टरां सुपुर्दगी के स्थान हैं। ये औरतें शहर के बस स्टॉपों पर मिल सकती हैं। शहर के सिनेमा घर भी प्रसिद्ध शिकारगाहें हैं। सिनेमा घरों के बॉक्स तमाशा देखने ही के लिये नहीं, प्रायः इस उद्देश्य के लिये भी इस्तेमाल किये जाते हैं। इन गतिविधियों पर पुलिस की निगरानी खासी ढीली है।

क्या क्रिस्टन कीलर और मार्लिन मुनरो जैसी औरतों की सेना तैयार करना भी हमारे राष्ट्रीय विकास कार्यक्रम का कोई भाग है?

• औरत बीवी और मां की हैसियत में जो रोल अदा करती है, मीडिया, रेडियो और सिनेमा के जरिये होने वाला औरतों की आजादी का प्रोपगैंडा उसे अति तुच्छ समझता है। जो औरतें घर

के काम काज और बच्चों के पालन–पोषण में अपना समय लगाती हैं यह प्रचार उसे कौम की आधी मानव शक्ति को अक्षम आर्थिक विनाश घोषित करता है। मुसलमान देशों में सरकारी सरपरस्ती में तेजी से फैलती हुई सह–शिक्षा, जिसके नतीजे में मर्द और औरत के मेल–जोल के घातक प्रभाव पड रहे हैं, बहुत से सामाजिक बिगाडों की जिम्मेदार है।

सह–शिक्षा का आधार इस भ्रम पर है कि मर्द और औरत के बीच स्वभावतः कोई भेद और अन्तर नहीं है और दोनों को घर से बाहर समान प्रकार के कामों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि वे आजीविका साधन प्राप्त करने के योग्य हो सकें। नतीजा यह है कि सह–शिक्षा वाले स्कूलों में शिक्षा पाने वाली लड़कियां दाम्पत्य जीवन और मातृत्व की जिम्मेदारियां संभालने का प्रशिक्षण बहुत कम पाती हैं। फिर भी यह प्रचार बड़े जोर व शोर से यह भी कहता है कि स्वतंत्रत औरत की बुनियादी जिम्मेदारी अपने घर की देख–भाल है, मानो दूसरे शब्दों में पश्चिमी औरत को दोहरा बोझ उठाना होगा। घर से बाहर आजीविका प्राप्त करने के साथ–साथ उसे अपने पति और बच्चों के कर्तव्य भी देखने होंगे और अपना घर भी बिल्कुल साफ–सुथरा रखना होगा। क्या इसे न्याय कह सकते हैं?

पश्चिमी कानूनों की पैरवी में जो नये पारिवारिक नियम अधिसंख्य मुसलमान देशों में लागू किये जा चुके हैं, क्या उनसे वास्तव में हमारी औरतों की दशा सुधर गयी है? इस किस्म के कानून, शादी की कम से कम उम्र निश्चित करते समय तो बड़े चिन्तन–मनन से काम लेते हैं, परन्तु वे निश्चित अवधि से कम उम्र के नवजवान लड़कों और लडकियों के दरमियान अवैध यौन सम्बन्ध बनाये रखने पर पाबन्दी लगाना बिल्कुल भूल जाते हैं। अधिसंख्य मुस्लिम देशों में कुरआन व सुन्नत की रूह के बिल्कुल खिलाफ बहुपत्नित्व विवाह को सीमित और अधिक सीमित किया जा रहा है, बल्कि हमारे 'नये' लोग इसे पूर्ण रूप से वर्जित घोषित करने चले हैं, लेकिन वे इस प्रश्न का सामना करने का कष्ट सहन नही करते कि क्या किसी औरत के लिए यह बेहतर है कि कोई दूसरी औरत उसकी सौत बनकर उसके पति के प्रेम में शरीक हो, फिर भी वह खुद भी अपने घर में पूरी सुरक्षा के साथ जीवन बिताये और उसके बच्चों को भी अपने बाप का प्यार हासिल रहे, या यह बेहतर है कि उसका पति उस औरत से चोरी–छिपे अवैध सम्बन्ध स्थापित करने पर इसलि विवश हो जाए कि देश का कानून उसे अपने पति के वैध पत्नी बनने से रोकता है, अलावा इसके कि वह अपनी पहली पत्नी को तलाक दे दे और बच्चों सहित घर से बाहर निकाल दे।

एक औरत जिसका अपने पति के साथ निबाह मुश्किल हो गया हो, क्या उसके लिये यह बेहतर नहीं है कि पति उसे अपने तौर पर तलाक दे दे और वे दोनों अम्न व सुकून के साथ एक–दूसरे से अलग और दूसरा विवाह करने के लिए आजाद हो जाएं? या क्या यह बेहतर है कि वे अदालत से रूजूअ करें और पति–पत्नी से मुक्ति प्राप्त करने के लिए उस पर बदकारी का आरोप लगाए या उसे खब्ती और पागल करार दे ताकि तीसरे फरीक (अदालत) को यकीन हो जाए कि तलाक अनिवार्य हो चुकी है। इसका नतीजा इसके अलावा और क्या होगा कि खुलेआम तोहमत लगायी जाएगी और बेचारी औरत का सतीत्व और आचरण सदा के लिए कलंकित और जीवन नष्ट हो जाएगा।

सच तो यह है कि औरत की आजादी के आवाहकों को औरत की निजी प्रसन्नता और हित से कोई दिलचस्पी नहीं है। एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में एक महिला वक्ता मिसेज सतनाम महमूद ने जो स्वयं 'अपवा' की जोशीली हामी हैं, बड़ी सफाई के साथ स्वीकार किया कि यद्यपि पश्चिमी महिलाएं भौतिक समृद्धि, पूर्ण सामाजिक स्वतंत्रता और समता चाहती हैं, लेकिन इसके बावजूद वे प्रसन्नता से वंचित हैं। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि अगर हमारा उद्देश्य मानसिक शान्ति की प्राप्ति है, तो कथित 'स्वतंत्रता' की झोली इस मकसद से खाली है और इस राह पर चलकर हम अभीष्ट मोती प्राप्त नहीं कर सकते।

बेगम कैसरा अनवर अली ने जो एक मशहूर सामाजिक कार्यकर्ता हैं, इस बात पर घोर निराशा व्यक्त की कि उच्च शिक्षा प्राप्त औरतें अपनी धार्मिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और राष्ट्रीय भाषा से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं, हालांकि वह इस वास्तविकता को खुलेतौर पर नजरअंदाज कर गयीं कि इस अशुभ विकास में उनके अपने संगठन की गतिविधियां काम कर रही हैं।

(शेष पृष्ठ २१ पर)

जाति पात इस्लामी दृष्टि में

नजमुस्साकिब अब्बासी, गाजीपुरी

आज विश्व के लगभग हर क्षेत्र में बहस का मुद्दा है जाति प्रथा। आइये सबसे पहले हम जाति प्रथा पर दृष्टि डालते हैं। भारत में जाति विशेष को नौकरी व शिक्षा में आरक्षण दिया जा रहा है तो कहीं उसके नाम पर निर्वाचन सीट आरक्षित है किन्तु इस्लाम ही एक मात्र धर्म है जिसकी दृष्टि में न कोई जात–पात, रंगभेद है और न ऊंच नीच है। समस्त मानव में समानता है अर्थात सभी आपस में बराबरी का दर्जा रखते हैं किन्तु हां कोई तकवा और परहेजगारी की बुनियाद पर आम आदमियों पर बरीयता रख सकता है। यहूदी स्वयं को समस्त मानव से उच्च मानते हैं और अपने को उच्च सिद्ध करने के लिये संस्कृत व सभ्यता के साथ–साथ अपनी धार्मिक पुस्तक में भी हेरफेर कर दिया है। भारत में हिन्दू धर्म में "मनुशास्त्र" के अनुसार चार वर्ग है जिसमें सबसे उच्च ब्राह्मण, फिर क्षत्रिय और तीसरे पर वैश्य और अन्त में शूद्र हैं जिनके ऊपर ब्राह्मणों व क्षत्रियों द्वारा किये गये अत्याचार का वर्णन किया जाए तो हृदय कांप उठे किन्तु इस्लाम धर्म किसी के साथ भेदभाव नहीं करता हां मानव में अगर अन्तर हो सकता है तो इस बुनियाद पर कि वह व्यक्ति अल्लाह से डरने वाला और उसके प्रति पूर्ण रूप से आस्थावान हो। उसके उलटे वह व्यक्ति है जो दुष्ट हो और इस्लाम विरोधी गतिविधियों में लिप्त हो चाहे वह किसी समाज, देश नस्ल और रंग से सम्बन्धित हो। अल्लाह ने फरमाया ऐ लोगो! हमने तुमको एक पुरूष और एक स्त्री से पैदा किया और तुमको विभिन्न परिवार और कौम बनाया ताकि एक दूसरे को पहचान सको, अल्लाह के यहां तुम में सबसे अच्छा वह व्यक्ति है जो परहेजगार हो, अल्लाह खूब जानने वाला और खबरदार है। (सूर–ए–हुजरात)

एक हदीस में हजरत इब्ने उमर रजि० हजरत मुहम्मद (सल्ल०) से रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने मक्का विजय के दिन सम्बोधित करते हुए कहा कि ऐ लोगो! अल्लाह ने तुमको अज्ञानता के दोष और अपने पूर्वजों पर गर्व करने से रोक दिया है। अब मनुष्य की दो ही किस्में हो सकती हैं एक जो अल्लाह से डरने वाला व पापों से बचने वाला हो और दूसरा वह व्यक्ति जो अल्लाह की दृष्टि में पापी और बेइज्जत हो और सभी आदम अ० की औलाद है और आदम अ० को अल्लाह ने मिट्टी से बनाया है।"

इस प्रकार की अनेक हदीसें वारिद हैं जिन में अल्लाह के दूत हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ताकीद करते हुए कहते हैं ऐ लोगो ! सुन लो ! निःसन्देह तुम्हारा ईश्वर एक है और तुम्हारे पिता एक हैं, सुनलो! न किसी अरबी को अजमी (गैर अरबी) पर और न किसी अजमी को अरबी पर वरीयता है हां तकवा व परहेजगारी के कारण किसी को सपरिवार वरीयता दी गयी है।

आज का विकसित समाज भी जाति प्रथा के गंभीर रोग से पीड़ित है और इस से बचना असम्भव सा प्रतीत हो रहा है। यहां तक कि मुसलमानों में भी यह बुराई आम हो चुकी है उसका उदाहरण छिटपुट ही सही शादी–ब्याह आदि में देखा जा सकता है।

हजरत अब्दुर्रहमान बिनऔफ जो इस्लामी जगत के सबसे धनी व्यक्ति थे। जब उनका व्यापारिक काफिला शाम (सीरिया) से प्रस्थान करता तो अगर एक ऊंट मक्का में प्रवेश कर रहा है तो अनेक सामान लादे ऊंट अभी शाम की सीमा भी पार नहीं कर पाये होते थे। उनके बारे में सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि वह कितने धनी व्यक्ति थे किन्तु उनकी बहन का विवाह हजरत बिलाल हब्शी रजि० जैसे गुलाम से हुआ था। हजरत बिलाल रजि० भले ही गुलाम रहे होंगे परन्तु तकवा और परहेजगारी में बहुत ऊंचा मकाम रखते थे। इस प्रकार के बहुत से वाकिआत विश्व के लिये आदर्श हैं कि शादी–ब्याह में इस्लाम के अन्दर कोई जात पात नहीं है। इतिहास साक्षी है कि सहाबा रजि० और बुजुर्गानेदीन शादी ब्याह आदि में केवल दीनदारी और परहेजगारी को वरीयता देते थे। उनकी दृष्टि में रंग, नस्ल, जाति, धन, परिवार आदि की कोई हैसियत नहीं थी।

जिस प्रकार इस्लाम ने जात पात में सुधार किया उसी तरह नारी पर किये जाने वाले अत्याचारों को दूर कर के उस को एक स्थान दिया कहा जाता है कि आज से लगभग तीन दशक पहले यूरोप में एक सम्मेलन

हुआ जिसका विषय था "स्त्री की स्थिति" इस सम्मेलन में विभिन्न देशों के सदस्यों में नारी की वर्तमान स्थिति पर विचार विमर्श हुआ कि उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए। नारी जाति का विकास कहां तक हुआ। उनका मकाम क्या है। विभिन्न रायों के बीच एक देश के प्रतिनिधि के अनुसार नारी तो मानवता के दायरे में शामिल ही नहीं है। मनुष्य तो केवल पुरुष है नारी तो कोई और ही प्रजाति है जो पुरुष के दया और उपकारों पर जीवित है। अतः सभी देशों के प्रतिनिधि इस पर एकमत हुये कि नारी तो पुरुष के हाथों की खिलौना मात्र है।

सदियों पहले यहूदियों को सामाजिक वर्चस्व प्राप्त था। उस समय नारी नारकीय जीवन जी रही थी। यूनानियों के यहां कानून था कि जब पुरुष किसी स्त्री से विवाह कर लेता तो स्त्री की हैसियत दासी से भी कमतर होती थी। तनिक भी अवहेलना और लापरवाही पर पति को अधिकार था कि पत्नी की गर्दन उड़ा दे। अगर उस से कोई पाप सिद्ध हो जाता तो घोड़े की टांग में रस्सी बांध कर रस्सी का एक सिरा उसकी गर्दन में बांध दिया जाता और मर्द घोड़े पर सवार होकर उसे दौड़ाता था। उस से सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि उस समय अबला नारी की क्या हालत होती रही होगी। पन्द्रहवीं सदी से पहले अरब देशों में पिता को अधिकार था कि वह अपनी बेटी को जीवित जमीन में दफन कर दे मानो उस समय के कानून ने उन्हें पूरा अधिकार दे रखा था कि अगर कोई अपनी बेटी का गला घोंट दे या जिन्दा दरगोर कर दे। उसके इस कृत्य पर न कोई पंचायत दण्ड दे सकती है और न कोई समाज उसे रोक सकता है।

हजरत मुहम्मद (सल्ल०) जब नबी बनाये गये तो विश्व का नक्शा ही बदल डाला । इस्लाम ने स्त्री को वह स्थान दिया जो किसी धर्म, सभ्यता और देश ने न दिया है और न दे सकता है। वही नारी जिसके शरीर को घोड़े के द्वारा रस्सी में बांध कर घसीटा जाता था उसी को इस्लाम ने इतना उच्च स्थान दिया कि उसके कदमों के नीचे स्वर्ग रख दिया। मनुष्य के शरीर में निम्न स्तर चरण का है परन्तु इस्लाम में मां के चरणों की नीचे स्वर्ग रख विश्व को उसकी असल हैसियत बता दी। हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि औलाद के लिये मां के कदमों तले जन्नत है जो जितनी मां की आज्ञा का पालन करेगा स्वर्ग को निकट पायेगा और अवहेलना करेगा तो स्वर्ग और अल्लाह की रहमत से दूर हो जायेगा।

इस्लाम ने स्त्री को पुरुष के समक्ष अधिकार दिये हैं। उदाहरणतः पत्नी अगर खाना पकाने, बच्चे का पालन–पोषण, कपड़े सिलने आदि से इन्कार कर दे तो पति उसको कदापि विवश नहीं कर सकता। पत्नी अगर घरेलू कार्य करती है तो अपनी खुशी से करती है। इस्लाम ही अकेला धर्म है जिसने नारी को उच्च सम्मान दिया जिसे समस्त विश्व ने ठोकरों के नीचे रखा था।

हदीस में औलाद के लिये फजीलत बयान की गई है कि लड़के तुम्हारे हक में नेमत हैं उस पर अल्लाह को धन्यवाद दो। लड़कियों के बारे में कहा गया है कि वह बाप की हसनात में दाखिल हैं, नेकियां हैं अतः वह पिता को पुण्य के माध्यम से स्वर्ग में पहुंचाने का कार्य करेंगी, इसलिये लड़कियों पर शफकत की ताकीद की गई है। बेटी का इस्लाम में क्या स्थान है इस पर सहज समझा जा सकता है कि अगर बेटे दस भी हो जाऐं तो शुक्र करना अनिवार्य है और अगर बेटी हुई तो शुक्र करो कि उन की तर्बीयत पर नेकियां हैं और जन्नत की खुशखबरी है।

इस्लाम धर्म की विशेषता है कि वह दबे कुचले को उभारता है और निर्बल व दुर्बल की भरपूर सहायता करता है। अतः सबसे अधिक कमजोर जाति नारी की थी जिस पर इस्लाम ने अत्यधिक उपकार किया कि जब वह बेटी के स्वरूप में है तो उसको माता–पिता के पुण्यों में सम्मिलित किया जा रहा है। जब वह विवाहित हो गई तो पति से कहा जा रहा है कि तू सम्मानित व्यक्ति तभी बन सकता है जब पत्नी के साथ अच्छाई का व्यवहार करेगा और जब वह मां बन गई तो औलाद से कहा जा रहा है कि तेरी मां के कदमों के नीचे जन्नत है अर्थात उनको खुश रखेगा तो स्वर्ग को अत्यधिक निकट पाएगा।

नारी न तो खिलौना है और न शोपीस, बल्कि किसी की मां, किसी की बहन, किसी की पत्नी और किसी की बेटी है। केवल इन चार रिश्तों का जिसने हक अदा कर दिया वही सम्मानित व्यक्ति कहलाने का अधिकार रखता है।

लेखकगण ध्यान दें अपने लेख में पवित्र कुर्आन की आयतों और हदीसों के अनुवाद के संदर्भ अवश्य लिखें, इसी प्रकार ऐतिहासिक घटनाओं के संदर्भ भी लिखें।

एक मिसाली मुस्लिम समाज का क़ियाम

मौलाना मुहम्मद असरारूल हक कासिमी

इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुसलमान जिस तरह शैक्षणिक, आर्थिक, वैचारिक और धार्मिक स्तर पर पिछड़े हुए हैं, उसी तरह सामाजिक स्तर पर भी पिछड़ेपन के शिकार हैं। बल्कि सामाजिक स्तर पर तो यह पतन लगातार जारी है जिसके कारण आये दिन समस्याओं में बढ़ोतरी होती जा रही है। समाज की बढ़ती हुई समस्याओं ने आम मुसलमानों की जिन्दगियों को अपंग बनाकर रख दिया है जिसे देखकर गैर मुस्लिम कौमें मुसलमानों के ताल्लुक से नकारात्मक विचार रखती हैं। स्वयं मुसलमानों में भी बहुत से गंभीर, बुद्धिमान एवं विवेकशील लोग मुस्लिम समाज की मौजूदा परिस्थितियों पर कुढ़ते नजर आते हैं।

मुस्लिम समाज की समस्याओं पर तनिक विचार कीजिए। खुशी और गम के मौके पर ऐसी–ऐसी रस्मों को रिवाज दिया जाता है जिससे असंतुलित परिस्थितियां पैदा होती चली जाती हैं। जमाने के साथ आधुनिक बनने की इस होड़ ने न केवल गैर–मुस्लिम कौमों पर जादू कर दिया है बल्कि इसने मुसलमानों को भी अपना गिरवीदा बना रखा है।

इसी का नतीजा है कि जिस निकाह को इस्लाम ने अत्यधिक सादा और आसान बनाया था, वह खुद इन्सानों के अपने करतूतों के कारण अत्यधिक पेचीदा और मुश्किल हो गया। यदि गैर–इस्लामी रस्मों को बजा लाया जाता है तो इस्लाम पर चोट पहुंचती है। यदि नये तकाजों और नये तरीकों को अपनाया जाता है तो निकाह के मौके पर इतनी भारी रकम खर्च होती है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिये इसका जमा करना आसान काम नहीं। लड़की वालों को और ज्यादा खर्च करना पड़ता है। दहेज के नाम पर जो लेन–देन चलता है वह पूरी तरह इस्लामी मुआशरे के खिलाफ है।

मुस्लिम मुहल्लों और बस्तियों के बारे में आमतौर से यह शिकायत सुनने को मिलती है कि मुसलमान गंदे रहते हैं। न वे खुद साफ–सुथरे रहते है और न अपनी बस्तियों को साफ रखते हैं। इस शिकायत में किसी हद तक सदाकत भी पायी जाती है। जब मुस्लिम बस्तियों से गुजर होता है तो वहां बेतर्तीबी और गंदगी खूब देखने को मिलती है। यदि यह गंदगी और बेतर्तीबी और दूसरे समाजों में पायी जाए तो कोई आश्चर्य की बात नहीं लेकिन मुस्लिम समाज में पायी जाए तो अत्यधिक आश्चर्य और दुख की बात है।

इस्लाम पाकीजगी और सफाई पर पूरा जोर देता है और एक ऐसी व्यापक जीवन व्यवस्था पेश करता है जिसके बाद एक मुसलमान सबसे ज्यादा साफ और पाक हो जाता है। हर समय पाक रहना इस्लाम के नजदीक जरूरी है और पेशाब आदि के बाद भी पानी से धोना अनिवार्य है। अन्यथा सख्त अजाब की खबर सुनाई गई हैं। क्या ही अच्छा हो कि इस बात को मन में बिठा लिया जाए कि अल्लाह तआला की ज़ात पाक है और वे पाकी व सफाई को पसन्द फरमाता है।

मुस्लिम समाज के ताल्लुक से एक और शिकायत आम तौर से सुनी जाती है कि मुसलमान बच्चों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण पर जोर नहीं देते और उनके बच्चे यूं ही घूम फिर कर समय बर्बाद कर देते हैं। परिणामस्वरूप ये बच्चे आगे चलकर अशिक्षित रह जाते हैं और उनमें सही समझ–बूझ नहीं आ पाती।

इस सिलसिले में कहा जा सकता है कि धीरे–धीरे मुसलमानों में शिक्षा के ताल्लुक से जागृति आ रही है और वे ज्ञान की रोशनी के महत्व को समझने लगे हैं। मगर आज भी ऐसी मुसलमानों की संख्या कम नहीं है जिनके बच्चे शिक्षा में कोई रूचि नहीं रखते।

इस्लाम शिक्षा के बारे में अपने मानने वालों को स्पष्ट रूप में बताता है। कुरआन मजीद की वे आयतें जो सबसे पहले नाजिल हुईं उनमें शिक्षा प्राप्ति की ओर प्रेरित किया गया है। इसके अलावा विभिन्न आयतों में शिक्षा के महत्व और उनके लाभ को उजागर किया गया है।

आपसी मतभेद और झगड़े भी मुस्लिम समाज की परिस्थितियों को और अधिक बिगाड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। लोगों के बीच यह मतभेद कहीं मसलक के नाम पर है, कहीं जात और बिरादरी के नाम पर

हैं, तो कहीं इमारत और गुर्बत के नाम पर है। इस्लाम ने मतभेद और आपसी विवाद के रोग से सुरक्षित रखने के लिए मुहब्बत और भाईचारे की तालीम दी है।

अल्लाह तआला ने फरमाया : "तमाम मुसलमान आपस में भाई हैं।" (कुरआन, ४९:१०) इसके अलावा अनैतिकता, झूठ और वादाखिलाफी ने अलग समाज को तबाह कर रखा है। अपराध और घिनावने आमाल से भी मौजूदा मुस्लिम समाज पाक नहीं है। सवाल यह है कि मुसलमानों के समाज में ऐसी बातें क्यों पायी जा रही हैं जो गलत हैं और दूसरे समाजों में भी पायी जाती हैं? उदाहरणस्वरूप बलात्कार और अश्लीलता जो पश्चिमी समाज में खूब लोकप्रिय हैं, धीरे-धीरे हमारे समाज में भी दाखिल हो रही है। इसी तरह बहुत से अपराध और गुनाह जो दूसरे समाज में किये जाते हैं वह हमारे समाज में किये जा रहे हैं। यदि शादी और खुशी के अवसर पर बड़ी-बड़ी रकमें खर्च करने का रिवाज अन्य कौमों के अन्दर पाया जाता है वही हमारे समाज में भी पाया जा रहा है। मानो ऐसा महसूस होता है कि हमारे समाज के लोग मुस्लिम समाज और दूसरी कौमों के समाज के बीच अन्तर महसूस नहीं कर पा रहे हैं। जब तक यह अन्तर महसूस नहीं किया जाएगा उस समय तक वास्तविक इस्लामी समाज की तशकील का सपना पूरा नहीं होगा।

दूसरे समाज और मुस्लिम समाज के बीच अन्तर यह है कि दूसरा समाज भौतिकवाद पर आधारित है जबकि इस्लामी समाज आध्यात्मिक समाज है। एक ऐसा समाज जिसमें आध्यात्मिक एवं मानवीय मांगों को पूरा करने का पूरा ध्यान दिया जाता है। आध्यात्म का सम्बन्ध धर्म से है। इसलिए मजहब धार्मिक समाज के लिये जो लक्ष्य निर्धारित करता है, उन्हीं पर चलना सालेह समाज को तशकील देना है। मुहब्बत और भाईचारगी का ताल्लुक मानवीय व नैतिक मांगों से हैं इस लिए इस्लाम में इन रिश्तों की मजबूती पर ध्यान दिया जाता है।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फरमाया : "मुसलमानों की मिसाल आपसी मुहब्बत और गमख्वारी के लिहाज से एक शरीर की सी है, अगर एक अंग को तकलीफ होती है तो सारा शरीर बेख्वाबी और बुखार का शिकार हो जाता है।"

(बुखारी, मुस्लिम)

इस हदीस से मालूम होता है कि मुसलमानों को एक-दूसरे के काम आना चाहिए, उनके दुख-दर्द में शामिल होना चाहिए और उनकी जरूरतों का पूरा ख्याल रखना चाहिए।

यदि पूरे समाज में इस बात पर अमल किया जाए तो मुसलमानों के बीच न कोई मतभेद होगा। न कोई झगड़ा, न कोई अपनी मालदारी पर इतराएगा और न कोई जात और बिरादरी पर फख्र करेगा, न कोई किसी के साथ धोखा करेगा और न वादा खिलाफी। इस तरह सब लोग सुकून से रहेंगे। किसी को किसी की ओर से जुल्म व ज्यादती का खौफ न होगा और न किसी की तरफ से नाइंसाफी की आशंका महसूस होगी और न कोई किसी के माल पर गासिबाना कब्जा करेगा।

अल्लाह तआला फरमाता है :

"आपस में एक-दूसरे के माल बातिल तरीकों से न खाओ।" (कुरआन, ४:२९)

नैतिकता, शिक्षा, सभ्यता, सफाई और मामलों की दृष्टि से मिसाली समाज का निर्माण इसलिए अनिवार्य है क्योंकि मुसलमानों की छवि और मुस्लिम कौमों की नजर में काफी धुंधली हो चुकी है और इस्लाम और मुसलमानों के ताल्लुक से गैर-मुस्लिम कौमों के बीच कई तरह की बदगुमानियां पैदा हो गयी हैं। यही कारण है कि वे मुसलमानों को अजीब निगाहों से देखने लगी हैं।

अगर मिसाली समाज बन जाए तो यकीनन अपने और पराये, मुसलमानों से करीब होने में हिचकिचाहट महसूस नहीं करेंगे।

दूसरे यह कि मौजूदा समय में स्वयं हमारा समाज जिन परेशानियों और समस्याओं का सामना कर रहा है, उससे भी निजात मिल जाएगी।

समाज सुधार के सिलसिले में मिल्लत का प्रत्येक व्यक्ति भरसक प्रयत्न करे। विशेषकर आलिमों, इमामों, बुद्धिजीवियों, महिलाओं और नवजवानों को चाहिएं कि वे आगे बढ़ें, सकारात्मक भूमिका निभाएं तो बहुत जल्द मिसाली समाज बनाया जा सकता है।

लेखकगण ध्यान दें

कृपया पन्ने के एक ओर खुला तथा स्पष्ट लिखें और ज्ञात रहे कि हर २० तारीख के आस पास अगले से अगले मास का मैटर कम्पोजिंग के लिये चला जाता है —सम्पादक

आपके प्रश्नों के उत्तर?

इदारा

प्रश्न : क्या अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़ैब जानते थे? क्या हर ईमान वाले के लिये यह अनिवार्य है कि वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के विषय में यह अ़क़ीदा रखे कि वह ग़ैब जानते थे?

उत्तर : कुछ मसाइल उम्मत में ऐसे छिड़ गये हैं कि आज उम्मत टोलियों में बंट गयी और ऐसी बंटी कि लगता है कि क़ियामत तक उनमें मेल न हो सकेगा। हम दुआ करते हैं कि दोनों फ़रीक़ इख़्लास पर क़ाइम रहें और दोनों अल्लाह के दरबार में बख़्शे जाएं इस विषय में जो कुछ भी लिखा जाएगा एक फ़रीक़ उसे पसन्द करेगा तो दूसरा ना पसन्द फिर भी बीच की राह इख़्तियार करने की कोशिश की जाएगी।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दीन के विषय में जो कुछ फ़रमाते थे वह अपनी ओर से नहीं बताते थे अल्लाह की ओर से बताते थे "वमा यन्तिक़ु अ़निल हवा, इन हुव इल्ला वह्युंय्यूहा" (५३:३४) (दीन की बातों में वह अपनी ओर से कुछ कहते ही नहीं उन्होंने जो कुछ कहा वह तो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से भेजी हुई वह्य थी), इस तरह आप ने २३ वर्षों तक दीन के विषय में जो भी बताया वह सब ग़ैब ही की बात थी। पूरा क़ुर्आने मजीद और सारी अहादीसे शरीफ़ा, दोनों मिला कर कितना बड़ा जख़ीरा (भंडार) है यह सब क्या है? सब का सब ग़ैब से ज्ञात हुआ है। इतनी बात में सब मुत्तफ़िक़ (सहमत) हैं, झगड़ा इस के आगे है, एक फरीक कहता है कि ग़ैब जानते थे तब तो बताया, साथ ही उस फ़रीक़ का यह भी कहना है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को जो कुछ हुआ है और जो होने वाला है सब बता दिया है, अब कोई चीज आप से छुपी नहीं रह गई है।

दूसरे फ़रीक़ का कहना है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वल्लम ने जो कुछ बताया वह सब ग़ैब ही था, आप ग़ैब की बातें बताने वाले तो हैं मगर ग़ैब जानने वाले नहीं हैं, अल्लाह तआ़ला जब और जितनी ज़रूरत हुई आप को ग़ैब की बात से मुत्तलअ़ (सूचित) कर दिया कभी वह इल्म (ज्ञान) आप ही तक रहा जैसे क़ुर्आने मजीद के हुरूफ़े मुक़त्तआत का अर्थ आदि, कभी हुक्म हुआ तो उम्मत को बताया, उम्मत को जो बताने का हुक्म हुआ आप ने उस में कंजूसी नहीं की। हुक्म हुआ बता दें कि जिस ने कहा "ला इलाह इल्लल्लाहु" जन्नत में दाख़िल हुआ। (जिस ने कहा, अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, वह जन्नत में दाख़िल हो गया अर्थात वह जन्नत में जाएगा।) तो आप ने यह बात अपने सहाबा को बता दी कंजूसी नहीं की, इसी तरह कोई बात भी जो अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को बताने के लिये फ़रमाई उस के बताने में कंजूसी नहीं की। यह बात भी साफ़ साफ़ सुना दी कि मुझे हुक्म हुआ है कि "कह दो कि ज़मीन और आसमानों में जो भी है अल्लाह के सिवा कोई भी ग़ैब नहीं जानता। (२७:६५) यह भी बताने में कंजूसी नहीं की कि "अगर मैं ग़ैब जानता तो बहुत सा खैर (लाभवाली वस्तुएं) इकट्ठा कर लेता और मुझे कोई कष्ट न पहुंचता।(७:१८८) यही मतलब है "वमा हुव अ़लल ग़ैबि बिज़नीन (८१:२४) (और वह ग़ैब की बातें बताने में बख़ील (कंजूस) नहीं है।) इस गिरोह का कहना है कि अल्लाह तआ़ला ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बीते हुए ज़माने की और आने वाले ज़माने की जिन बातों को बताने की ज़रूरत समझी अनगिनत बातों की ख़बर दे दी, उन में से जो उम्मत को बताया उम्मत ने जाना जो उम्मत के लिये न था उसे वह जानें उन का रब जाने कि क्या क्या बताया था। यही मतलब लिया जा सकता हैं मा कान व मा यकून" के ज्ञान का लेकिन हर वक़्त, हर बात जानते थे ऐसा नहीं है, वह मुख़्तलिफ़ वाक़िआत से इस को सिद्ध करते हैं। वह मानते हैं कि आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने बताया कि क़ियामत जुमे को आएगी। तारीख़ और महीना भी बताया मगर यह नहीं बताया कि वह जुमा, महीना और तारीख़ किस सन् में आएगा इस पर यह कहना कि उस वक्त तक सन हिज्री राइज न था, फ़ुज़ूल इस लिये है कि अल्लाह ने यह ग़ैब आप पर नहीं खोला, यही मतलब है "व अ़िन्दहू अ़िल्मुस्साअ़ति" (३१:३४)

का कि क़ियामत का इल्म उसी के पास है अर्थात क़ियामत कब आएगी इसे अल्लाह ही जानता है।

क़ुर्आने मजीद में कई जगह इल्मे ग़ैब की बात आई है इसी तरह क़ियामत के वक़्त की बात आई है, इस सिलसिले में मुफ़स्सिरीने किराम ने बड़ी वज़ाहत से बात समझाई है, कुछ ग़ैर मअ़रूफ़ (अप्रसिद्ध) मुफ़स्सिरीन ने उन से अलग बात कह कर अ़वाम की समझ से ऊपर मसअला छेड़ कर उलझा दिया बेचारे अ़वाम को उन मसअलों में उलझाना अ़क्लमन्दी की बात नहीं, ईमान वालों से तो यहीं मांग की गई कि वह हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को अल्लाह का रसूल और उसका बन्दा मानें, हर नमाज़ में "अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाह व अशहदु अन्न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू" पढ़ना ज़रूरी क़रार दिया गया तो ग़ैर ज़रूरी और ग़ैर वाज़ेह में अ़वाम को क्यों उलझाएं, जिस में ख़ुद ख़वास उलझे हुए हैं, मुफ़स्सिरीन अगर अलग अलग बोल रहे हैं, उसमें बेचारे अ़वाम क्यों उलझाए जा रहे हैं? यह बात तो हर मुसलमान मानता है कि सारी मख़लूक़ में सब से ऊंचा दर्जा आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का है। रही बात, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इल्म और इख़्तियार में तो रब ने आप को जो इल्म दिया हो और जो इख़्तियार दिया हो इज्माली तौर पर (संक्षेप में) हम उस सब को मानते हैं, किसी इल्म (ज्ञान) किसी इख़्तियार (अधिकार) को नियुक्त करना न ज़रूरी न ईमान लाने में उस की मांग।

कभी कभी इस में बात का बतंगड़ हो जाता है दो सज्जन लड़ गये, हुआ यह कि एक सज्जन चाय पी रहे थे, किसी कारण दूसरे सज्जन बोले कि तुम जो चाय पी रहे हो, हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को इस का भी इल्म है। दूसरे साहिब बोले अस्तग़फ़िरुल्लाह ये क्या ग़लत अ़क़ीदा रखते हो? बात बढ़ गई मुक़ददमा मेरे सामने लाया गया, मैं ने दोनों को समझाने की कोशिश की कि ऐसे मसाइल क्यों छेड़े गये? कैसे पता चला कि चाय पीने का इल्म हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को है या नहीं, जो बात नहीं जानते उस के पीछे क्यों पड़ते हो? उनमें से एक सज्जन बोल पड़े, कैसे नहीं मअ़लूम है, जब हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हाज़िर व नाज़िर हैं तो उन से क्या छुपा है? मैंने पूछा मियां यह कैसे मअ़लूम हुआ? कहने लगे बहुत सी दलीलें हैं उनमें से एक यह कि क़ुर्आन मजीद में आप को शाहिद बताया गया है। मैंने पूछा क्या इब्नि कसीर, इब्ने जरीर, आलूसी, वगैरह ने शाहिद का यही मतलब लिया है? बोले कुछ मुफ़स्सिरीन ने शाहिद से हाज़िर व नाज़िर मतलब लिया है। मैंने कहा हाज़िर व नाज़िर हमको हर हाल में देखता है, नंगे, खुले देखता है, अच्छे बुरे काम करते देखता है, क्या हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के बारे में ऐसा सोचा जा सकता है, क्या हाज़िर व नाज़िर से पर्दा मुम्किन है? फिर क्या आप ने औरतों को इजाज़त दे दी थी कि वह आप से पर्दा न करें। जब आप हाज़िर व नाज़िर थे तो बादशाहों के पास ख़ुतूत क्यों भेजे? बेचारे सोचने पर मजबूर ज़रूर हुए मगर लगा कि मुतमइन न हुए। मैं कहता हूं कि आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह का रसूल मानिये, आप के दिल में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की महब्बत अल्लाह की महब्बत के बअ़द सब से ज़ियादा हो, आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के तरीक़े अपनाइये यही आप से मांग है, इज्माली तौर पर कहिये कि जो इल्म और जो इख़्तियार आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को अल्लाह ने दिया सब को मानते हैं, मगर इख़्तिलाफी तफ़सीलात से अपने को दूर रखने ही में आफ़ीयत है।

प्रश्न : जब बहुत से मुसलमान अपने बच्चों को ईसाई मिशनरी के स्कूलों में पढ़वाते हैं, हिन्दुओं के स्कूलों में पढ़वाते हैं, सरकारी स्कूलों में पढ़वाते हैं तो क़ादियानियों से या क़ादियानियों के स्कूलों में बच्चों को पढ़वाने में क्या भय है या क्या हरज है?

उत्तर : प्रश्न करने वाले भाई ध्यान देकर पढ़ें, ईसाई मिशनरीयों के स्कूलों में एक ज़माने से बहुत से मुस्लिम बच्चे बढ़ते आ रहे हैं जिसे बहुत से दीनदार पसन्द नहीं करते, यह बात सत्य है कि उन स्कूलों में पढ़ने वाले अधिकांश बच्चे पश्चिमी संस्कृति तथा सभ्यता (तहज़ीब व सक़ाफ़त) अवश्य अपना लेते हैं परन्तु आज तक नहीं सुना गया कि कोई बच्चा केवल उन के स्कूल में पढ़ने के कारण ईसाई हो गया हो। इसी प्रकार देवमालाई पाठ्यक्रम वाले स्कूलों में बच्चों के पढ़वाने को दीनदारों ने ना पसन्द किया और वहां पढ़ने वाला बच्चा बहुत से अन्धविश्वासों में अवश्य ग्रस्त (मुबतला) हुआ जिसे दीनदार मां बाप अथवा दीनी माहौल (वातावरण) ने बड़ी सरलता से

उबार लिया परन्तु नहीं सुनने में आया कि कोई बच्चा केवल उन के स्कूलों में पढ़ने के कारण हिन्दू हो गया हो जब कि क़ादियानियों से पढ़ने वाला कोई बच्चा सिवा इस के कि क़ादियानी को ग़लत समझ कर उस से अलग हो गया हो, बच्चा अपने पूरे घर वालों के साथ क़ादियानी बन के रहता है, कारण यह कि वह बच्चों को वही क़ुर्आन पढ़ाते हैं जो हम पढ़ाते हैं, वुज़ू, नमाज़, उसी तरह सिखाते हैं जैसे हम सिखाते हैं बस जो चीज़ बदलते हैं वह है ख़त्मे नुबुव्वत का इन्कार और मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद के नबी मान लेने की बात जिसे अपने अक़ीदे से ना वाक़िफ़ (अपरिचित) तथा अपने बच्चों की फिरी शिक्षा और धन से पुरस्कारित व्यक्तियों को स्वीकार करने में कोई आपत्ति ही नहीं होती, यदि कुछ पढ़े लिखे बे रोज़गार आड़े आते हैं तो उनको क़ादियान की सैर कराकर रोज़गार से लगा देते हैं तथा उनके लिये टीवी चैनल और मोटर साइकिल मुहय्या कर के क़ादियानी धर्म का प्रचारक बना लेते हैं जब कि अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पश्चात ख़त्मे नुबुव्वत का इन्कार करने वाला और मिर्ज़ा को नबी मानने वाला इस्लाम से बाहर है उसके सारे भले काम अकारत हैं, उसकी आख़िरत बर्बाद है, जगत के सारे मुस्लिम विद्वानों का यही फ़ैसला है। क्या इस के पश्चात भी कोई मुसलमान अपने बच्चों को क़ादियानियों से पढ़वाने की चेष्ठा करेगा? कदापि नहीं।

किसी क़ादियानी से मुलाक़ात हो तो हमदर्दी के साथ तौबा तलब करो।

इंटरनेट पर पाएं निःशुल्क उच्च शिक्षा

एस०जी० हक

सूचना क्रान्ति के इस दौर में विश्वविद्यालय स्वयं चलकर आपके स्टडी रूम में आ गई है। जी हां, यह सूचना क्रान्ति की जननी इंटरनेट का ही कमाल है। आपको केवल ब्राउसर के एड्रेस बार में **http://www.free.ed.net.** टाइप करने के पश्चात 'गो' पर क्लिक करना है। लीजिए, ऑन लाइन वर्चुअल यूनीवर्सिटी आपके सामने है। इस वर्चुअल यूनीवर्सिटी के विभिन्न कॉलेजों में १२० से भी अधिक पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

इस साइट के होम पेज पर सामान्य, एवं आईटी नामक दो कोर्स कैटलॉग मौजूद हैं। सामान्य पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कॉलेज ऑफ बिजनेस एंड इकॉनोमिक्स है, जहां अकाउंटिंग व्यापार, अर्थशास्त्र, वित्त इत्यादि की शिक्षा प्राप्त की जा सकती है, जबकि कॉलेज ऑफ ह्यूमेनिटीज में कला, अंग्रेजी, पत्रकारिता, आधुनिक एवं प्राचीन भाषाएं साहित्य इत्यादि की शिक्षा प्रदान की जाती है। गणित की शिक्षा के लिए कॉलेज ऑफ मैथेमेटिक्स है। एस्ट्रॉनोमी, बायोलोजी, कैमिस्ट्री, ज्योग्राफी, फिजिक्स इत्यादि के लिए कॉलेज ऑफ साइंस है। मैकेनिक्स, कंस्ट्रक्शन, इलैक्ट्रानिक्स, पर्यावरण, फैशन एवं टैक्सटाइल्स, वेल्डिंग, कंप्यूटर जैसे वोकेशनल पाठ्यक्रमों के लिये कालेज ऑफ कैरियर एवं टेक्टनोलोजी है।

शिक्षक प्रशिक्षण इस विश्व विद्यालय के कॉलेज ऑफ एजुकेशन से प्राप्त किया जा सकता है। विभिन्न इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों के लिए कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में नामांकन कराया जा सकता है। सामाजिक विज्ञान के लिए कॉलेज ऑफ सोशल स्टडीज की भी सुविधा उपलब्ध है। चिकित्सा विज्ञान में प्राप्ति के लिये कॉलेज ऑफ मेडिसन भी है।

आई०टी० कोर्स कैटलॉग में विभिन्न कंप्यूटर पाठ्यक्रमों में दी जाने वाली शिक्षा का विवरण मौजूद है। यदि आप विदेशी विश्वविद्यालय से नियमित कोर्स हेतु प्रवेश के इच्छुक हैं तथा जी०ई०डी०, जी०एम०ए० टी० तथा जी०आर०ई० जैसी जांच परीक्षा की तैयारी करना चाहते हैं तो इस वर्चुअल विश्वविद्यालय के कालेज ऑफ टेस्ट प्रीप्रेशन को विजिट करें।

इस वर्चुअल यूनीवर्सिटी से सारी दुनिया के लोग कोर्स कर सकते हैं। इतना ही नहीं, विभिन्न देशों के विद्यार्थियों से वार्तालाप तथा एक–दूसरे के अनुभव बांटने का भी प्लेटफार्म यहां मौजूद है। एक खास बात, ये तमाम कोर्स करने के लिए आपको एक पैसा भी शुल्क अदा करने की जरूरत नहीं है अर्थात यह सब बिल्कुल मुफ्त है।

सैंडविच बनती जा रही है आज की औरत

वसीम राशिद

औरतों के बीच कैरियर और किड्स (Kids) के बीच फैसला करना कठिन हो गया है। कुछ औरतें जहां कैरियर पर अधिक ध्यान देती हैं वहीं कुछ महिलायें अपने बच्चों के पालन पोषण पर अधिक समय खर्च करती हैं लेकिन समस्या जब गम्भीर हो जाती है जब मां बाप दोनों काम करने वाले हों। ऐसी परिस्थिति में बच्चों के लिए समय निकालना कठिन हो जाता है। नवीनतम समीक्षा के अनुसार अब मां बाप बच्चों को २४ घंटे में केवल ३० मिनट ही दे पाते हैं जिसके कारण बच्चों के बिगड़ने की सम्भावना रहती है। आज इक्कीसवीं सदी में जितनी तेजी के साथ सामाजिक आर्थिक प्रवेश बदल रहा है उसमें औरत को अपने कार्य को निश्चित करना पड़ेगा। अगर वह घर में बन्द रहती है तो आर्थिक समस्याएं पैदा होती हैं और अगर दफतर में उलझ जाती हैं तो पूरी घरेलू व्यवस्था चौपट हो जाती है। इन दोनों के बीच कोई सन्तुलन बनाना बड़ा कठिन होता है। फिर भी कुछ औरतें घर और दफतर दोनों जगह अच्छा काम कर रही है। तब भी यह एक समस्या है कि औरत घर और दफतर के बीच सैंडविच बनकर रह गई है। घर में सास ससुर की सेवा करना उनकी आवश्यकताओं को पूरा करके निकलना, बच्चों के लिऐ टिफिन बनाना और पति देव के दफतर के लिये लंच बना कर निकलना यह उनकी वह जिम्मेदारियां होती हें जिनसे वह किसी तरह पीछा नहीं छुड़ा सकतीं। यह सब काम करके वह थकीहारी और सास ससुर की कड़वी बातों से जेहनी तौर पर टूटी हुई जब आफिस में कदम रखती हैं तो वहां भी उसे जेहनी उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। ऐसे में किसी कारण से उन्हें आफिस में देर हो जाती तो घर में एक तूफान सा आ जाता है और औरत को आफिस से घर जाकर फिर घर के काम में लगना पड़ता है। सुबह से शाम और शाम से रात हो जाती है। ऐसे में अपने लिये उनके पास समय ही नहीं बचता कि वह कुछ क्षणों के लिए खुद को भी देखलें। जो महिलायं अच्छी आमदनी या उच्च पदों पर काम कर रही हैं और उनके पति की भी आमदनी अच्छी है तो घर में नौकरानी रखलेती हैं लेकिन नौकरानी का वही हाल है या तो कठोर या स्वार्थी। उनको न दर्द है न गरज। उनका टार्गेट होता है महीना शुरू होना और उनकी तनख्वाह पहली तारीख को मिलना। ऐसे में अच्छा खाना न मिलने और साफ कपड़े न धुलने और घर की अच्छी तरह सफाई न होने की शिकायत भी बारबार सास–ससुर, शौहर और बच्चों से मिलती रहती हैं। ऐसा नहीं है कि जरूरत के लिऐ जो महिलायें काम करती हैं उन्हें इन परिस्थितियों का सामना नहीं करना पड़ता। घर की तमाम जिम्मेदारियों से उन्हें भी उसी तरह निपटना पड़ता है। बस अन्तर केवल इतना है कि अगर पति और घर के लोगों को यह एहसास हो जाय कि यह उस की जिम्मेदारी नहीं कि वह भी काम करे बल्कि यह उसके लिए अतिरिक्त काम है तो थोड़ा आराम मिल सकता है नहीं तो वही हाल कि कब सूरज निकला और कब चांद यह बेचारी औरत को पता ही नहीं चलता। एक छुटटी का दिन और सम्बन्धियों का आगमन यह सोच कर कि आज घर में जरूर मिलेंगे, उस औरत को और भी तोड़ देता है और कोई दिन कोई क्षण उस औरत को सकून का नहीं मिल पाता। बच्चों के स्कूल के काम में मदद करना उनके प्रोजेक्ट को बनवाना भी आज की औरत की जिम्मेदारी है क्योंकि अच्छे स्कूल में जो बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं वहां बच्चों से अधिक मां बाप की परीक्षा होती है। ऐसे में आफिस से घर आकर देर रात तक बच्चों को प्रोजेक्ट में मदद करना नौकरी करने वाली महिलाओं की जिम्मेदारी होती है।

बहुत से कामों को पूरा करते करते औरत न तो उचित नींद ले पाती है न ही उसे आराम का पर्याप्त समय मिल पाता है। यह परेशानी भारत में ही नहीं अमेरिका जैसे उन्नति प्राप्त देश में भी है जहां ७० प्रतिशत महिलायें अनिद्रा की शिकार हैं जिन में से ६८

(शेष पृष्ठ १६ पर)

नाइंसाफियों से पैदा होती है दहशतगर्दी

जस्टिस ए.एम. अहमदी

मुल्क में बढ़ती दहशतगर्दी और दहशतगर्दी के बहाने हुकूमत के जरिये एक मखसूस तबके को निशाना। बनाए जाने पर सख्त तंकीद करते हुए मुल्क के दो साबिक चीफ जजिस्टसों ने कहा कि दहशतगर्दी को ताकत के जोर पर नहीं कुचला जा सकता है और हिंसा की हर वारदात को दहशतगर्दी नहीं कहा जा सकता। दहशतगर्दी से निपटने की पालीसियों पर तंकीद करते हुए जस्टिस जी.पी. पटायक और जस्टिस ए.एम. अहमदी ने इस बात पर जोर दिया कि दहशतगर्दी की कोई तय तारीफ नहीं है और हुकूक व इंसाफ से महरूम कमजोर तबके मायूसी की कैफियत में हिंसा की तरफ बढ़ सकते हैं। मिस्टर जी.पी. पटनायक ने कहा कि दहशतगर्दी के इल्जाम में पकड़े गये या दहशतगर्द करार दिए गए किसी भी फर्द को कानून व इंसाफ से महरूम नहीं किया जा सकता है और हर दहशतगर्द का यह हक है कि उसके साथ कानून के मुताबिक सुलूक किया जाए। दोनों साबिक चीफ जस्टिस, हाल ही में मुनअकिद दहशतगर्दी और इंसाफ के मौजू पर एक कांफ्रेंस की तरफ से यहां खिताब कर रहे थे।

आल इण्डिया मुस्लिम कौंसिल की तरफ से यहां खालसा कालेज में मुनअकिद इस कांफ्रेंस में इफ्तेताही तकरीर करते हुए जिस्टस ए.एम. अहमदी ने दहशतगर्दी के मसले पर कानूनी और फलसफियाना नुक्ता–ए–नजर से बहस की और कहा कि सियासी तनाजों (विवादों) में मुख्तलिफ ग्रूप नाइंसाफी से लड़ने के लिए कई तरीके इख्तियार करते हैं। कोई कमजोर ग्रूप ऐसे जराये अपना सकता है जिसे ताकतवर ग्रूप दहशतगर्दी करार देते हैं और इस बिना पर कमजोरों के एहतिजाज को दबाने के लिए ताकत के सफ्फाकाना इस्तेमाल के लिए जवाज (औचित्य) फराहम करते हैं। उन्होंने इस सिलसिले में हिन्दुस्तान की तहरीके आजादी की मिसाल देते हुए सवाल उठाया – 'क्या शहीद भगत सिंह और सुभाष चन्द्र बोस को आप दहशतगर्द कह सकते हैं। उन्होंने कहा कि कानून की हुक्मरानी वाली किसी जम्हूरी हुकूमत में यह बात बड़ी मायूसकुन है कि बरसरे एक्तेदार (सत्तारूढ़) लोग आवास के मसायल की तरफ से आंखें बन्द कर ले और उनकी शिकायतों को हल करने में कोई दिलचस्पी न दिखाएं। जस्टिस अहमदी ने वाजेह तौर पर कहा कि हमारी सरकारी एजेंसियों ने फिरकावाराना तनाजों को हल करने में वह हस्सासियत और गैर जानिबदाराना फर्जशनासी नहीं दिखाई है जिसकी उनसे उम्मीद की जाती है। उन्होंने वोट बैंक पालिटिक्स को उस कमजोरी की अस्ल वजह करार दिया। दहशतगर्दी और इंसाफ के नाम पर मिल्ली कौंसिल के इस कौमी कनवेंशन में मुल्क की कई रियासतों से हजारों की तादाद में आए लोगों ने हिस्सा लिया और मुख्तलिफ फिरकों से जुड़ी सफे अव्वल की नुमाइन्दा शख्सियतों ने इस कांफ्रेंस को खिताब किया। कौंसिल के जनरल सेक्रेटरी डाक्टर मंजूर आलम ने अपनी इस्तिकबालिया तकरीर में मुल्क व कौम के सामने अहम सवालात खड़े किए और कहा कि पार्लियामेंट, अदलिया, इंतजामिया और मीडिया समेत जम्हूरियत के चारों सुतून करप्शन, लाकानूनियत और गैर जिम्मेदाराना तरीक–ए–कार में मुलव्विस (लिप्त) हैं। उन्होंने कहा कि मुल्क के एक सियासी तबके की सोच यह है कि अकलियतों, दलितों और कबाइलियों के नुक्सान से ही उसे फायदा हासिल हो सकता है। इसी सोच के तहत कानून व इंतजाम की मशीनरी का एक हिस्सा खुद साख्ता खौफ की मंतिक के तहत हरकत में है। उन्होंने कहा, इन तबकों को कानून की हुक्मरानी पसंद नहीं है।

इस मौके पर आल इंडिया मिल्ली कौंसिल के सदर मौलाना अब्दुल्लाह मुगीसी ने एक तवील सदारती खुतबा पेश किया, जिसमें उन्होंने कहा कि दहशतगर्दी बुनियादी तौर पर हमारे मुल्क का मसला नहीं है, बल्कि उन आलमी ताकतों की थोपी गई लानत है जिनके नजरियात की बुनियाद यहूदियत पर है। उन्होंने वतन के भाइयों से अपील की कि मुसलमानों खास तौर से मद्रास के लोगों को करीब

(शेष पृष्ठ १६ पर)

किस्त पांच

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
इन्तिक़ाल	देहान्त	बाशिन्दा	निवासी	बसीरत	अन्तर्दृष्टि
इन्तिक़ाम	बदला	बासिरह	दृष्टि शक्ति	बिज़ाअ़त	पूंजी
इन्तिहा	अन्त	बातिल	व्यर्थ	बअ़द	पश्चात
इन्तिहाई	अन्तिम	बातिन	गुप्त	बअ़ज़	कतिपय
इन्सानीयत	मानवता	बाग़ी	विद्रोही	बअ़ीद	सदूर
इन्क़िताअ़	कट जाना	बाक	भय	बुग़ज़	द्वेष
इन्क़िलाब	परिवर्तन	बाकिरह	कुमारी	बिगैर	बिना
इन्सिदाद	निरोध	बालिग़	व्यस्क	बुलूग़	व्यस्कता
इहानत	हतक	बर्दाश्त	सहन	बेदार	जागरूकता
इहतिज़ाज़	झूमना	बर्क़	विद्युत	बेदारी	जागरण
ईजाद	आविष्कार	बर्क़ पैमा	विद्युत मापक	बेज़ार	अप्रसन्न
ईजाज़	संक्षेप	बरकत	अधिकता	बेवः	विधवा
ईसाल	पहुंचाना	बरगुज़ीदह	सर्वश्रेष्ठ	पाबन्दी	प्रतिबन्ध
बाद	हवा	बुज़ुर्ग	महापुरुष	पासबान	रखवाला
बांदी	सेविका	बज़्म	समिति	पासबानी	रखवाली
बाहम	परस्पर	बशारत	सुसमाचार	पाकीजः	निर्मल
बुत	मूर्ति	बश्शाश	प्रफुल्ल	पायदार	सुदृढ़
बजुज़	अतिरिक्त	बशाशत	हर्ष	पाइन्दः	चिरस्थायी
बह्स	प्रसंग	बसारत	दृष्टि	पुख़्तः	परिपक्व

पाठक जिस उर्दू शब्द का उच्चरण जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जाएगा।

रहनुमायाने मिल्लत से

मौ०मु० सानी हसनी

क़ाइदाने मुल्क व मिल्लत रहनुमायाने किराम
है गुज़ारिश एक मेरी आप से बा एहतिराम

क्या करूं मजबूर हूं मैं अ़र्ज़ करने के लिये
है ज़बां मेरी मगर है आरज़ूए ख़ास व आ़म

आप ख़ुद मिल्लत के दर्द व कर्ब से बेचैन हैं
इस लिये इस की बक़ा का है निहायत एहतिमाम

ग़ौर करने के लिये हैं सैकड़ों ही मसअले
बे क़रीना हो चुका है आज मिल्लत का निज़ाम

है मिज़ाज इस मिल्लते मर्हूम का सबसे अलग
दूसरी क़ौमों से बिल्कुल है जुदा इस का मक़ाम

है मुसलमानों की उम्मत, उम्मते ख़ैरूलउमम
इस को ह़ासिल है मुबारक निस्बते ख़ैरूल अनाम

मा सिवा अल्लाह के जिस की ज़बां पर लाइलाह
रह नहीं सकता कभी भी मन व तू का वो ग़ुलाम

भीक मांगे ग़ैर से बन कर गदाए बे नवा
मुददतों तक जो रहा है सारी क़ौमों का इमाम

यह है शाही इस के ह़क़ में ख़ाक बाज़ी मर्ग है
करगसो की ज़िन्दगी ता ह़श्र है इस पर ह़राम

क्या कहूं इसकी मताअ़े दीन व दानिश लुट गई
खो गई तेग़े ख़ुदी और रह गई ख़ाली नियाम

मिल्लते इस्लाम का अब कारवां बेमीर है
ले क़ियादत का अ़लम बढ़कर कोई आ़ली मक़ाम

है ज़रूरत आज मिल्लत को कलीमे तूर की
जो ब बांगे दुहल इसको ला तख़फ़ का दे पयाम

जो भी कूदे आतिशे नमरूद में मिस्ले ख़लील
उसके ही हाथों में होगी आज मिल्लत की ज़िमाम

हिक्मतें भी आ़म हैं, होश व ख़िरद भी आ़म हैं
इस की कोशिश चाहिए हो शेव–ए–रिन्दाना आ़म

ज़ोरे ह़ैदर चाहिए और फ़क़्रे बूज़र चाहिए
आज की दुन्या में उम्मत का बनेगा जब ही काम

है अगर पेशे नज़र पूरी ह़क़ीक़त आप के
कामरानी ले क़दम, मेरी दुआ़ है सुब्ह़ व शाम

हो मुबारक आपका हर मशवरा हर इज्तिमाअ़
हर मुबारक काम की बरकत को ह़ासिल हो दवाम

क़ादियानीयत

मौ० मु० खालिद नदवी गाजीपुरी

क़ादियानीयत ह़क़ीक़त में ख़त्मी मरबत सरवरे अंबिया फ़ख़्रे दो आ़लम, सय्यिदुल अव्वलीन वलआख़िरीन की रिसालत के ख़िलाफ़ एक मन्सूबाबन्द साज़िश और बग़ावत है। इस का मक़सद रिसालते मुह़म्मदी के असरात को ज़ाइल करना और मग़रिब की .गुलामी की मुस्लिम मुआ़शरे में क़ुव्वत बहम पहुंचाना था।

क़ादियानीयत एक नासूर है जो मुस्लिम अ़क़ाइद की बीख़कनी के लिये, मिर्ज़ा .गुलाम अह़मद क़ादियानी के ज़रीअ़े मुस्लिम समाज में आ़म करने की कोशिश की गई, जिस का अस्ल मक़सद मुसलमानों के जज़्ब–ए–जिहाद को ख़त्म करना और इस्लामी वह़दत को पारा पारा करना था।

क़ादियानीयत अगर अपनी रूह़ और मज़हर में एक फ़िर्क़ा, ताइफ़ा और मज़हबी ग्रूप में सामने आती तो हमें उससे कोई सरोकार नहीं होता, लेकिन इस का .ज़ुहूर इस्लाम के नाम पर इस्लाम को सबूताज़ करने के लिए हुआ। इस लिये मुस्लिम समाज को उसके तअ़ल्लुक़ से बेदार रहने और बेदार करने की ज़रूरत पेश आई। वर्ना हिन्दोस्तान में बहुत से मज़हबी ग्रूप पैदा हुए और उन्होंने अपनी अलग एक शिनाख़्त क़ाइम की और उसकी तरवीज व इशाअ़त में वह कोशां रहे, मुसलमानों ने कभी उन से महाज़ आराई न की। अंग्रेज़ों ने सियासी उफ़ुक़ पर जिस तरह़ काम्याबी ह़ासिल की, उन्नीसवीं सदी में मज़हबी, ख़ुसूसन इस्लामी रंग को भी तहो बाला करने की कोशिश की। उस के लिये ख़ास तौर से क़ादियानियत और बहाईयत को फ़रोग़ देने का एहतिमाम किया गया लेकिन बहाईयत ने अव्वल दिन ही से इस्लाम से अपना रिश्ता अलग रखा। वह अपने आपको मुस्लिम के बजाए बहाई कहते हैं, लिहाज़ा उनकी सरगर्मी का मह़वर वह नहीं है जो क़ादियानियों का है।

क़ादियानीयत दबे पांव इस्लामी अ़क़ाइद को सबूताज़ करते हुए बज़अ़मे ख़्वेश इस्लाम का एक जदीद एडीशन एक ख़ुद साख़्ता नबी की कियादत व रहनुमाई में पेश करती है और उस का दअ़्वा है कि हम ही अस्ल इस्लाम के ह़ामिल हैं और ह़क़ीक़ी मुसलमान हैं, नुबुव्वत का इमतिदाद जारी है, वह़्ये इलाही का सिलसिला क़ाइम है; और नुबुव्वत का सिलसिला अभी मौक़ूफ़ नहीं हुआ है।

मिर्ज़ा .गुलाम अह़मद क़ादियानी ने इब्तिदाअन नुबुव्वत का दअ़्वा नहीं किया, जबकि सारे अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम ने अपनी रिसालत व नुबुव्वत का एअ़्लान बतदरीज नहीं किया बल्कि नुबुव्वत मिलने के बअ़्द यकबारगी किया जिस से मुख़ालिफ़ीन को यह मौक़अ़ नहीं था कि वह कह सकें कि यह नुबुव्वत किसी सोची समझी स्कीम के तह़त अ़मल में आई है लेकिन .गुलाम अह़मद कादियानी के यहां नुबुव्वत बतदरीज आई है। उस ने पहले मुजद्दिद, मुह़द्दिस होने का दअ़्वा किया, फिर महदी व मसीह़े मौ़ऊद बन बैठा, बअ़्द अजां ज़िल्ली नबी होने का दअ़्वा किया, उस के बअ़्द बुरूज़ी नबी और बुरूज़ी तौर पर मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और आख़िर में मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बढ़कर होने का दअ़्वेदार बन बैठा। इस तरह़ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जो ख़ातिमुल अंबिया ख़त्मुल मुर्सलीन हैं की इहानत उस ने की (नऊज़ु बिल्लाहि मिन ज़ालिक) यही वजह है कि मुसलमान क़ादियानीयत के ख़िलाफ़ हैं और इसे इस्लाम के ख़िलाफ़ बग़ावत मह़सूस करते हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अनुवाद : मेरी मिसाल और अंबिया की मिसाल ऐसी है जैसे एक मह़ल, कि उसे ख़ूबसूरत बनाया गया हो लेकिन उस में एक ईंट की जगह ख़ाली रखी गई हो, देखने वाले उसे देखें और उस की ख़ूबसूरती और सजावट की तअ़रीफ़ करें, मा सिवाए उस जगह के जिस में एक ईंट लगना बाक़ी है, बस मेरे जरीअ़े उस जगह को पुर कर दिया गया। अब उस मह़ल में कोई जगह बाक़ी नहीं रही, मुझ से मुकम्मल कर दी गई और रसूलों की बिअ़सत का सिलसिला मौक़ूफ़ हो गया। दूसरी रिवायत में फ़रमाया : उस मह़ल की आख़िरी ईंट मैं ही हूं और मैं ख़ातमन्नबिय्यीन हूं। (बुख़ारी व मुस्लिम) आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह भी फ़रमाया : अनुवाद : मैं आख़िरी नबी हूं और तुम आख़िरी उम्मत (इब्नि

माजा) आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का यह भी इर्शाद है : अनुवाद – मेरी उम्मत में तीस झूठे दज्जाल पैदा होंगे जो नुबुव्वत का दअ़्वा करेंगे हालांकि मैं ख़ातमन्नबिय्यीन हूं, मेरे बअ़्द कोई नबी नहीं। (तिर्मिजी, अबूदाऊद) इन हदीसों की रौशनी में मुसलमानों का यह अ़क़ीदा है कि आख़िरी नबी सल्ल० के बाद जो नुबुव्वत का दअ़्वा करेगा वह मुलहिद ज़िन्दीक़, काफ़िर और ख़ारिज अज़ इस्लाम तो हो सकता है मुसलमान नहीं क़रार दिया जा सकता, जो उस के पैरोकार होंगे वह दज्जाल के पैरोकार और झूठी शरीअ़त के दअ़वेदार तौ हो सकते हैं लेकिन मुसलमान नहीं हो सकते।

अख़बार अल फ़ज़्ल क़ादियान २६ सितम्बर १९१७ ई० में मुसलमानों के नाम एक अपील शायेअ़ की, जिस से क़ादियानियों के मुअ़तक़दात और उनके इन्दिया का बख़ूबी पता चलता है, यह कहता है : "ऐ मुसलमान कहलाने वालो! अगर तुम वाक़ई इस्लाम का बोल बाला चाहते हो और बाक़ी दुन्या को अपनी तरफ़ बुलाते हो तो पहले ख़ुद सच्चे इस्लाम की तरफ़ आओ जो मसीहे मौअ़ूद (मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद) में होकर मिलता है, उस के तुफ़ैल बिर्र और तक्वे की राहें खुलती हैं, उसकी पैरवी से इन्सान फ़लाह व नजात की मंज़िले मक्सूद पर पहुंच सकता है, वह ग़ुलाम, अस्लन वही फ़ख़्रे अव्वलीन व आख़िरीन है, जो आज से १३ सौ बरस पहले रहमतुल्लिलआलमीन बन कर आया था। (नअ़ज़ु बिल्लाहि मिन ज़ालिक)

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद का बेटा मिर्ज़ा बशीर अहमद जो बाप के बअ़्द क़ादियानियत का सरबराह हुआ (अगर्चे वह दूसरा ख़लीफ़ा कहलाता है) वह कहता है : ग़रज़ कि यह साबित शुदा अम्र है कि मसीहे मौऊ़द (मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी) अल्लाह तआ़ला का एक रसूल और नबी था, जिस को नबीये करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नबीयल्लाह के नाम से पुकारा और वही वह नबी था जिसे ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने अपनी वह्य में "या अय्युहन्नीयु" के अल्फ़ाज़ से पुकारा। (अल्फ़ज़्ल क़ादियान जि० १४ सफहः ११४)

ज़मीमा हक़ीक़तुल वह्य के सफ़हः ८७ में मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी ने ख़ुद ही लिखा है कि "मुझे वह चीज दी गई है जो तमाम आ़लम में किसी को नहीं दी गई।"

इस लिये मिर्ज़ाइयों और क़ादियानियों के नज़दीक मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद न सिर्फ़ नबी हैं बल्कि तमाम अंबिया व रुसुल बशमूल सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से भी अफ़ज़ल व अअ़ला हैं। (नऊज़ु बिल्लाहि मिन ज़ालिक)

क़ादियानी सिर्फ़ यही अ़क़ीदा नहीं रखते कि जिब्रील अमीन मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद पर नाज़िल होते थे बल्कि उनका नज़रया यह भी है कि वह वह्य या कलामे रब्बानी लेकर नाज़िल होते थे, बिल्कुल उसी तरह की वह्य और उसी तरह का कलाम जिस तरह का सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ करता था। ग़ुलाम अहमद पर नाज़िल शुदा वह्य को मानना भी उसी तरह ज़रूरी है जिस तरह क़ुर्आने हकीम को मानना ज़रूरी है।

चुनांचि मिर्ज़ाई क़ाजी मुहम्मद यूसुफ़ क़ादियानी लिखता है : "हज़रत मसीहे मौऊ़द अ़लैहिस्सलाम (मिर्ज़ा अहमद) अपनी वह्य अपनी जमाअ़त को सुनाने पर मामूर हैं। जमाअ़ते अहमदिया को इस वह्ये इलाही पर ईमान लाना और उस पर अ़मल करना फ़र्ज़ है क्योंकि वह्य इलाही इसी ग़रज़ से सुनाई जाती है वरना इस का सुनाना और पहुंचाना ही बेसूद और लग़्व होगा जब कि इस पर ईमान लाना और इस पर अ़मल करना मक़्सूद बिज़्ज़ात है। यह शान सिर्फ़ अंबिया को हासिल है कि उन की वह्य पर ईमान लाया जाए। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को भी क़ुर्आने शरीफ़ में ही हुक्म मिला और इनही अलफ़ाज़ में मिला और बअ़्दहू हज़रत अहमद मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अ़लैहिस्सलात वस्सलाम को मिला, बस यह अम्र भी आप (मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद) की नुबुव्वत की दलील है। (अन्नुबुव्वः फ़िल अनाम सफ़ह : २८ क़ाजी मुहम्मद यूसुफ़ कादियानी) (नऊज़ बिल्लाहि मिन जालिकल हफ़्वात)

ख़ुद ग़ुलाम अहमद का दअ़्वा यह है कि मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं, इन इल्हामात पर उसी तरह ईमान लाता हूं जैसा कि क़ुर्आने पाकपर और ख़ुदा की दूसरी किताबों पर और जिस तरह मैं क़ुर्आने शरीफ़ को यक़ीनी और क़तई तौर पर ख़ुदा का कलाम जानता हूं उसी तरह इस कलाम को भी जो मेरे ऊपर नाज़िल होता है खुदा का कलाम यक़ीन करता हूं। (हक़ीक़तुल वह्य : २११)

नीज़ यह भी दअ़्वा है : "मुझे अपनी वह्य पर ऐसा ही ईमान है जैसा

कि तौरात और इन्जील और क़ुर्आने ह़कीम पर" (तब्लीग़े रिसालत जि० ६ सफ़ः ६४)

क़ादियानियों के नज़दीक अह़ादीस में से सिर्फ़ वह काबिले क़बूल है जिस से मिर्ज़ा के मुअ़तक़दात पर जर्ब न पड़ती हो ख़्वाह वह मौज़ूअ़ ही क्यों न हों, चुनांचि मिर्ज़ा महमूद लिखता है : "मसीहे मौऊ़द मिर्ज़ा ग़ुलाम अह़मद से जो बातें हमने सुनी हैं वह ह़दीस और रिवायत से मुअ़तबर हैं क्योंकि ह़दीस हम ने आं ह़ज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुंह से नहीं सुनी है, बस सच्ची ह़दीस और मसीहे मौऊ़द का क़ौल मुख़ालिफ़ नहीं हो सकता। (अलफ़ज़्ल, क़ादियान २६ अप्रैल १६५१ ई०)

मिर्ज़ाइयों के ख़लीफ़ा सानी मिर्ज़ा महमूद ने क़ादियान में जुमेअ़ का ख़ुत्बा देते हुए यहां तक कह दिया : "फिर यह भी याद रखना चाहिए कि जब कोई नबी आजाए तो पहले नबी का इल्म भी उस के जरीअ़े मिलता है, यूं अपने तौर पर नहीं मिल सकता और बअ़द में आने वाला नबी पहले नबी के लिये बमंजिल–ए–सूराख़ के होता है, पहले नबी के आगे दीवार खींच दी जाती है और कुछ नज़र नहीं आता सिवाए आने वाले नबी के ज़रीअ़े देखने के यही वजह है कि अब कोई क़ुर्आन नहीं सिवाए उस क़ुर्आन के जो ह़ज़रत मसीहे मौऊ़द ग़ुलाम अह़मद क़ादियानी ने पेश किया, और कोई ह़दीस नहीं सिवाए उस ह़दीस के जो ह़ज़रत मसीहे मौऊ़द ग़ुलाम अह़मद क़ादियानी की रौशनी में दिखाई दे, इसी तरह़ रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का वुजूद भी उसी जरीअ़े से नज़र आएगा कि ह़ज़रत मसीहे मौऊ़द ग़ुलाम अह़मद क़ादियानी की रोशनी में देखा जाए। अगर कोई चाहे आप (ग़ुलाम अह़मद क़ादियानी) से अ़लाहदा हो कर कुछ देख सके तो उसे कुछ नज़र न आएगा, ऐसी सूरत में अगर कोई क़ुर्आन को भी देखेगा तो वह उस के लिये "यहदी मय्यशाअ (जिस को चाहता है हिदायत देता है वाला कुर्आन न होगा बल्कि "युज़िल्लु, मंय्यशाअ" जिस को चाहता है गुमराह करता है) वाला कुर्आन होगा। (जारी) (नऊज़ु बिल्लाहि मिन हाज़िहिल हिज़यानात)

ठग विद्या !

यज्ञ : बहुत से लोग बहुमूल्य खाद्यसामग्री यज्ञकुण्ड में जलाने को धर्म समझते हैं। यह एक सौ एक यज्ञकुण्ड बनाकर उसमें उत्तम खाद्य सामग्री जलाएंगे– उस बर्बादी का उत्सव मनाएंगे – उसके लिये लाखों रूपयों का चंदा करेंगे–चन्दा लूटकर कुछ दलाल किसी यज्ञ प्रेरक धूर्तराज को देंगे और खुद उस राशि की दलाली (कमीशन) खाएंगे। इस प्रकार ठगी का कारखाना चलता रहेगा। युगनिर्माण होता है – देश में उत्पादन बढ़ाने से, ईमानदारी के विस्तार से, परन्तु युगनिर्माण के नाम पर यहां खाद्य सामग्री की बर्बादी होती है – ठगों के मंडल तैयार होते है। जो लाखों रूपये ठग ले जाते हैं। उन ठगों की प्रतिष्ठित करने से ठगी को प्रोत्साहन मिलता रहता है। यह सब जान–बूझकर करना अपने आपको ठगना है। इसमें न अपने स्वार्थ की रक्षा है न परस्वार्थ की।

फलित ज्योतिष : कुछ लोग भविष्यवाणियां करके लोगों को ठगते रहते हैं। भविष्यवाणी करने वाले धूर्तता से अपनी निष्फलता छिपा जाते हैं। आपको पूरी बात समझ में नहीं आयी या अमुक शर्त पूरी न होने से सफलता नहीं मिल सकी आदि बहाने बना–बनाकर वे अपने जाल में फंसाये रखते हैं। लोग बार–बार ठगे जाने पर भी ठगी के जाल में फंसते ही रहते हैं। सट्टे का अंक बताने वाला खुद लाखों रूपये नहीं कमा लेता, केवल दूसरों को फंसाता है – यह जानते हुए भी लोग ठगी के शिकार होते रहते हैं। ऐसे ठग लोग अपने कुछ दलाल भी नियुक्त कर लेते हैं, जो उनकी दिव्यता–अलौकिक क्षमता का प्रचार करते हैं और जो आय होती है, उसमें से अपना निर्धारित अंश पाते रहते हैं। उनकी धूर्तता जरा सा विचार करने पर भी समझ में आ जाती है, फिर भी लोग प्राचीन शास्त्रों के प्रति अंधविश्वास के कारण तथा ठगमंडलों की बातों में आकर ठगी के शिकार होते ही रहते हैं। यह आत्मवंचना है।

मिथ्या चिकित्सा आदि के प्रलोभन : कुछ लोग चिकित्सा आदि के नाम पर ठगी का धंधा करते हैं। उनके स्पर्श मात्र से, उनके आशीर्वाद से, उनकी गालियां या लात खाने से उनके दर्शन से प्रसाद से पूजा से सब तरह के रोग दूर हो जाते हैं – मुरादें भी पूरी होती हैं आदि बातों का मिथ्या प्रचार करके भोली जनता से धन और प्रतिष्ठा दोनों की लूट की जाती है। (सा० सत्य भक्त भावना, अगस्त २००४)

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

सऊदी अरब में अनुवाद के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र का एलान

उर्दू की शिक्षा और अनुवाद की योजना भी विचाराधीन सऊदी अरब ने अनुवाद के एक अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र स्थापित करने का एलान किया है और कहा है कि नई भाषाओं के समूह में उर्दू पढ़ाने और उसके अनुवाद की भी योजना है। इस केन्द्र के एलान में यह कहा गया है कि यह संस्था पाठ्य पुस्तकों, अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य और विज्ञान की पुस्तकों का अनुवाद कराएगी जो व्यक्तिगत लोगों के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के उपयोग के लिये होगा। प्रस्तावित केन्द्र अरब और दूसरी सभ्यताओं के बीच की खाई पाटने और अरबीकरण के अमल को तेज करने के अतिरिक्त लिखित और जबानी अनुवादकों की कमी भी दूर करेगा। कालेज आफ लैंगवेज और अनुवाद के डीन फैसल अलमहन्ना के हवाले से अरब न्यूज ने खबर दी है कि उन्होंने कहा कि संदर्भ पुस्तकों, पाठ्य पुस्तकों और अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान सम्बन्धी सामग्री के लिखित अनुवाद के अतिरिक्त पब्लिक और प्राइवेट सेक्टरों में अनुवादकों की बहुत जरूरत है। उन्होंने कहा कि इस विचार से प्रस्तावित केन्द्र से इन समस्याओं को हल करने में भरपूर मदद मिलेगी संयुक्त राष्ट्र की एक समीक्षा में कहा गया है कि हर दस लाख अरबों के लिए एक वर्ष में केवल एक विदेशी भाषा की पुस्तक का अरबी में अनुवाद हो पाता है। समीक्षा में यह भी कहा गया है कि दुन्या में लगभग २५ करोड़ अरबी बोलने वाले न्यूज व मीडिया की बढ़ती हुई तफरीहात (मनोरंजन) से लाभान्वित तो होते हैं परन्तु नई सूचनाओं की इस दौलत में गैर अरब साहित्य का हिस्सा बहुत ही कम है और सच तो यह है कि बीते एक हजार वर्षों के दौरान जितनी पुस्तकें अरबी में अनुवाद की गई हैं उतनी स्पैनिश भाषा में एक साल के अन्दर की जाती हैं।

इस पृष्टिभूमि में डॉ० अलमहन्ना का कहना है कि प्रस्तावित केन्द्र बहुत ही लाभप्रद रोल अदा करेगा और सच तो यह है कि सऊदी अरब में विदेशी काम करने वालों की बढ़ती हुई संख्या ने अनुवाद को बहुत ही आवश्यक बना दिया है। सऊदी अरब में अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंसों के आयोजन ने भी इसी जरूरत को उजागर किया है। उन्होंने कहा कि यह केन्द्र विभिन्न देशों में गैर मुस्लिमों के साथ वार्तालाप में सहायता करेगा जिस से इसलाम के सम्बन्ध में भ्रम दूर करने में मदद मिलेगी। कालेज आफ लैंगवेजेज एण्ड ट्रांसलेशन में इस समय चार हजार विद्यार्थियों के लिए दस भाषाओं में शिक्षा की सुविधा उपलब्ध है। इन में से ३० प्रतिशत केवल अंग्रेजी पढ़ने वाले हैं जबकि अन्य भाषाओं में फ्रेंच, जर्मनी, स्पेनिश, इटेलियन, रूसी, तुर्की, फारसी, जापानी अेर इबरानी भाषाएं शामिल हैं।

डॉ० अलमहन्ना के अनुसार इस कालेज ने नई भाषाओं को परिचित कराने मं भी हिचकिचाहट से काम नहीं लिया और उर्दू भाषा में शिक्षा और अनुवाद करने की भी संस्था है। यह काम पाकिस्तानी दूतावास के सहयोग से किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इसी के साथ हम अपने पाठ्यक्रम, शिक्षा कार्य पद्धति (तरीक–ए–तालीम) पाठ्यक्रम की रचना और दूसरे विभागों की अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकृति प्राप्त करने की भी कोशिश कर रहे हैं। कालेज के अध्यक्ष ने आगे कहा कि अगले वर्ष से अंग्रेजी और फ्रांसीसी भाषाओं में मास्टर आफ आर्ट्स (एम०ए०) की डिग्री और अनुवाद को भी शुरू करने का इरादा है।

पाठकों से अनुरोध

यदि आप को सच्चा राही पसन्द है तो आप कम से कम एक खरीदार (ग्राहक) बना दीजिए, इन्शाअल्लाह आप को सवाब मिलेगा — सम्पादक